इकाई 1 रोमन साम्राज्यः राजनीतिक व्यवस्था*

इकाई की रूपरेखा

* डॉ. प्रॉमिला श्रीवास्तव, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

1.0 उद्देश्य

ईरानी साम्राज्य के अंत और सिकन्दर के मकदूनियाई साम्राज्य की अखंडता के खंडित होने के साथ ही भूमध्यसागरीय क्षेत्र में एक नई राजनीतिक सत्ता का उदय हुआ। यह रोमन साम्राज्य था जो प्राचीन काल का सबसे बड़ा और दीर्घजीवी साम्राज्य साबित हुआ। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- रोमन साम्राज्य के दौरान राजनीतिक घटना क्रम को समझ पाएँगे,
- रोमन राज्य की विभिन्न संस्थाओं, जैसे सीनेट, कुलीनतंत्रीय परिषद्, सभा, इत्यादि के बारे में जान पायेंगे,
- समाज की विभिन्न पदानुक्रमिक श्रेणियों को समझ सकेंगे,
- समाज के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए सुधारों को सूचीबद्ध कर सकेंगे,
- आगस्टस द्वारा किए गए मुख्य सुधारों का मूल्यांकन कर सकेंगे, और
- रोमन साम्राज्य के पतन के कारणों की व्याख्या कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

रोमन साम्राज्य का केंद्र इटली में स्थित था और उसमें संपूर्ण भूमध्यसागरीय जगत सम्मिलित था। जैसा कि आमतौर पर कहा गया है कि 'रोम का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था'[1], रोम का इतिहास आठवी शताब्दी बी सी ई में मध्य इटली में एक छोटे से चारागाह समुदाय के तौर पर हुआ था। परन्तु समय के साथ इसने प्राचीन विश्व में एक विस्तृत सम्राज्य की प्रतिष्ठा हासिल की। यह साम्राज्य उत्तर में स्कॉटलैंट से दक्षिण में मिस्र तक, और पश्चिम में पुर्तगाल और पूरब में इराक़ तक विस्तृत था। इस इकाई में प्राचीन रोम के इतिहास के मुख्य कालों और उन्हें समर्थन प्रदान करने वाली राजनैतिक व्यवस्था का परीक्षण किया गया है। यह एतिहासिक चरणः (क) एक राज्य के रूप में रोम का प्रारम्भिक इतिहास; (ख) रोमन गणतंत्र; (ग) प्रिन्सिपेट या आगस्टस का युग; और (घ) उत्तर रोमन साम्राज्य को सम्मिल्लित करता है।

1.2 रोम का प्रारंभिक इतिहास

रोम का आरंभिक इतिहास काफी अपर्याप्त और बिखरा हुआ है और ज्यादातर किंवदतियों पर आधारित है। परंतु हमारा मुख्य स्त्रोत इतिहासकार लेवी (64-17 बी सी ई) हैं जिन्होंने रोम का इतिहास उसकी बुनियाद से लेकर अपने तत्कालीन काल तक लिखा। आरंभिक रोमन मुख्य रूप से एक पशुपालक समुदाय के लोग थे, जो मवेशी, सुअर, बकरी और भेड़ पालते थे और बिखरे हुए गांवों में रहा करते थे, और वे हिंद-यूरोपीय भाषा बोला करते थे जिसे प्रोटो-लैटिन भी कहा जा सकता है। यह पूरी संस्कृति एक पूर्व-नगरीय चरण में प्रासंगिक की जा सकती है। किसी समय में ये बिखरे हुए समुदाय एक बड़ी इकाई में समा गए, जिसे पहली बार रोम के नाम से जाना गया।

[1] जॉन हेवुड, एक अंग्रेजी नाट्यकार।

नगर की स्थापना से संबंधित अनेक किंवदंतियां हैं। एट्रूस्कन किंवदंती के अनुसार, रोम की स्थापना दो भाईयों – रोमुलस और रेमस – द्वारा 753 बी सी ई में की गई थी। ऐसा कहा जाता है कि इसका निर्माण तब हुआ जब टाइबर नदी के किनारे बसी बस्तियों को एक दीवार द्वारा समावृत किया गया। नदी ने रोम शहर को उत्तर की ओर व्यापार मार्ग प्रदान किया और दक्षिण की ओर स्थित इसके ओस्टिया बंदरगाह द्वारा समुद्र तक पहुंच प्रदान की। रोम दो संस्कृतिओं के मध्य स्थित थाः जिसके एक ओर दक्षिण में स्थित यूनानी बस्तियां थीं और दूसरी ओर उत्तर में स्थित एट्रूस्कन सभ्यता थी। भौगोलिक और वास्तविक रूप से रोम एट्रूस्कन और यूनानी संस्कृतियों के संगम का संधि-स्थल था। ऐसा माना जाता है कि रोमुलस उन सात शासकों में से पहले शासक थे जिन्होंने रोम पर 753 बी सी ई से लेकर 509 बी सी ई के मध्य शासन किया।

इस समय इटली में सबसे शक्तिशाली लोग एट्रूस्कन थे। एट्रूस्कन ने रोम पर करीब सौ साल से ज्यादा (616-510 बी सी ई) शासन किया। एट्रूस्कन की उच्च सभ्यता से सम्पर्क में आने से रोम को नई प्रेरणा मिली। इसने रोम के आरंभिक घटनाक्रम पर गहरा प्रभाव डाला। एट्रूस्कन शासन ने शहरीकरण का शुभांरभ किया और रोम पहली बार व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना। इसके अतिरिक्त रोम के लोगों के अभियांत्रिकीय कौशल ने उन्हें केपिटोलाइन और पेलेटाइन पहाड़ों के मध्य स्थित दलदली भूमि को शुष्क कर खेती योग्य बनाने में सफलता प्रदान की और उन्होंने गहन खेती का भी विस्तार किया। रोमन एट्रूस्कन धार्मिक प्रथाओं से भी प्रभावित थे। उन्होंने मंदिरों और उपासना के लिए मूर्तिओं का निर्माण भी करवाया। अनेक राजनैतिक और सैनिक सुधार किए गए जिनमें जनगणना (भू-सम्पत्ति पर आधारित सैन्य सेवा का दायित्व) और एक नयी राजनीतिक सभा, *कॉमिटा सेंचुरिआटा*, की स्थापना शामिल था।

पुरातात्विक साक्ष्य इटली में एट्रूस्कन सत्ता के छटी शताब्दी में पतन होने की ओर संकेत करते हैं। ऐसा माना जाता है कि रोम में आखरी एट्रूस्कन शासक को निर्वासित कर 509 बी सी ई में गणतंत्र की स्थापना की गई थी।

1.3 रोमन गणतंत्र की स्थापना और सैन्य विस्तार

रोमन विस्तार का अध्ययन दो चरणों में किया जा सकता है। पहला चरण आरंभिक सुदृढ़ीकरण का समय था; जबकि दूसरे चरण में रोम ने भूमध्यसागर के पार अपनी शक्ति को सुदृढ़ किया।

1.3.1 विजय का पहला चरण

सभी लेखक रोम के राजतंत्र के अंत और गणतंत्र की स्थापना को रोमन इतिहास की आधारभूत घटनाओं में से एक मानते हैं। 509 बी सी ई, में टर्किन्स का एट्रूस्कन वंश रोम से निष्कासित कर दिया गया जिसने दो **कॉन्सलों (Consuls)** द्वारा शासित गणतंत्र की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। समस्त पांचवी शताब्दी बी सी ई के दौरान रोम की राजनीति का मुख्य उद्देश्य उसकी अपने प्रदेश और लेटियम (Latium) के मैदानों की अपने सगोत्रीय कुटुम्ब-जनों के सहयोग से शत्रुओं से रक्षा करना था। इस प्रकार, रोम ने पड़ोस की पहाड़ियों की तीन खूंखार जनजातियों के लैटिन नगरों (आसपास के प्रदेश लेटियम के ऊपर इनका नाम पड़ा) के साथ एक संघ का निर्माण किया। 406 बी सी ई में रोम ने अपने सबसे बड़े शत्रु एट्रूस्कन के वेई नगर पर आक्रमण किया और अंततः 396 बी सी ई में अंततः उस पर कब्ज़ा कर लिया। यह विजय रोम के लिए बहुत निणार्यक सिद्ध हुई क्योंकि इससे रोम को मध्य इटली के संपन्न संसाधनों की पहुंच मिली। मध्य इटली में अपनी सत्ता स्थापित करने के पश्चात् रोम दक्षिणी इटली की ओर मुड़ा, जो यूनानियों का एक उपनिवेश था। अंततः रोम

ने यूनानियों से कई घमासान लड़ाइयों के पश्चात् इस क्षेत्र में अपनी सत्ता स्थापित की। 266 बी सी ई तक प्रायद्वीपीय इटली पर लंबी और दुष्कर विजयों द्वारा रोमन कब्ज़ा पूरी तरह से स्थापित हो गया। अब, संपूर्ण प्रायद्वीप प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोम के अधीन था।

1.3.2 विजय का दूसरा चरण

इटली पर नियंत्रण के बाद रोम भूमध्यसागरीय जगत (264-133 बी सी ई) का विजेता बनने के लिए निकल पड़ा। तीसरी शताब्दी बी सी ई के मध्य तक रोमन गणतंत्र ने प्यूनिक युद्ध[2] के नाम से पहचाने जाने वाले सैन्य अभियानों की श्रृंखला का आरंभ कर दिया था। ये युद्ध कार्थेज के विरूद्ध लड़े गए, जो कि आधुनिक ट्यूनीशिया में फोनेशियनों द्वारा स्थापित उपनिवेश था, परिणामस्वरूप इसके वृहद कृषि क्षेत्र और सिसली, कोरसिका और पूर्वी आईबेरियन प्रायद्वीप के भागों के व्याव्सायिक संसाधनों पर उनका नियंत्रण कायम हो गया। तीन प्यूनिक युद्ध लड़े गए और तीसरे प्यूनिक युद्ध के अंत में कार्थेज के साम्राज्य का पूरी तरह से विनाश हो चुका था और उसके प्रदेशों को रोम में मिला लिया गया। जिन प्रदेशों को प्यूनिक युद्धों के द्वारा साम्राज्य में मिलाया गया था उन्हें रोमन प्रांत सिसली, स्पेन और अफ्रीका के तौर पर पुनर्गठित किया गया।

पूर्व में रोमन गणतंत्र ने मेसिडोनिया और अन्य यूनानी राज्यों से युद्ध किया और उन्हें अपने नियंत्रण में ले लिया। रोमन प्रभाव ने एनातोलिया को भी अपने में समाहित किया और मिस्र तक फैल गया। इस प्रकार, रोमन प्रभाव दूसरी शताब्दी बी सी ई के मध्य तक मध्य भूमध्यसागरीय क्षेत्र में स्थापित हो गया।

मानचित्र 1.1 : रोमन साम्राज्य का महान्तम विस्तार-क्षेत्र, 117 सी ई, ट्रेजन की मृत्यु का काल

साभार: तातारिन

स्रोत:https://en.wikipedia.org/wiki/Roman_Empire#/media/ File:Roman_Empire_ Trajan_117AD. png

[2] प्रथम प्यूनिक युद्ध, 264-241 बी सी ई; द्वितीय प्यूनिक युद्ध, 218-201 बी सी ई; तृतीय प्यूनिक युद्ध, 149-146 बी सी ई।

1.4 रोमन गणतंत्र की राजनीतिक संरचना

गणतंत्र के तीन मुख्य घटक थे – सीनेट, मैजिस्ट्रेट और आम जनता। गणतंत्र राज्य के शीर्ष पर दो कॉन्सल थे। उनकी सहायता के लिए बड़ी संख्या में मैजिस्ट्रेट थे। इसके वहां अतिरिक्त प्रत्येक पांच वर्ष में प्रत्येक नागरिक की सामाजिक स्थिति की जांच और जनगणना कराने के लिए जनसंख्या नियंत्रक अधिकारी (*सेंसर्स*) थे। तत्पश्चात् जनजातीय, **अभिजात वर्ग (Patricians)** और **निम्न वर्गों (Plebeians)** की सभाएं भी थीं।

1.4.1 सीनेट

गणतंत्र पर सीनेट का प्रभुत्व था और सदस्यता कुलीन वर्ग (भूमिपति अभिजात वर्ग) तक ही सीमित थी। सीनेट की सदस्यता जीवन भर के लिए थी और यह सह-चयनात्मक थी (अर्थात् केवल मूल सदस्य ही अतिरिक्त नए सदस्यों का चयन कर सकते थे)। इस प्रकार, सीनेट भूमिपति अभिजात वर्ग की एक सभा थी जिसकी सत्ता असीमित थी। सीनेट की सर्वोच्च और निरंतर बढ़ती शक्तियां उसकी कानून बनाने, मैजिस्ट्रेटों की शक्ति पर अंकुश रखने और विदेशी मामलों पर नियंत्रण करने की योग्यता पर निर्भर थी। सीनेट की शक्ति में और अधिक वृद्धि उनके सामूहिक प्रभाव, समृद्धि और उसके सदस्यों के अनुभव से हुई।

1.4.2 मैजिस्ट्रेट

प्रत्येक वर्ष जनता द्वारा गणतंत्र के सर्वोच्च अधिकारियों का चयन किया जाता था। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण वे दो कॉन्सल होते थे जो सीनेट की अध्यक्षता करते थे, और उनमें कार्यकारिणी, सैन्य और न्यायिक शक्तियां निहित थीं। 366 बी सी ई तक कान्सूलेट संस्था पर कानूनी रूप से चुने हुए चंद अभिजात वर्ग के लोगों का एकाधिकार था, तब हाल ही में समृद्ध हुए निम्न वर्ग (plebeians) ने अभिजात वर्ग को दो में से एक कॉन्सल के पद पर उनके सदस्यों के प्रवेश को स्वीकारने पर मज़बूर किया। लेकिन 172 बी सी ई में पहली बार दोनों कॉन्सल निम्न वर्ग (plebeians) से चुने गए। पूर्व कॉन्सल स्वतः ही सीनेट के सदस्य बन जाते थे। इस तरह सीनेट की सदस्यता का विस्तार हुआ और अभिजात वर्ग (Patrician) के अलावा इसमें हाल ही में समृद्ध हुए निम्न वर्ग (plebeians) के सदस्यों को भी शामिल किया गया।

कॉन्सलों के अलावा रोमन गणतंत्र में चुने हुए अन्य अनेक मैजिस्ट्रेट/कॉन्सल थे। दंडाधिकारी (praetor) को कानून प्रशासन का कार्यभार सौंपा गया। प्रारम्भ में नियंत्रक (censor) को प्रशासनिक करों के लिए रजिस्ट्रार के तौर पर नियुक्त किया गया, लेकिन जल्द ही नैतिकता के मामलों में उसे विस्तृत अधिकार प्राप्त हुए। *एडिल्स* (aediles) को लोक कार्य, और रोम में सड़कों और इमारतों के निर्माण का कार्यभार सौंपा गया था।

1.4.3 जनता

अपनी विभिन्न सभाओं में जनता मैजिस्ट्रेट का चुनाव करती थी, स्वीकृत और अस्वीकृत विधेयकों को उनके सामने रखा जाता था, और वे युद्ध और शांति के मामलों पर निर्णय लिया करती थी। सिद्धांत में, संप्रभुता का सिद्धांत प्रजा के अंदर ही निहित था, लेकिन वे मैजिस्ट्रेट द्वारा बुलाने पर ही मिल सकते थे और उनके सामने जो मुद्दा रखा जाता था वे उस पर बिना किसी बहस के मत दिया करते थे।

1.4.4 सभा

कॉमीशिया (*Comitia*) का अर्थ है जहां पर लोग एकत्र होते हैं। इस प्रकार, रोमन सभाएं *कॉमीशिया* के नाम से जानी जाती थीं। मैजिस्ट्रेट समय-समय पर महत्वपूर्ण मामलों में मतदान के लिए इन सभाओं को बुलाता था।

कॉमीशिया क्युरिआटा (*Comitia Curiata*)

कॉमीशिया क्युरिआटा सभी नागरिकों की सभा थी। *क्युरिआटा* शब्द रोमन नातेदारी आधारित जनजातीय इकाई *क्युरिएई* से व्युत्पन्न था। ये संख्या में कुल तीस थीं और तीन जनजातीय समूहों में विभाजित थीं जिसमें प्रत्येक में दस *क्युरिएई* थे। *क्युरिएट* के पास मसलों पर चर्चा करने का अधिकार नहीं था, ये केवल उसे स्वीकार या अस्वीकार कर सकती थीं। ये मैजिस्ट्रेट तथा धार्मिक अधिकारियों का चुनाव करती थीं, कानूनों को स्वीकृति देती थीं और युद्ध और शांति पर निर्णय लेती थीं। यह *क्युरिएई* ही थी जिसने राजशाही के उन्मूलन का निर्णय लिया और गणतंत्र की स्थापना की। किसी भी *सेंचुरिआटा* का आदेश तब तक कानून नहीं बन सकता था जब तक *क्यूरिएई* ने इसे स्वीकृत नहीं किया हो।

यद्यपि निम्न वर्ग (plebeians) और अभिजात वर्ग (Patrician) दोनों ही इन *क्युरिएई* का हिस्सा थे, अक्सर अभिजात वर्ग अपने प्रभुत्व का प्रयोग कर मुद्दों को प्रभावित करते थे। बाद में निम्न वर्ग की आवाज़ इस सीमा तक अप्रसांगिक हो गई कि प्रत्येक *क्युरिएई* ने मतदान के लिए सभा में केवल एक ही व्यक्ति को भेजना आरंभ कर दिया। धीरे-धीरे अभिजात वर्ग का प्रभाव इस हद तक बढ़ गया कि इसमें मुश्किल से ही निम्न वर्ग के हित की किसी बात का प्रतिनिधित्व होता हो। अतः सभा को पुनः संगठित करने की मांग और दबाव बढ़ने लगा, जिसके कारण नई सभा, *कॉमीशिया सेंचुरिआटा* का गठन हुआ।

सर्वियस इन्लियस (r. 575-535 बी सी ई) ने *कॉमीशिया क्यूरिआटा* के प्रमुख अधिकार *कॉमिशिया सेंचुरिआटा* को स्थानांतरित कर दिए। फिर भी *क्यूरिआटा* के पास *सेंचुरिआटा* द्वारा पारित किसी भी मसले को पारित करने या अस्वीकार करने का अधिकार कायम रहा। प्यूनिक युद्धों के काल में, *क्यूरिआटा* ने अपना महत्व पूर्णरूप से खो दिया और उसका अस्तित्व लगभग समाप्त हो गया तथा उसका अधिकार क्षेत्र मात्र सामाजिक-धार्मिक प्रकृति के मसलों तक सिमट कर रह गया।

कॉमीशिया सेंचुरिआटा

कॉमीशिया सेंचुरिआटा, क्युरिआटा की तरह ही यह भी सभी नागरिकों की सभा थी जिसमें अभिजात वर्ग और निम्न वर्ग दोनों (दास, *पेरेग्सिनी* [विदेशी], महिलाएं और *ऐईरारी* [जो व्यक्तिगत कर (poll tax) के अधीन थे] को छोड़कर) सम्मिलित थे। हालांकि, ये लोग अलग-अलग समूह में बंटे हुए थे। तीस *क्यूरिआई* से 193 '*सेंचुरिआई* (प्रत्येक *सेंचुरिआई* में 100 पुरुष होते थे, यद्यपि ऐसा हमेशा नहीं होता था) का निर्माण हुआ। ये *सेंचुरिआई* पांच वर्गों में समूहित थीं। इनमें से प्रथम तीन विशेष रूप से कुलीन वर्ग और भूपति वर्ग के लिए थीं। संपत्तिहीन नागरिकों को *प्रोलेतारी* (*proletarii*) के नाम से वर्गीकृत किया गया जो कि अंतिम वर्ग में आते थे, यद्यपि ये संख्या में सबसे अधिक थे और पहले तीन वर्ग संख्या में काफी कम थे। लेकिन, संख्या का मतदान के संदर्भ में कोई अर्थ नहीं था क्योंकि, प्रति व्यक्ति (एक मत एक व्यक्ति) का मत नहीं गिना जाता था बल्कि प्रति '*सेंचुरिआई* का एक मत गिना जाता था और *प्रोलेतारी* को 193 *सेंचुरिआई* में से प्रति *सेंचुरिआई* केवल एक ही मत प्राप्त होता था। इस प्रकार, अल्पसंख्यक होने के बावजूद अभिजात वर्ग की आवाज़ सभा में प्रभावी होती थी। ये वर्ग अगर किसी विषय पर निर्णय ले लेते थे तो निम्न वर्ग के मत की आवश्यकता नहीं होती थी। यहां तक कि ऐसा बहुत कम ही होता था जब निम्न वर्ग (plebeian) को मत के लिए बुलाया जाता था। यह अश्वारोहियों (*equites*) के साथ भी होता था (मूल रूप से रोमन सेना के घुड़सवार, जो बाद में राजनैतिक महत्व के समृद्ध वर्ग में शामिल हो गए)।

450 बी सी ई के आस-पास गठित *सेंचुरिआटा* गणतंत्र काल के दौरान नागरिकों की प्रमुख सभा बनी रही। सर्विअस इयूलियस ने *कॉमिआटा* के अधिकार क्षेत्र से मजिस्ट्रेटों, कॉन्सलों और नियंत्रकों (censors) को चुनना, कानून पारित करना (ट्वेल्व टेबल का प्रसिद्ध कानून

कॉमिआटा सेंचुरिआटा द्वारा पारित हुआ था), *सेंचुरिआटा* में अपील करने का अधिकार, युद्ध और शांति से संबंधित विषय आदि अधिकारों को स्थानांतरित कर दिया जो कि सभा के विशेषाधिकार थे।

कॉन्सिलियम प्लेबिस अथवा *कॉमीशिया प्लेबिस ट्रिब्यून*

कॉन्सिलियम प्लेबिस विशेष रूप से निम्न वर्ग (plebeians) की विधानसभा थी। यहां निम्न वर्ग से संबंधित सभी विषयों पर चर्चा होती थी। इसके द्वारा प्लेबियन ऐडिलेस (plebeian aediles; सार्वजनिक इमारतों के प्रबंधन के लिए उत्तरदायी) और प्लेब्स ट्रिब्यून का चुनाव किया जाता था। इनके प्रस्ताव केवल *प्लेबी सूला* (कानून केवल *प्लेबिस* पर ही प्रभावी) थे। इस संस्था की स्वीकार्यता और सभा की सफलता इस तथ्य द्वारा आंकी जा सकती है कि जब 494 बी सी ई में प्लेबिस के दबाव में सभा द्वारा चयनित दो व्यक्तियों को, जिन्हें ***ट्रिब्यून*** कहा जाता था, राज्य ने (कॉन्सल के रूप में) प्रतिष्ठित करने की स्वीकार्यता दी। 448 बी सी ई, तक इनकी संख्या बढ़कर दस *ट्रिब्यून* हो गई। इसका महत्व इस अर्थ में है कि इसने निम्न वर्ग (plebeians) को सत्ता में प्रवेश प्रदान किया, इस प्रकार, *ट्रिब्यून* का पद समृद्ध निम्न वर्ग के बीच सबसे अधिक मांग में आ गया।

एक अन्य सभा *कॉमिशिया पॉपुली ट्रिब्यूटा* (जनजातीय लोगों की सभा) भी थी जिसके सदस्य सभी नागरिक थे और ये तीन जनजातीय समूहों में वर्गीकृत थे। यह प्राचीनतम सभा थी जो राजतंत्र के समय से अस्तित्व में थी। जनजाति के सभी युवा पुरुष सभा के सदस्य थे। इसका क्रम जनजातियों के विस्तार के अनुसार व्यवस्थित होता था।

चित्र 1.1ः स्वामी के लिए लिखित टैबलेट पकड़े हुए दास (चौथी शताब्दी की पत्थर के ताबूत पर बनी एक नक्काशी) पुरातत्व संग्रहालय, मिलान (इटली)

साभारः जिओवान्नी डाल' ओर्टो

स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/Roman_Empire#/media/File:Sarcofago_avvocato_V alerius_ Petrn ianus-optimized.jpg

1.5 विभिन्न श्रेणियों में राजनीतिक टकराव

किसी भी सभ्यता में देखा जाए तो समाज और राजनैतिक संरचना में हमेशा घनिष्ठ संबंध होता है। जैसा कि अमर फारूक़ी, वर्णन करते हैं कि रोमन साम्राज्य को नागरिकों के स्थाई रूप से दो 'श्रेणियों' (orders) में विभाजन द्वारा चिन्हित किया जा सकता हैः अभिजात वर्ग

(Patrician) और निम्न वर्ग (Plebeians)। अभिजात वर्ग में भूस्वामी कुलीन थे जो गणतंत्र के आरंभ से ही राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक शक्ति के एकाधिकार का उपभोग कर रहे थे। निम्न वर्ग में गरीब नागरिक थे जो छोटे भूस्वामी, कारीगर, व्यापारी और श्रमिक थे। भूमध्यसागरीय क्षेत्र में विस्तार से एक नए व्यापारी वर्ग (equites; अश्वारोही वर्ग) में वृद्धि हुई जिनकी व्यक्तिगत संपत्ति अक्सर भूस्वामी अभिजात वर्ग (कुलीन वर्ग) से कहीं अधिक थी। अभिजात वर्ग अश्वरोहियों के वाणिज्यिक विकास को बेईमानी की कमाई मानता था और जल्द ही दोनों वर्गों में खुला संघर्ष हो गया, इस संघर्ष में निम्न वर्ग 'अश्वरोही' वर्ग में शामिल हो गया।

पांचवी शताब्दी बी सी ई से अभिजात वर्ग और निम्न वर्ग के मध्य संघर्ष बढ़ा। गणतंत्र के आरंभिक वर्षों से ही सीनेट ने राजनैतिक शक्ति को अपने हाथ में पूर्ण रूप से केंद्रित करने का प्रयास किया और निम्न वर्ग शासन में अपना हिस्सा प्राप्त करने के लिए संघर्षरत था। रोमन स्रोत इस पर ज़ोर देते हैं कि पूरा संघर्ष जो लगभग पांच पीढ़ियों तक चला, वह कम से कम हिंसा और बिना किसी रक्तपात के था। यह इसलिए हुआ क्योंकि इसमें भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को एक दूसरे के सहयोग की आवश्यकता थी। रोमन अभिजात वर्ग को किसान वर्ग के सहयोग की आवश्यकता थी जिन्हें युद्ध में लड़ने और राज्य की सुरक्षा के लिए सेना में भर्ती किया गया था। निम्न वर्ग को अभिजात वर्ग के नेतृत्व और अनुभव की आवश्यकता थी। इसलिए उनमें समझौता करने की तत्परता थी।

1.5.1 टकराव का पहला चरण और संविधान में परिवर्तन

पांचवी शताब्दी बी सी ई में निम्न वर्ग का उद्देश्य सीनेट और मजिस्ट्रेट के अन्याय और एकपक्षीय कृत्यों के विरूद्ध सुरक्षा प्राप्त करना था। यह सुरक्षा तब प्रभाव में आई जब इन्हें 450 बी सी ई में 'ट्वेल्व टेबल्स'[3] नाम के कानून का लिखित कोड प्राप्त हुआ। इस कोड ने अभिजात वर्ग द्वारा किए जाने वाले न्याययिक प्राधिकरण के एकपक्षीय कृत्यों की सीमा को कम किया। इसके अतिरिक्त, 326 बी सी ई में एक कानून पारित हुआ जिसमें रोमन नागरिकों के द्वारा न चुकाए जा सकने वाले ऋणों के बदले में दास बनाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इस प्रकार, 'ऋण बंधन' आधारित दासता समाप्त हो गई। 445 बी सी ई में अभिजात वर्ग और निम्न वर्ग के बीच अन्तर्विवाह को पहचान मिली और इससे धनी निम्न वर्ग की बहुत बड़ी व्यथा दूर

चित्र 1.2: ट्वेल्स टेबल्स के पहली बार लागू होने के बाद रोमन नागरिक उसे जांचते हुए

साभार: स्टाफ. 4 जे.लेन. ईडीयू

स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/Twelve_Tables#/media/File:Twelve_Tables_Engraving.jpg

[3] 451-450 बी सी ई में 12 कांस्य की पट्टिकाओं पर *डेकोमवीरी* (decomviri; दस व्यक्तियों का मंडल) के द्वारा कानून का प्रारूप तैयार किया गया जो कि नागरिकों के लिए राज्य द्वारा पारित लिखित कानून के आरंभ की घोषणा करता है। इस प्रकार राज्य के कानून की नज़रों में सभी नागरिकों के लिए समानता की स्थापना हुई।

हुई। 390 बी सी ई के बाद के आर्थिक तनाव (जिसकी चर्चा इस पाठ्यक्रम की **इकाई 2** के **भाग 2.3** और **भाग 2.4** में की गई है) में सार्वजनिक भूमि का सही न्यायपूर्ण विभाजन करना मुख्य मुद्दा था। 367 बी सी ई में, एक लम्बे समय के संघर्ष के बाद, प्रत्येक व्यक्ति द्वारा भूमि पर अधिकार रखने की कुछ सीमा निश्चित किए जाने की स्थापना की गई।

राजनैतिक क्षेत्र में नव समृद्ध निम्न वर्ग, अभिजात वर्ग की सीमित परिसीमा में ज़बरदस्ती घुसना चाहता था। 266 बी सी ई के आस-पास इन्होंने 'अभिजात वर्ग' पर दो कॉन्सलों में से किसी एक में उनके प्रवेश को स्वीकार करने के लिए दबाव डाला। हालांकि, 172 बी सी ई में ही पहली बार दोनों कॉन्सलों की नियुक्तियां निम्न वर्ग में से हुईं (जैसा कि ऊपर बताया गया है)। जैसा कि पेरी एंडरसन का मानना है कि इस परिवर्तन से सीनेट के विस्तार को बढ़ावा मिला, क्योंकि पूर्व कॉन्सल स्वतः सीनेटर बन गए। अभिजात वर्ग की शक्ति में कमी नहीं आई बल्कि निम्न वर्ग के समृद्ध सदस्य ही दूसरी तरफ चले गए और उनके शामिल होने से व्यापक आभिजात्य वर्ग का गठन हुआ।

गणतंत्र के भीतर समृद्ध निम्न वर्ग के संघर्ष के साथ-साथ गरीब निम्न वर्ग द्वारा बढ़े हुए अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष चल रहा था। इन्होंने अपनी शक्ति का प्रभावशाली प्रदर्शन तब किया जब इन्होंने रोम छोड़ने और स्वयं अपने लिए पृथक राज्य की स्थापना करने की धमकी दी। इस दबाव के कारण एक जनजातीय सभा का गठन हुआ (आरंभ में इसे *'कॉन्सिलियम प्लेबिस'* के तौर पर जाना जाता था)। 287 बी सी ई के एक कानून के द्वारा *'कॉन्सिलियम प्लेबिस'* के निर्णय राज्य पर बाध्य थे, और उन निर्णयों के पीछे कानून की शक्ति थी (विस्तृत विवरण के लिए **1.4.4 भाग** देखें)।

इसने अपने अधिकारियों, 'ट्रिब्यून' की नियुक्ति स्वयं की जिसके पास अन्ततः रोमन मजिस्ट्रेट के निर्णयों पर वीटो पावर का प्रयोग करने का अधिकार था। ट्रिब्यून संख्या में दो थे और सिद्धांत में निम्न वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व करते थे। यह एक सहायक और समानान्तर संस्था थी जिसकी रचना अमीरों के अत्याचार से गरीबों की रक्षा करने के लिए की गई थी।

संविधान में परिवर्तन के महत्व

ऐसा प्रतीत होता है कि निम्न वर्ग के हित केवल कुछ समय के लिए ही संरक्षित हो पाए। लेकिन जैसा कि पेरी एंडरसन इस बात पर बल देते हैं कि प्रखर और लम्बे सामाजिक संघर्ष के परिणामस्वरूप संविधान, हालांकि लोकप्रिय परिवर्तनों से गुज़र रहा था, लेकिन इसके बावजूद यह कभी निरस्त या बदला नहीं गया। इसके बजाए इस जटिल संविधान ने वंशानुगत अभिजात वर्ग की अखंड शक्ति को बनाए रखा। ट्राइब्यूनेट और जनजातीय सभा (Tribal Assembly) को सामान्य रूप से केंद्रीय संस्था सीनेट, कॉन्सलेट और *सेंचुरिआट* सभा में शामिल कर दिया गया। इन संस्थानों ने अभिजात वर्ग की शक्ति को न तो समाप्त किया और न ही कम किया जो गणतंत्र पर लगातार अपना प्रभाव बनाए हुई थी। अक्सर गरीब वर्ग के संघर्ष को समृद्ध निम्न वर्ग ने आगे बढ़ाया और ट्रिब्यून्स, जिन्हें आमतौर पर धनी व्यक्तियों में माना जाता था, अधिकांशतः लम्बी अवधि के लिए सीनेट के हाथ की कठपुतली बन गए।

1.5.2 टकराव का दूसरा चरण

वर्गों के संघर्ष में लगभग डेढ़ शताब्दी के लिए ठहराव आया। जब यह दुबारा आरंभ हुआ तो नए मुद्दों और नए प्रतिभागियों की सहभागिता पर आधारित था। रोमन गणतंत्र की अंतिम शताब्दी में अभियानों की श्रृंखला ने रोम को भूमध्यसागरीय विश्व में (प्युनिक, मेसिडोनिया, जुगर्थाइन, मिथ्रीडेटिक और गेलिक युद्धों) अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता दिलाई। इसने युद्ध बंदियों के आयात को बढ़ावा दिया जिन्हें सीनेटोरियल अभिजात वर्ग के द्वारा दास

के तौर पर काम पर रखा जाता था। वहीं दूसरी ओर देश में अनेक भीषण संघर्ष चल रहे थे (हेन्निबेलिक, सामाजिक और गृह युद्ध) जिसमें हारे हुए लोगों के विशाल क्षेत्रों को हड़प कर सीनेटोरियल अभिजात वर्ग के हाथों सौंपा जा रहा था। इस प्रकार रोमन युद्धों द्वारा विस्तार ने सीनेटोरियल कुलीन तंत्र की शक्ति और समृद्धि में असाधारण वृद्धि की। इससे नई ग्रामीण संस्था '*लैटिफंडिया* का उदय हुआ – जिसमें समृद्ध भूस्वामियों द्वारा विशाल भूखंडो पर दासों के समूहों को काम करने के लिए नियुक्त किया जाता था।

बोध प्रश्न-1

1) रोम के आरम्भिक इतिहास का लगभग 50 शब्दों में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

2) लगभग 510 से 27 बी सी ई तक रोमन विस्तार के चरणों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

3) प्यूनिकयुद्ध क्या थे? रोमन विस्तार में उनकी भूमिका की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

4) रोम की राजनैतिक संरचना की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

5) विभिन्न 'श्रेणियों (Orders) में राजनैतिक टकराव की क्या वजह थी? क्या इस टकराव ने राजनैतिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये?

....

....

....

....

....

1.6 ग्रैची बंधुओं के सुधार

यह चरण कृषकों के पतन और सैन्य विवादों के विलय से चिन्हित है।

1.6.1 कृषकों या 'एसिडुई (Assidui) वर्ग' का पतन

युद्धों में विजय के साथ-साथ यह कृषकों को तेजी से पतन की ओर ले गया। इन्होंने रोम को सफल अभियानों के लिए मानव श्रम उपलब्ध कराया था, जिससे रोम ने भूमध्यसागरीय विश्व में अपना प्रभुत्व स्थापित किया था, लेकिन उन्हें इसके बदले कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। रोमन कानून के अनुसार वयस्क पुरुष नागरिक जिसके पास न्यूनतम संपत्ति की योग्यता थी उसे अनिवार्य रूप से सेना में कार्य करना जरुरी था। सालों साल लीजन्स (Legions; आधारभूत सैन्य इकाई) में भर्ती होते रहने के कारण हज़ारों की संख्या में इनकी मृत्यु हुई, जबकि जो जीवित रहे वे अपने घर के खेतों को संभालने में अक्षम हो गए, अतः उन पर अभिजात वर्ग द्वारा तेज़ी से कब्ज़ा कर लिया गया। 146 बी सी ई के पश्चात् कृषकों का संघर्ष भूमि सुधार के प्रश्न पर केंद्रित हो गया। अमर फारूक़ी के अनुसार, भूमि सुधार का प्रश्न केवल कृषकों में तीव्र तनाव के कारण ही अति आवश्यक नहीं माना गया, बल्कि वह इसलिए भी अति आवश्यक था क्योंकि बिना भूमि के कृषक सेना में सेवा देने के लिए अयोग्य थे। कृषि में सुधार की अत्यधिक आवश्यकता महसूस की गई। लेकिन यह अभिजात वर्ग को स्वीकार्य नहीं था।

सीनेट के कड़े विरोध के कारण टाइबेरियस ग्रैचुस (पापुलेयर्स, एक सुधारवादी गुट का प्रमुख सदस्य; मृत्यु 133 बी सी ई) द्वारा प्रस्तावित सुधार जिसका उद्देश्य प्रति व्यक्ति द्वारा खरीदी जा सकने वाली भूमि की सीमा को कम करने की ओर था, और अतिरिक्त भूमि को पुनः वितरण करना था, की हार हुई, और ट्रिब्यून की हत्या कर दी गई। बाद में, उसके छोटे भाई, गेयस ग्रैचुस (123 बी सी ई में ट्रिब्यून के लिए चयनित हुआ) ने सामाजिक न्याय के उद्देश्य से और अधिक तीव्र सुधार लागू करने का प्रयास किया। इसके नए सुधारों में प्रांतों के प्रशासन और कर व्यवस्था, गरीब नागरिकों ('***प्रॉलितेरी***' वर्ग) को रियायती अनाज की आपूर्ति सुनिश्चित करने के साथ-साथ न्यायिक और भूमि सुधारों को भी शामिल किया। इसने इतावली मित्र राष्ट्रों तक रोमन नागरिकता का विस्तार करने का प्रस्ताव रखा (इस पाठ्यक्रम की **इकाई 2** में हम इसकी विस्तार में चर्चा करेंगे)।

सीनेट ने पुनः सुधारों का कड़ा विरोध किया और गेयस ग्रैचुस भी सीनेट द्वारा भड़काने के कारण मार दिया गया (121 बी सी ई) और उसके कानूनों को रद्द कर दिया गया। ग्रैची भाईयों के दमन के द्वारा किसानों के भूमि आंदोलन को दबाया गया। इसके अतिरिक्त, विदेशों से सस्ते अनाज के आयात ने इनकी विपत्ति को और बढ़ा दिया। इस प्रकार, किसानों के तनाव ने वर्ग विवाद को तेज़ किया और गणतंत्र के पतन में योगदान दिया।

1.6.2 सैनिकों में बढ़ता असंतोष

इसी समय किसानों के संकट के साथ सैनिकों में बढ़ते हुए असंतोष ने भी गणतंत्र की बढ़ती हुई अव्यवस्था में योगदान किया। **सीनेटोरियल कुलीन तंत्र** ने विस्तारवादी युद्धों और विशाल साम्राज्य के अधिग्रहण से अत्यधिक लाभ प्राप्त किया। लेकिन वे पूर्ण रूप से उन

सैनिकों को प्रतिफल देने के लिए तैयार नहीं थे जिन्होंने विजय द्वारा इस लाभ की प्राप्ति कराई थी। सेवा से भारमुक्त होने के बाद जो सैनिक भूमि अनुदान और दान के लिए आंदोलन कर रहे थे, अब पूर्ण रूप से राज्य द्वारा भ्रमित थे। इसका परिणाम यह हुआ कि अब सैनिक अपने विजयी सेनापतियों की ओर इस आशा से देखने लगे कि वे उनके लिए अपनी व्यक्तिगत शक्ति द्वारा लूट या दान सुनिश्चित करेंगे। जैसा कि पेरी एंडरसन कहते हैं कि, गेयस मारिअस (156-86 बी सी ई) और लुसियस सुला (138-78 बी सी ई) के समय से सैनिक अपने सेनापतियों की ओर आर्थिक पुनर्वास के लिए देख रहे थे, वहीं सेनापतियों ने अपने सैनिकों का उपयोग राजनैतिक उन्नति के लिए किया। परिणामस्वरूप गृह युद्ध का प्रकोप देखने को मिलता है जिसकी वजह से रोमन साम्राज्य में सेना एक महत्वपूर्ण तत्व की तरह उभरी।

1.6.3 बढ़ती अशांति में शहरी गरीब वर्ग की भूमिका

शहरी प्रॉलितेरियत (सर्वहारा वर्ग) ने गृह युद्ध, जिसने रोमन गणतंत्र की अंतिम शताब्दी को चिह्नित किया, के दौरान काफी दवाब डाला। पेरी एंडरसन स्पष्टतः वर्णन करते हैं कि रोमन विस्तारवाद की नीति ने 'एसिडुई' वर्ग (assidui) में कमी की जो बड़ी संख्या में सेना में अनिवार्य और आकस्मिक भरती प्रदान करते थे। परिणामस्वरूप एसिडुई वर्ग में लगातार कमी और प्रोलेतारी (भूमि-हीन नागरिक) की संख्या में वृद्धि आती गई। यह घटनाक्रम कुलीन तंत्र द्वारा भूमि पर बढ़ते एकाधिपत्य का भी परिणाम था। इस प्रकार, रोमन समाज का पूर्ण रूपांतरण हो गया और तीसरी शताब्दी बी सी ई के अंत तक वहां ऐसे नागरिकों का बहुमत था जो भूमि-हीन बना दिये गये थे।

शहरी जनता की दुर्दशा ने सीनेटोरियल शक्ति से संबंधित संकट को और तीव्र रूप से तेज़ कर दिया था। तेज़ी से भूमि से दूर होती ग्रामीण आबादी और बड़ी मात्रा में दासों के आयात ने एक ऐसे विशाल नगर को जन्म दिया जिसका शासन आसान कार्य नहीं था। 53 बी सी ई में पहली बार मुफ्त अनाज बांटा गया और जल्द ही यह रोमन राजनैतिक जीवन का स्थायी तत्व बन गया। यह शहरी प्रॉलितेरियत का समर्थन ही था जो पोंपई द ग्रेट (रोमन सेनापति; मृत्यु 48 बी सी ई) को सत्ता में लाया, जैसा कि पेरी एंडरसन कहते हैं कि, इस समर्थन ने रोमन गणतंत्र के सैनिक पतन का आरंभ कर दिया। बाद में लोकप्रिय समर्थन ने जुलियस सीज़र (मृत्यु 44 बी सी ई) को विजेय बनाया, जो सीनेट के लिए खतरा साबित हुआ। सीज़र की हत्या के पश्चात् एक बार फिर शहरी आमजनों के समर्थन ने सीनेट को आगस्टस (प्रथम रोमन सम्राट; r. 27 बी सी ई 14 बी सी ई) से कांउसल बनने और शक्ति ग्रहण करने के लिए विनती करने पर मजबूर किया।

1.7 गणतंत्र की अंतिम शताब्दी और विजयी सैन्य कमांडरों का उदय

जैसे-जैसे गणतंत्र की अंतिम शताब्दी में सीनेटोरियल कुलीन तंत्र और आम जनता के बीच संघर्ष में वृद्धि हुई, महत्वाकांक्षी राजनेताओं ने कभी एक तो कभी दूसरे पक्ष के साथ होकर इस संघर्ष का लाभ उठाया। सूला की तानाशाही रोमन गणतंत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इसके पश्चात् शक्तिशाली सैनिक सेनापतिओं या 'सैन्य लॉर्ड्स' ('warlords') ने रोमन साम्राज्य पर नियंत्रण किया। उनकी आपसी रंजिशों ने गणतंत्र के पतन की प्रक्रिया को और तेज़ कर दिया। यह अवधि, जिसमें गंभीर सामाजिक और राजनैतिक संकटों का आगाज़ हुआ, पश्चिम एशिया में मुख्य सैनिक अभियानों का काल भी थी।

1.7.1 पहला 'ट्रायमविरेट' (First 'Triumvirate')

सूला, एक सफल सेनापति था जिसने सीनेट के पक्ष का समर्थन किया और सीनेट में बहुत

से सुधार किए। उसने सीनेट की शक्तिओं को मजबूत किया, लेकिन इन सुधारों ने ट्रिब्यून की शक्तिओं को गंभीर रूप से घटा दिया। अन्य सेनापतिओं ने उसके सुधारों को तुरंत नष्ट कर दिया, खास तौर पर पाम्पेई और क्रेसस (मृत्यु 53 बी सी ई) ने। 60 बी सी ई में एक निर्णायक पल तब आया जब पाम्पेई और क्रेसस ने जूलियस सीज़र के साथ मिलकर 'ट्रायमविरेट' बनाया – तीन पुरुषों की सत्तारुढ़ समिति जिसे सेना और जनता का समर्थन हासिल था। इसके साथ ही सीनेट शक्तिहीन हो गई। हालांकि क्रेसस की मृत्यु के पश्चात् दोनों सेनापतिओं के बीच मतभेद पैदा हो गए। सीज़र की सैनिक शक्तिओं और सफलताओं से पाम्पेई को खतरा महसूस हुआ, और अन्त में उसने सीनेट का साथ दिया। सीज़र, एक प्रतिभाशाली सैनिक था जिसने गॉल को विजय किया था, वह प्रतिद्वंद्विओं को हराने में सफल रहा और 44 बी सी ई में वह 'जीवनभर के लिए रोम का तानाशाह' बन गया। परंतु उसके विस्तृत सुधारों ने रोम के बहुत से लोगों में यह शंका पैदा की कि, उसकी महत्वाकांक्षा सम्राट बनने की थी। ब्रूटस, सीज़र का सबसे करीबी दोस्त, के नेतृत्व में हत्यारों के एक समूह ने सीज़र को 44 बी सी ई में मौत के घाट उतार दिया।

1.7.2 दूसरा 'ट्रायमविरेट' (Second 'Triumvirate')

षड्यंत्रकारियों की विजय अनन्त नहीं थी। सीज़र के दो उप-सेनापतिओं – मार्क ऐन्टनी और लेपिडस – सीज़र के गोद लिए उत्तराधिकारी, ऑक्टेवियन, के साथ इन षड्यंत्रकारियों के खिलाफ अभियान करने के लिए सैन्यदल में शामिल हुए। इस प्रकार 'दूसरे ट्रायमविरेट' का गठन हुआ। प्रतिद्वंद्विओं पर सार्थक विजय प्राप्त करने के बाद दूसरा ट्रायमविरेट सत्ता में आया जिसने आपस में साम्राज्य को बांट लिया। जल्द ही उनमें झगड़े पैदा हो गए और लेपिडस को उसकी शक्तिओं से वंचित करने के बाद ऑक्टेवियन ने मार्क ऐन्टनी को ऐक्टियम की लड़ाई (31 बी सी ई), रोमन गणतंत्र का अंतिम युद्ध, में निर्णायक रूप से पराजित किया। अब ऑक्टेवियन रोमन जगत का निर्विवादित सम्राट बन गया और एक नये युग की शुरुआत के साथ गणतंत्र का अंत हुआ।

1.8 आगस्टस का युग

31 बी सी ई में मार्क ऐन्टनी को ऐक्टियम की लड़ाई में पराजित कर ऑक्टेवियन (27 बी सी ई-14 सी ई) सत्ता में आया और उसे सीनेट द्वारा आगस्टस, 'द रेवर्ड', की उपाधि से नवाज़ा गया। यह एक ऐसी उपाधि थी जिसका प्रयोग पूर्व में ईश्वर के लिए किया जाता था। ऑक्टेवियन को अक्सर 'प्रिन्सेप' या 'प्रथम नागरिक' भी कहा जाता था। उसने गणतंत्र के मुखौटे में छुपे राजतंत्र को स्थापित कर रोम में शांति का काल स्थापित किया। आगस्टस ने अपने दत्तक पिता 'सीज़र' के नाम को भी अपनाया। वह रोम का प्रथम सम्राट था, उसके नाम का लैटिन में अर्थ 'सम्राट' यानी 'विजयी सेनापति' था। उसे यह उपाधि सेना द्वारा नवाजी गई। आने वाली पांच शताब्दियों के लिए, रोम पर सम्राटों द्वारा शासन किया गया। इसलिए इस अवधि को रोमन इतिहास में 'साम्राज्य का युग' कहा जाता है।

साम्राज्य की पहली दो शताब्दियों (30 बी सी ई-180 सी ई) में '***पैक्स रोमाना***' (रोमन शांति) का अनुगमग हुआ। भूमध्यसागरीय जगत के एकीकरण ने शासन के सुधार और आर्थिक विस्तार में मदद की। हालांकि, तीसरी शताब्दी सी ई में, रोमन साम्राज्य का पतन आरंभ हुआ। कुछ शासकों ने व्यवस्था को सुधारने के लिए कठोर कदम उठाये लेकिन रोमन साम्राज्य के पतन में अंतिम झटका बर्बर आक्रमणों द्वारा पहुंचा।

आगस्टस के सुधार

आगस्टस ने रोमन साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार किए:

क) राजनैतिक और संवैधानिक,
ख) प्रशासनिक,
ग) सेना,
घ) समाज और अर्थव्यवस्था।

1.8.1 राजनैतिक और संवैधानिक सुधार

आगस्टस ने अपने मजबूत व्यक्तिगत नेतृत्व के साथ-साथ बाहरी रूप से गणतंत्रीय संस्थानों को संरक्षित करने का निर्णय लिया। उसने सीनेट को अत्याधिक अधिकार प्रदान किये। उसने सीनेट से कई महत्वपूर्ण विषयों पर परामर्श लिए, और सीनेट को इटली और आधे से ज्यादा प्रांतों पर नियंत्रण बनाए रखने की अनुमति प्रदान की। आगस्टस ने सीनेट को लगभग निष्क्रिय **जनजातीय सभा** के विधायी कार्य भी सौपें।

हालांकि, आगस्टस ने ट्रिब्यून की शक्तियां स्वयं अपने पास रखीं जिसने उसको कानून लागू करने और वीटो करने का अधिकार दिया। उसने सीमांत प्रांतों का गवर्नर पद भी अपने पास रखा, जहां पर सेना तैनात थी। उसके द्वारा सेना पर नियंत्रण का मतलब था कि उसकी शक्ति को कोई सफलतापूर्वक चुनौती नहीं दे सकता था। धीरे-धीरे आगस्टस ने अपने हाथों में असीम शक्तियां केंद्रित कर ली और सीनेट धीरे-धीरे पृष्ठभूमि में चली गई। गणतंत्रीय संस्थाओं और मजिस्ट्रेटों का अतीत के उनके नामों के सिवाए और कुछ भी बरकरार नहीं रहा।

1.8.2 प्रशासनिक सुधार

सुधारों की श्रृंखला द्वारा आगस्टस गणतंत्र के अंतिम काल में हुए नागरिक संघर्ष को कम करने में और रोमन सामाजिक व्यवस्था को स्थिर रखने में सफल रहा। '*प्रेफैक्टी*', '*प्रोक्यूरेटर्स*', अथवा '*प्रेसाइड्स*' की उपाधियों के साथ अश्वारोही श्रेणी (Equestrion) से एक नई नौकरशाही को लाया गया। सभी नौकरशाहों को अपने कर्तव्यों के निर्वाह के लिए नकद वेतन का भुगतान किया जाता था और वे *प्रिंसेप्स*[4] के प्रति उत्तरदायी थे। उत्तर रोमन गणतंत्र (146-27 बी सी ई) की अव्यवस्थाओं ने आगस्टस को यह स्पष्ट कर दिया था कि सुरक्षा, एकता, कानून और सुव्यवस्था बनाए रखना अनिवार्य था। इसलिए आगस्टस ने रात के समय गश्त करने वाली पुलिस की एक नियमित सेना और चौकीदारों की सात कंपनियां (*कोहर्ट्स*) गठित की, जो आज़ाद पुरुष थे जिन्होंने पुलिस और फायरमैन की भूमिका निभाई। उन पर नियंत्रण के लिए एक अवश्वारोही प्रीफेक्ट को नियुक्त किया गया। उसने अपने लिए प्रेटोरियन रक्षक (शाही रोमन सेना की एक कुलीन इकाई) नियुक्त किए जो आरंभ में नौ *कोहर्टस* से संघटित थे। इनमें से अधिकतम तीन रोम में और अन्य पड़ोसी क्षेत्रों में तैनात रहते थे। प्रेटोरियन रक्षक के सेनाध्यक्ष आम तौर पर संख्या में पांच होते थे और वे अश्वारोही वर्ग के सदस्य होते थे। वे शासक के मुख्य सहायक बने। इस प्रकार रोमन कुलीन वर्ग का केंद्रीय राजनैतिक कार्यालय पर एकाधिकार खत्म हुआ।

212 सी ई में साम्राज्य का एकीकरण पूर्ण हुआ जब शासक एन्टोनियस ने साम्राज्य में लगभग हर एक आज़ाद निवासी को रोमन नागरिकता प्रदान की। एक शाही डाक सेवा का निर्माण किया गया ताकि साम्राज्य के दूरस्थ प्रांतों को पहली बार नियमित संचार व्यवस्था द्वारा एक साथ जोड़ा जा सके। जल्द ही प्रांतीय गवर्नरों को नियमित वेतन मिलने लगा। इस प्रकार साम्राज्य में केंद्रीय शक्ति का लगातार 'प्रांतीयकरण' हो रहा था।

1.8.3 सैन्य सुधार

आगस्टस ने एक मजबूत पेशेवर सेना का निर्माण किया था। उसने हज़ारों सैनिकों, जो गृह

[4] शुरुआती दौर में सीनेट के प्रमुख सदस्य बाद में, 23 बी सी ई में, आगस्टस ने यह उपाधि धारण की।

युद्धों के बाद अपदस्थ कर दिए गए थे, को भूमि प्रदान की। इनमें से अधिकतर भूमि उसकी निजी संपत्ति से प्रदान की गई थी। इस अनुदानों ने किसान-सिपाहियों को काफी हद तक शांत किया। जुलियस सीज़र ने पहले ही सक्रिय सेवा में नियुक्त सैनिकों का वेतन दुगना कर दिया था। इस बढ़े हुए वेतन का रखरखाव प्रिन्सिपेट द्वारा किया जाता था।

ज्यादातर सैनिक *एसिडुई* वर्ग या छोटे भूमिपति वर्ग से नियुक्त किए जाते थे, जो इटली और उसके बाहर के क्षेत्रों में लड़े गए लंबे युद्धों के परिणामस्वरूप तबाह हो गए थे। उनके समर्थन ने ऑक्टेवियन को सत्ता प्रदान की। इसके अतिरिक्त, 6 सी ई से, युद्ध के दिग्गजों (वे सैनिक जिन्हें लंबी सेवा के बाद मुक्त कर दिया गया था) को नकद वेतन दिया जाने लगा था। इसकी राशि 13 साल के वेतन के बराबर थी और यह सेना के लिए खासतौर पर निर्मित किए गए सैनिक खजाने से दिया जाता था (यह इटली के संपत्तिशाली लोगों से प्राप्त विरासत कर और छोटी-मोटी बिक्री द्वारा अर्जित वित्त से प्रदान किया जाता था)। सेना घटकर और कम हो गई, 58 से घटकर 32 *लीजन्स*, और उसे एक पेशेवर और स्थाई बल में तब्दील कर दिया गया। इस बदलाव ने एक क्रांतिकारी सुधार के लिए मार्ग प्रशस्त किया – टिब्रियस के शासन काल से कंस्क्रिप्शन (नागरिकों द्वारा अनिवार्य सैनिक सेवा) को हटा दिया गया । इसने इटली के छोटे भूपतियों को सैन्य बोझ से एक बहुत बड़ी राहत प्रदान की।

1.8.4 सामाजिक और आर्थिक सुधार

आगस्टस ने गरीब नागरिकों के सामने खुद को एक संरक्षक के रूप में प्रस्तुत किया। राजधानी में शहरी प्रोलितेरियत को अनाज वितरण कर संतुष्ट रखा गया। साम्राज्य में मिस्त्र के समावेश के साथ अनाज की आपूर्ति नियमित हुई। बाद में दूसरी शताब्दी सी ई के अंत तक तेल और वाइन भी भोजन के सार्वजनिक वितरण में सम्मिलित हो गए। एक महत्वाकांक्षी निर्माण कार्यक्रम की शुरुआत की गई जिसने गरीबों को काफी रोजगार प्रदान किया। आगस्टस ने अमीर सीनेटरों को राज़ी करने की कोशिश की, कि वे सार्वजनिक इमारतों को अपने स्वयं के खर्चे पर बनायें और नागरिकों को मनोरंजन प्रदान करने की गणतंत्रीय प्रथा को बनाए रखें। परंतु शासकों ने समय के साथ इस संदर्भ की अगुवाई की। आगस्टस गर्व से कहा करता था कि ''मैंने रोम को ईंटों के शहर के रूप में पाया था और उसे संगमरमर का शहर बनाकर छोड़ा''।

धर्म और सदाचार

आगस्टस ने परिवार और धर्म के पारंपरिक मूल्यों को बहाल करने के लिए एक कार्यक्रम विकसित किया था। उसने व्यभिचार पर अंकुश लगाने के लिए, और जल्दी शादी करने और बड़े परिवारों को प्रोत्साहन देने के लिए कानून पारित किए। उसके खुद के सादगी भरे व्यवहार ने लोगों के लिए एक व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत किया। उसने कवि ओविड को प्यार भरी उत्तेजक कविताएं लिखने के लिए काले सागर में निर्वासित किया। उसने खुद अपनी एक मात्र बेटी जूलिया को उसके प्रेम संबंधों को अनैतिक मानते हुए पांच साल तक एक छोटे से द्वीप पर निर्वासित किया। जूलिया को पुरुषों के साथ बातचीत करना सख्त मना था और उसके वाइन पीने पर भी प्रतिबंध था। आगस्टस ने रोमनों को पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं की ओर लौटने के लिए प्रोत्साहित किया। बहुत सारी नई और पुनःस्थापित इमारतें मंदिर थीं। आगस्टस ने पुराने धार्मिक पंथों को पुनः प्रचलित किया और कुछ विदेशी ईष्ट देवों के पूजन पर प्रतिबंध लगाया।

आर्थिक सुधार

रोम के एकीकरण के दूरगामी आर्थिक परिणाम हुए। *पैक्स रोमाना* की नीति राहदारी कर और अन्य कृत्रिम अवरोधों को दूर करने, समुद्री डकैती और लूटमार का दमन करने, और

भरोसेमंद मुद्रा व्यवस्था स्थापित करने के लिए जिम्मेदार थी। यह सभी कारक साथ में साम्राज्य में लंबे समय तक शांति का अनुभव पहली और दूसरी शताब्दी सी ई में वाणिज्य के बहुमुखी विस्तार की व्याख्या करते हैं। विनिर्माण को भी प्रेरणा मिली, परंतु उसका विस्तार सीमित था क्योंकि संपत्ति कुछ ही लोगों के हाथों में सकेंद्रित होकर रह गई थी और उत्पादित वस्तुओं के लिए कोई सार्वजनिक बाजार नहीं था। आरंभिक साम्राज्य की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषीय थी और विशाल *लेटिफंडिया* फल-फूल रहीं थीं (इसके बारे में विस्तृत जानकारी के लिए इस पाठ्यक्रम की **इकाई 2** देखें)।

1.9 प्रारंभिक साम्राज्य का विस्तार-क्षेत्र

प्रारंभिक रोमन साम्राज्य में राजनैतिक और प्रशासनिक एकीकरण, बाहरी सुरक्षा और आर्थिक समृद्धि से समर्थित और उसके अनुरूप था। डेसियन साम्राज्य (डेन्यूब का दक्षिण पूर्वी क्षेत्र) पर विजय प्राप्त कर वहां की सोने की खदानों पर कब्जा कर लिया गया। एशियाई सीमाओं को विस्तारित और सुदृढ़ किया गया। आगस्टस से लेकर ट्रेजन के काल (98-117 सी ई) तक रोमन साम्राज्य का निरंतर विस्तार होता रहा। केवल आधुनिक जर्मनी में ही रोमन सैनिकों को हार का सामना करना पड़ा। यह एक ऐसी नाकामयाबी थी जिसने आगस्टस को रोमन सीमा को राइन और डेन्यूब की सीमा तक रोकने के लिए दृढ़ विश्वास दिलाया। बाद में, 43 सी ई में, सम्राट क्लॉडिअस ने इंग्लैंड पर विजय अभियान की शुरुआत की और अगली शताब्दी के आरंभ में ट्रेजन ने डासिया (आधुनिक रोमानिया) को सम्मिल्लित करते हुए साम्राज्य का विस्तार डेन्यूब से आगे कर दिया। रोमन साम्राज्य की क्षेत्रीय सीमा अपने चरम बिन्दु पर पहुंच गई थी। तीसरी शताब्दी सी ई में ये सीमाएं सिकुड़ने लगीं।

आगस्टस के तत्कालीन उत्तराधिकारी उसके स्वयं के परिवार से आये थे और उन्हें जूलियो-क्लॉडियन शासकों के नाम से जाना जाता था। नीरो (54-68 सी ई) जूलियो-क्लॉडियन वंश का अंतिम शासक था। वेस्पेसियन (69-79 सी ई) पहला शासक था जिसका प्राचीन रोमन कुलीन वर्ग से कोई संबंध नहीं था और वह एक शक्तिशाली सेनापति था। उसने फ्लावियन वंश की स्थापना की। अंतिम फ्लावियन शासक, डोमिशियन (81-96 सी ई), की हत्या के बाद सीनेट ने नेरवा (96-98 सी ई) की नियुक्ति की। इसके बाद साम्राज्य ने, 96 सी ई से 180 सी ई तक 'पांच अच्छे शासकों' के शासन के तहत शांति और समृद्धि के एक नये काल में प्रवेश किया। हालांकि मार्कस ऑरेलियस (161-180 सी ई) के शासनकाल से साम्राज्य के पतन की शुरुआत हो गयी।

1.10 उत्तर रोमन साम्राज्य

साम्राज्य के पतन की शुरुआत दूसरी शताब्दी सी ई के अंतिम वर्षों में हो गयी थी, हालांकि साम्राज्य और सौ वर्षों तक अस्तित्व में रहा।

1.10.1 तीसरी शताब्दी सी ई और राजनितिक अस्थिरता

तीसरी शताब्दी सी ई के दौरान, साम्राज्य ने एक बृहत अस्थिरता के काल में प्रवेश किया। 235 सी ई से 284 सी ई के बीच, पचास से भी अधिक शासक या उनके उत्तराधिकारी विभिन्न सेनाओं द्वारा नामित किए गए। रोमन साम्राज्य की सीमाओं के अंतर्गत आपदाओं का सिलसिला शुरू हो गया। जर्मनिक जनजातियों द्वारा रोमन साम्राज्य पर लगातार आक्रमण किए गए और उसे तबाह कर दिया। फ्रेंक और अन्य जर्मनिक जनजातियों (उत्तरी यूरोपीय) ने गॉल और स्पेन पर आक्रमण किया, अल्लामनी (ऊपरी राइन की जर्मनिक जनजाति) ने इटली में प्रवेश किया, जबकि गॉथों ने समुद्र पार करके एशिया माइनर को लूटा। आंतरिक राजनैतिक संकट और बाहरी आक्रमणों के बाद क्रमिक महामारी ने साम्राज्य में युद्धों द्वारा

पहले से कम हुई जनसंख्या को और कमजोर और कम कर दिया था। आमतौर पर इस संकट को उत्तर रोमन साम्राज्य के पतन की शुरुआत के तौर पर देखा जाता है।

1.10.2 डायोक्लेशियन (Diocletian) और साम्राज्य को पुनः सुदृढ करने के उपाय

साम्राज्य में व्याप्त गृह युद्ध धीरे-धीरे डायोक्लेशियन के शासनकाल (284-305 सी ई) के आरंभ तक आते-आते समाप्त हो गए। डायोक्लेशियन ने सैना को मजबूत करने के प्रयास किए। भूमिपति कुलीनों की जगह सैनिक एक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग बन गया। सीनेट ने अपनी सारी शक्ति खो दी। डायोक्लेशियन ने यह महसूस किया कि साम्राज्य इतना अधिक विस्तरित हो गया था कि इसे शासित करना किसी एक के बस की बात नहीं थी। अतः डायोक्लेशियन ने टेट्रार्की स्थापित की – चार शासकों की एक समिति, जिसमें एक शासक पर साम्राज्य के एक विशेष क्षेत्र के शासन की जिम्मेदारी थी। प्रथम, डायोक्लेशियन ने द्विशासन (dyarchy) स्थापित की जिसके तहत मेक्सीमियन को सह-सम्राट (सीज़र [कनिष्ठ सम्राट] 286 सी ई में और 288 सी ई में आगस्टस) बना दिया गया। बाद में उसने 293 में गलेरियस और कॉन्सटेनटियस क्लोरस को कनिष्ठ सह-शासक (सीज़र) नियुक्त किया। 305 में, डायोक्लिशियन और मेक्सीमियन दोनों ने पद त्याग दिए और दोनों सह-शासकों (सीज़र) को ऑगस्टस के पद पर पदोन्नत किया गया और इन दो सह-शासकों के अतिरिक्त दो नये सह-शासक – कांस्टैनटियस और मेक्सीमिनस – नियुक्त किए गए। इस प्रकार, दूसरी टेट्रार्की की स्थापना हुई।

1.10.3 कॉन्सटैनटाइन I

डायोक्लेशियन के पदत्याग के साथ ही टेट्रार्की (tetrarchy) ढह गई और एक बार फिर अव्यवस्था फैल गई। कॉन्सटेनटाइन प्रथम (306-337 सी ई) के शासनकाल के साथ व्यवस्था फिर से स्थापित हुई, जो अपने विरोधी सैनिक सेनापतिओं को पराजित करके सत्ता में आया था। 309 से 313 तक की अवधि में सत्ता के सभी दावेदारों का सफाया हो गया। 310 में मेक्सिमियन और 313 में मेक्सिमिनस ने आत्महत्या कर ली, फलतः अब सिर्फ दो शासक रह गये — पश्चिम में कॉन्सटेनटाइन और पूर्व में लिसिनियस। इस प्रकार, टेट्रार्की का अन्ततः पतन हुआ। कॉन्सटेनटाइन 324 में आखिरकार लिसिनियस को हराने में सफल हुआ और पश्चिम और पूरब का एकीकरण करने में सफल हुआ। इसी के साथ कॉन्सटेनटाइन ने खुद को एकमात्र ऑगस्टस घोषित किया। उसने अपनी राजधानी पूर्व, जो कि अपेक्षाकृत अधिक समृद्ध क्षेत्र था, में पुनः स्थापित करने का निर्णय लिया। उसने बोसफोरस क्षेत्र में स्थित यूनानी शहर बाईज़ेंटाइन का पुनर्निर्माण किया और उसे कांस्टैंटिनोपल (आधुनिक तुर्की में स्थित इस्तांबुल) का नाम दिया, जो आगे चलकर पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी बनी। इस प्रकार, कॉन्सटेनटाइन प्रथम ने पूर्व में सम्राट की गद्दी के स्थानांतरण की प्रक्रिया को पूर्ण किया। इसके साथ ही रोम की राजनैतिक भूमिका का अंत हुआ। कॉन्सटेनटाइन प्रथम ने रोम की मूर्तिपूजक और गणतंत्रात्मक परंपराओं का खण्डन किया, और अन्ततः वह ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गया (रोमन साम्राज्य में इसाई धर्म के विकास की पूर्ण जानकारी के लिए इस पाठ्यक्रम की **इकाई 3** देखें)। पूर्वी रोमन साम्राज्य ने सभ्यता के 'बाईज़ेंटाइन' चरण में प्रवेश किया और पश्चिम की क्षति के पश्चात् स्वयं को प्राचीन यूनान और रोम की सांस्कृतिक विरासत का मुख्य उत्तराधिकारी घोषित किया।

1.11 साम्राज्य का पतन

पश्चिम में रोमन साम्राज्य का पतन क्रमिक था। साम्राज्य को जर्मेनिक कबीलाई समूहों के लगातार हमलों ने विध्वंस कर दिया (फ्रैंक्स ने गॉल्स पर विजय पाई, आंग्ल-सैक्सनों ने इंग्लैंड

पर कब्जा किया, और लौम्बार्डों ने रोम पर अपनी शक्ति स्थापित की)। 476 सी ई में पश्चिम के अंतिम शासक को एक बर्बर सरदार द्वारा हटा दिया गया। रोमन और इसके पश्चिमी साम्राज्य के पतन को परंपरागत रूप से एक सहस्त्राब्दी से ज्यादा के रोमन इतिहास के अंत की भांति देखा जाता है (विस्तृत जानकारी के लिए इस पाठ्यक्रम की **इकाई 4** देखें)।

बोध प्रश्न-2

1) गणतंत्र के पतन और आगस्टस सीजर के उदय के कारकों का करीब 50 शब्दों में विवरण दीजिये।

....

....

....

....

....

2) कैसे ऑगस्टस सीजर के सुधारों ने एक शान्त, स्थिर और समृद्ध नवीन युग का आरंभ किया?

....

....

....

....

....

3) तीसरी शताब्दी सी ई में किस कारण से रोमन साम्राज्य में संकटकाल उत्पन्न हुआ? किस हद तक डायोक्लेशियन और कॉन्सटैनटाइन I साम्राज्य को फिर से स्थिर बनाने में कामयाब हुए?

....

....

....

....

....

4) निम्न में से कौन से कथन सही और कौन से कथन गलत हैं? कथनों के आगे **सही / गलत** लिखें।

क) रोम के आरम्भिक विकास में एट्रूस्कन का गहरा प्रभाव था। **(सही / गलत)**

ख) पैट्रिशियनों और प्लेबियनों के बीच संघर्ष की वजह से सीनेट की शक्ति का पतन हुआ। **(सही / गलत)**

ग) एक तरफ रोमनसाम्राज्य के विस्तार के लिए किए गए युद्ध सीनेटोरियल कुलीनतंत्र की शक्ति और समृद्धि में वृद्धि का कारण थे, लेकिन वहीं दूसरी ओर इन युद्धों की वजह से कृषक वर्ग का पतन हुआ। **(सही / गलत)**

घ) ऑगस्टस सीजर के सुधारों ने रोम में नागरिक संघर्ष को तीव्र किया। **(सही / गलत)**

ड़) जर्मेनिक कबीलाई समूहों के अंतिम प्रहार की वजह से पश्चिम में रोमन साम्राज्यढह गया। **(सही / गलत)**

1.12 सारांश

रोमन साम्राज्य प्राचीन और मध्ययुगीन परंपराओं के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी उपलब्ध कराता है। इसने राजतंत्र से गणतंत्र तथा गणतंत्र से एक सशक्त साम्राज्य तक का विकास देखा। यह वह काल भी था जब ईसाई धर्म ने रोमन साम्राज्य में प्रवेश किया और धीरे-धीरे यूरोप में अपनी जड़ें जमाई (इस पाठ्यक्रम की **इकाई 3** में इस पर चर्चा की गई है)। राज्य के प्रशासन और कानून निर्माण में लोगों की राजनैतिक भागीदारी (यद्यपि यह केवल 'नागरिकों' तक सीमित थी) ने रोमन परंपराओं को उच्च स्थान पर पहुंचाया। ऑगस्टस के संरक्षणत्व में *'पैक्स रोमाना'* (सार्वभौमिक शांति) की स्थापना ने भूमध्यसागरीय क्षेत्र में रोम के प्रभुत्व को स्थापित किया। लेकिन जर्मेनिक कबीलाई समूहों (फ्रैंक्स, गॉल्स) के लगातार आक्रमणों ने पश्चिमी रोमन साम्राज्य को उसके अंत तक पंहुचा दिया, हालांकि पूर्वी रोमन साम्राज्य 1453 तक टिका रहा।

1.13 शब्दावली

***ऐसीडुई* (*Assidui*)** : छोटे भूमि-धारक किसान

***अश्वरोही* (*Equites*)** : निम्न वर्ग के नवीन समृद्ध सदस्य

बाइज़ेंटाइन साम्राज्य (Byzantine Empire) : पूर्वी रोमन साम्राज्य

काँसल (Consuls) : दो सर्वोच्च मैजिस्ट्रेट

***लैटिफंडिया* (*Latifundia*)** : विशाल भूमि-क्षेत्र जहां दासों से काम कराया जाता था

अभिजात वर्ग (Patrician) : वंशानुगत कुलीन वर्ग

पैक्स रोमाना (*Pax Romana*) : ऑगस्टस के सुधारों द्वारा उद्घाटित शांति और स्थिरता की लम्बी अवधि जो लगभग 200 वर्षों तक बनी रही

निम्न वर्ग (Plebeian) : आम नागरिक

***प्रॉलितेरी* (*Proletarii*)** : संपत्ति रहित नागरिक

सीनेटोरियल अभिजात वर्ग (Senatorial Aristocracy) : अभिजात वर्ग से संबंधित सीनेट के सदस्य

जनजातीय सभा (Tribal Assembly) : एक ऐसी सभा जिसमें केवल निम्न वर्ग के सदस्य थे

ट्रिब्यून्स (Tribunes) : अधिकारी (दो) जो कि निम्न वर्ग को अमीरों के अत्याचार से बचाने के लिए जनजातीय सभा द्वारा नियुक्त किए जाते थे।

1.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1.) भाग 1.2 देखें

2.) भाग 1.3 देखें

3.) भाग 1.3 देखें

4.) भाग 1.4 देखें

5.) भाग 1.5 देखें

बोध प्रश्न-2

1.) भाग 1.7 देखें

2.) भाग 1.8 देखें

3.) भाग 1.10 देखें

4.) क) सही; ख) गलत; ग) सही; घ) गलत; ड़) सही

1.15 संदर्भ ग्रंथ

एंडरसन, पेरी, (2000) (रिप्रिन्ट) *पैसेजेज़ फ्रॉम एन्टिक्विटी टू फ्यूडलिज्म* (न्यूयार्कः वर्सो क्लासिक्स).

बर्न्स, एडवर्ड मेक्नाल एवं राल्फ, फिलिप ली, (1991) *वर्ल्ड सिविलाइज़ेशन्स* (न्यूयार्कः नॉर्टन).

फारूकी, अमर, (2001) *अर्ली सोशल फॉरमेशन्स* (नई दिल्लीः मानक प्रकाशन).

कागन, डोनाल्ड, ओज़मेन्ट, स्टिवेन, फ्रैंक, एलिसन, एवं टर्नर, फ्रेंक एम., (2013) *द वेस्टर्न हेरिटेज,* खंड A, भाग 1 (लंदनः पिअरसन ऐड्यूकेशन).

रेनशॉ, जेम्स, (2012) *इन सर्च ऑफ द रोमन्स* (लंदनः ब्रिस्टल क्लासिकल प्रेस).

1.16 शैक्षणिक वीडियो

एनशिएन्ट रोम 101: नेशनल ज्योग्राफिक
https://www.youtube.com/watch?v=GXoEpNjgKzg

द रोमन एम्पायर- ऐपिसोड 1: द राइज़ ऑफ रोमन एम्पायर
https://www.youtube.com/watch?v=cZx7Rr3iVvc

इकाई 2 रोमन साम्राज्यः आर्थिक और सामाजिक संरचना*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का केंद्रीय विषय प्रारम्भिक गणतंत्र से लेकर प्रिन्सिपेट और भूतपूर्व साम्राज्य तक के रोम की आर्थिक और सामाजिक संरचना का अध्ययन करना है। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- युद्ध और संघर्षों के विस्तार के चलते रोमन समाज और अर्थव्यवस्था में आए दूरगामी परिवर्तनों को समझ सकेंगे,
- *लैटिफंडिया* नामक नवीन ग्रामीण संस्था के उद्भव को जान पाएँगे,
- उत्पादन की दास पद्धति की मुख्य विशेषताओं को समझ पाएँगे,
- रोमन सामाजिक संरचना में आए परिवर्तनों की प्रक्रिया को समझ सकेंगे,
- दासप्रथा पर आधारित रोमन सामाजिक संरचना का विश्लेषण कर सकेंगे, और
- रोमन कला और वास्तुकला के विशिष्ट पहलुओं की सराहना कर सकेंगे।

---

* डॉ. प्रॉमिला श्रीवास्तव, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

2.1 प्रस्तावना

प्राचीन रोम मुख्य रूप से एक कृषक और दास-आधारित अर्थव्यवस्था थी। कृषि और व्यापार अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्र थे, छोटे पैमाने के औद्योगिक उत्पादन इसके पूरक थे। समाज, वर्ग और सामाजिक प्रतिष्ठा की धारणा से प्रभावित था। दास श्रम का उच्च स्तर पर प्रयोग उत्तर गणतंत्र काल में सर्वाधिक महत्पूर्ण तत्व था। पहली शताब्दी सी ई से सीनेट ने अपनी शक्तियां खोना प्रारंभ कर दिया था और धीरे-धीरे राजतंत्र की स्थापना हुई। नई कर व्यवस्था लागू हुई और अर्थव्यवस्था में विभिन्न वर्गों की भूमिका भी परिवर्तित हुई। भूस्वामियों द्वारा अपनी जागीरों पर दासों को स्थाई रूप से बसाया गया और उन्हें अपनी देखरेख करने के लिए छोटे भूखंड दिए गए। हालांकि, दासप्रथा पूर्ण रूप से नष्ट नहीं हुई थी, रोमन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तनों ने आरंभिक मध्ययुगीन यूरोप और एशिया के इतिहास पर दूरगामी प्रभाव छोड़ा। एक आंकलन के अनुसार जहां लगभग 225 बी सी ई में रोमन इटली में 600,000 दास थे, वहीं 31 बी सी ई में रोमन इटली में इनकी संख्या बढ़कर बीस लाख तक हो गई।

प्राचीन रोम की आर्थिक और सामाजिक संरचना के अध्ययन के लिए इस इकाई को रोमन इतिहास के तीन प्रमुख कालों में विभाजित किया गया हैः गणतंत्र (509-27 बी सी ई) प्रिंसिपेट (27 बी सी ई-284 सी ई) और उत्तर रोमन साम्राज्य (284 सी ई-476 सी ई)। प्रत्येक काल के समाज तथा अर्थव्यवस्था के प्रमुख आयामों का परीक्षण विस्तार से किया गया है।

2.2 अर्थव्यवस्था की प्रकृति

प्राचीन विश्व की रोमन सभ्यता, जिसने बाद की पश्चिमी सभ्यताओं पर गहरा असर छोड़ा था, नगरों पर आधारित थी। इन नगरों ने अपनी संपत्ति ग्रामीण क्षेत्र से अधिशेष हासिल करके प्राप्त की। इस शहरी संस्कृति और राजनीति के पीछे ग्रामीण अर्थव्यवस्था थी, कृषि उत्पादन अर्थव्यवस्था का मुख्य कारक बना रहा, और शहरों ने निरपवाद रूप से अपनी संपन्नता ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त की।

2.2.1 गणतंत्र के अधीन अर्थव्यवस्था

रोमन साम्राज्य के इतिहास में संपत्ति का मुख्य स्रोत भूमि थी। भूमि के विशाल क्षेत्रों पर अनाजों की खेती और अन्य कृषि उत्पाद पैदा किए जाते थे, विशेषकर जैतून और मदिरा बनाने के लिए अंगूर की खेती की जाती थी। इसके साथ ही भूमि मवेशी, भेड़ और घोड़ों के पालन आदि के लिए चारागाह के तौर पर भी इस्तेमाल की जाती थी। 'बारह टेबल' ('Twelve Tables') पांचवी शताब्दी बी सी ई में रोम की विस्तृत कृषीय जीवनशैली के बारे में संकेत देती हैं। कृषि रोमन गतिविधियों का मूलभूत आधार था, जिसमें आमतौर पर लघु भू-धारक अपनी भूमि पर स्वयं कार्य करते थे। पशु-पालन करने के बजाय कृषि और अंगूर की खेती अधिक सामान्य थी। उत्पादकों, व्यापरियों और कारीगरों के लिए शहर कभी भी मुख्य केंद्र नहीं थे। शहरों के केन्द्र में प्रभावशाली भूस्वामी वर्ग रहता था जो गांवों में स्थित अपनी भूसंपत्ति पर और खेतों में मक्का, तेल और अंगूर की मदिरा उत्पादन से अपनी आय अर्जित करता था। इन खेतों के भूस्वामी अधिकतर अनुपस्थित प्रवासी भूस्वामी थे। ग्रामीण क्षेत्र में दास श्रमिकों की मौजूदगी की वजह से ही यह संभव था जिसने शहरों में पनपने वाले भूस्वामी वर्ग को समृद्धि और ऐशो-आराम उपलब्ध कराया।

दास अर्थव्यवस्था

आरंभिक रोम में दासप्रथा मौजूद थी परंतु सिर्फ क्लासिकल काल (दूसरी शताब्दी बी सी ई

से दूसरी शताब्दी सी ई) तक यह एक बहुत बड़ी और विशाल प्रथा के रूप में अस्तित्व में रही, हालांकि अन्य श्रम प्रथाएं – पट्टेदार, निर्भर पट्टेदार और शहरी कारीगर – भी मौजूद थीं। हालांकि उत्पादन की प्रभावशाली प्रणाली दासप्रथा आधारित ही थी। पेरी एन्डरसन के अनुसार, दासप्रथा ही एक ऐसी आर्थिक लगााम थी जिसने शहर और गांवों को एक साथ जोड़ा हुआ था, और यह व्यवस्था शासक वर्ग के लिए अत्यधिक लाभकारी थी। इटली की अर्थव्यस्था का पारंपरिक संरचना में रूपांतरण भूमध्यसागरीय जगत पर सत्ता स्थापित करने के लिए लड़े गए युद्धों के कारण हुआ। इटली की अर्थव्यवस्था परिवर्तन में दो महत्वपूर्ण पहलू देखे जा सकते हैंः पहला, रोमन कुलीन वर्ग की संपत्ति में वृद्धि, और दूसरा दासप्रथा में भारी वृद्धि।

कृषि की तुलना में उद्योग और उत्पादन का महत्व अपेक्षाकृत कम था। उत्पादन छोटे पैमाने पर किया जाता था, आमतौर पर यह व्यक्ति विशेष या छोटे समूहों द्वारा प्रतिदिन प्रयोग में आने वाली वस्तुएं होती थीं जैसे ईंटें, टाईल्स, बर्तन, चमड़ा उत्पाद और कपड़े।

हॉप्किंस (1978) के अनुसार रोम में सात प्रक्रियाओं ने दासप्रथा की वृद्धि को प्रभावित कियाः (1) लगातार युद्ध, (2) लूट का अंतःप्रवाह, (3) इस लूट का भूमि में निवेश, (4) विस्तृत भूसंपत्तियों का निर्माण, (5) किसानों की दरिद्रता, (6) किसानों का शहरों तथा प्रांतों की ओर प्रवास, और (7) शहरी बाज़ारों में वृद्धि। ये सारी प्रक्रियाएं एक दूसरे से संबद्ध थीं। एम. आई. फिनले (1980) का विचार है कि अर्थव्यवस्था में दासप्रथा दो परिस्थितियों के कारण फैलती है। पहली, जब किसी समाज में श्रम की आंतरिक आपूर्ति उसकी मांग के संबंध में गंभीर रूप से कम हो जाती है। दूसरी, जब अत्यधिक भूसंपत्ति एक छोटे से वर्ग के हाथों में आ जाती है। आरंभिक गणतंत्र (326 बी सी ई) में ऋण-बाध्य दासप्रथा (debt bondage) के उपयोग की वैधता को समाप्त कर दिया गया था। लेकिन, ग्रामीण ऋणग्रस्तता ने भूसंपत्ति को अभिजात वर्ग के हाथों में एकत्रित करने का काम किया। ऋण-बाध्य दासप्रथा के समाप्त होने के साथ बड़े भूस्वामियों के हाथ में कोई बंधुआ श्रमिक नहीं रह गए थे। दासप्रथा इनकी भूसंपत्ति के लिए मानव श्रम प्रदान करती थी। इसके अतिरिक्त, यूनान और कार्थेजिअन्स से सीखे हुए बेहतर खेती के तरीकों ने कुलीन वर्ग को अधिक से अधिक भूमि खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया। अनाज की खेती को छोड़कर इन्होंने बड़े पैमाने पर जैतून के तेल, अंगूर की मदिरा का उत्पादन या भेड़ और मवेशी पालना शुरू कर दिया। यह परिवर्तन विशेष रूप से जीती गई भूमि से आए युद्ध बंदियों की आपूर्ति के कारण लाभकारी सिद्ध हुआ क्योंकि इनसे दास के रूप में भूमि पर कार्य कराया जा सकता था। दास श्रम पर आधारित इन बड़े बाग़ानों को *'लैटिफंडिया'* कहा जाता था, जिनका प्रचलन उस समय इटली के कई भागों में था।

रोमन युद्ध संघर्षों के परिणामस्वरूप *लैटिफंडिया* की उत्पत्ति हुई जिसने अर्थव्यवस्था को परिवर्तित कर दिया। दासों की आपूर्ति विजयी युद्धों द्वारा हो रही थी, यद्यपि डाके और समुद्री डकैती भी दास आपूर्ति के महत्वपूर्ण स्रोत थे। *लैटिफंडिया* में हमेशा भूमि के संघटित भाग नहीं शामिल होते थे, जिनकी एक एकल इकाई के रूप में खेती की जा सके। *लैटिफंडियाओं* का आदर्श प्रतिरूप बहुत बड़ी संख्या में मध्यम आकार की **विला** सम्पदा थे, (बड़े भूभाग में कभी-कभी एक दूसरे से सटे हुए लेकिन अक्सर ये पूरे देश में वितरित थे। प्रबंधन कार्य भी दास निरीक्षकों और *बेलिफों* (*bailiffs*) को सौंपे जाते थे, वह दासों के समूहों को खेत में कार्य करने के लिए लगाने के लिए ज़िम्मेदार होते थे जबकि *लैटिफंडिस्ट* (स्वामी) शहरों में रहा करते थे। यहां तक कि *लैटिफंडिस्टों* की फैली हुईं विस्तृत जागीरें उनके यूनानी पूर्वजों से कहीं ज्यादा बड़ी थीं, अक्सर विस्तार में 300 एकड़ से भी अधिक, जबकि संघटित जागीरें जैसे टस्कनी में प्लिनी द यंगर की एस्टेट संभवतः आकार में 3000 एकड़ से भी अधिक रही होगी। पेरी एन्डरसन के अनुसार, इतावली *लैटिफंडिया* के उदय ने बड़े चारागाह पशुपालन

और अंगूरों की मदिरा और जैतून की मिश्रित फसल के साथ-साथ अनाजों की खेती को बढ़ावा दिया।

रोमन गणतंत्र द्वारा विकसित ग्रामीण दास आधारित *लैटिफंडियम* ने पश्चिमी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में स्थापित उपनिवेशों में भी प्रवेश किया। इस प्रकिया में स्पेन या गॉल के नदी मार्गों ने सहायता प्रदान की। रोमवासियों के हाथ में और अधिक भूमि आ जाने से खेती के क्षेत्र में अन्य विकास हुए। यद्यपि अनाज का उत्पादन इटली में लगातार महत्वपूर्ण बना रहा और जो कि गुज़र बसर के लिए आवश्यक था, वहां अधिक से अधिक नकदी फसलें जैसे जैतून और अंगूर की पैदावार की जाने लगी। हालांकि ये नकदी फसलें केवल अमीरों के लिए लाभकारी थीं, क्योंकि इन फसलों के उत्पादन का लाभ प्राप्त होने में अनेक वर्ष लग जाते थे।

जैसा कि पेरी एन्डरसन वर्णन करते हैं, स्पेन और गॉल इटली का हिस्सा बने रहे, तथा साम्राज्य के अंत तक रोमन प्रांतों में दासप्रथा बहुत गहराई तक चिह्नित रही। रोमवासियों द्वारा पश्चिमी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में नौगम्य नदियों के किनारों पर शहरों की स्थापना की गई। यद्यपि पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्रों की तुलना में ये शहर बहुत अधिक संख्या में नहीं थे, लेकिन ये रोमवासियों द्वारा पूर्व में स्थापित शहरों से काफी हद तक बड़े थे। उत्तर गणतंत्र में रोम में दास श्रमिकों के बड़ी संख्या में आने से काफी हद तक इसने न केवल कृषि को परिवर्तित किया, बल्कि इसके द्वारा उद्योग और व्यापार में भी विशिष्ट परिवर्तन आए। पी.ए. ब्रंट के एक अनुमान के अनुसार, केवल रोम में ही संभवतः 90 प्रतिशत कारीगर मूलरूप से दास थे। इनमें से जो उत्पादन में शामिल थे उन्हें अपेक्षाकृत अधिक अवसर प्राप्त थे।

व्यापार और उद्योग

आरंभिक रोम अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केंद्रों में प्रमुख नहीं था जैसा कि एथेन्स या कॉरथेज के नगर-राज्य, या उत्तर में स्थित कुछ समृद्ध एट्रूस्कन शहर थे। व्यापार मुख्य रूप से स्थानीय बाज़ारों की आवश्यकताओं की पूर्ति और स्थानीय उत्पादों से संबंधित व्यापार करता था। आरंभ में व्यापार ज़रूरी वस्तुओं या समाज के समृद्ध वर्ग के लिए कुछ विलासिता की वस्तुओं से संबंधित था। व्यापारियों को कोई ख़ास सम्मान प्राप्त नहीं था, यद्यपि समय के साथ उनमें से कई बहुत अमीर बन गए (अश्वारोही वर्ग), परंतु फिर भी भूमिपति वर्ग ने उन्हें समान रूप से स्वीकार नहीं किया। यद्यपि मुद्रा प्रणाली प्रचलन में थी, लेन-देन कांस्य में भार के माप द्वारा होता था। संभवतः 300 बी सी ई तक सिक्के जारी नहीं किए गए थे। व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में भू-परिवहन एक गंभीर समस्या थी। कुछ ही मुख्य मार्ग थे जिनका निर्माण आरंभ में सेना के प्रयोग के लिए किया गया था, यहां तक कि पक्के मार्ग पर भी बैलगाड़ियों की गति बहुत धीमी थी और उस पर जानवरों की भार ले जाने की क्षमता भी सीमित थी। वहीं दूसरी ओर, भूमध्यसागर से पानी के जहाज़ों के माध्यम से परिवहन काफी सस्ता था, हालांकि आरंभ में इसमें काफी निवेश करने की आवश्यकता थी। सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पहुंचाने के लिए नौगम्य नदियां बहुत महत्वपूर्ण थीं, हालांकि यह ज़्यादातर बहुत छोटे पैमाने पर ही लाया ले जाया जाता था।

प्राचीन रोम में खनन् सबसे बड़ा उद्योग था जो कि विशाल भवन परियोजनाओं के लिए पत्थर और भूमध्यसागरीय क्षेत्रों पर आक्रमण के लिए औज़ारों और हथियारों की आवश्यकता पूर्ति हेतु धातु की आपूर्ति करता था। यूनान और इटली भवन निर्माण, जिसे प्राचीन और आधुनिक दोनों समाजों द्वारा समान रूप से सराहा गया है, के लिए संगमरमर उपलब्ध कराते थे। स्पेन में भारी मात्रा में सोने और चांदी का प्रयोग सिक्के और आभूषण बनाने के लिए किया जाता था। ब्रिटेन में खनन् से लोहा, सीसा और टिन का उत्पादन हथियारों के निर्माण के लिए किया जाता था। हालांकि अधिकतर कार्य दासों और **स्वतंत्र दासों** (**freedmen**: वे दास

जिन्हें स्वतंत्र कर दिया गया था) द्वारा किया जाता था, लेकिन स्वतंत्र श्रमिक भी उपलब्ध थे।

2.2.2 प्रिन्सिपेट (Principate) के अधीन अर्थव्यवस्था की संरचना

आरंभिक साम्राज्य में अर्थव्यवस्था मूलभूत रूप से कृषीय थी और विशाल भू-खंडों, *लैटिफंडिया,* में वृद्धि हुई थी। रोमन इतिहास में आगस्टस के काल को स्वर्ण काल के रूप में माना जाता था। भूमध्यसागर के एकीकरण ने शासन में सुधार और आर्थिक विस्तार को सुविधाजनक बनाया। अर्थव्यवस्था निरंतर दास प्रथा पर आधारित रही। कृषि और शिल्प उत्पादन से संबंधित तकनीकों में भी सुधार हुआ। उदाहरण के लिए, तेल मशीन से दबाकर तेल निकालने की तकनीक से तेल के उत्पादन में वृद्धि हुई, आटा गूंदने की मशीन से ब्रेड उत्पादन में तेज़ी आई और काँच की धमन-भट्टियाँ दूर-दूर तक फैल गईं। देशियन राज्य पर विजय (168 बी सी ई-106 सी ई) प्राप्त कर उसकी सोने की खाने हड़प ली गईं।

प्राचीन विश्व में रोम के एकीकरण के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव हुए। प्रिन्सिपेट के दौरान (पहली और दूसरी शताब्दी सी ई), व्यापार और वाणिज्य का बहुत विस्तार हुआ। यह कई कारणों से हुआ। पहला, राहदारी और अन्य कृत्रिम अवरोधों को हटाने के लिए *पैक्स रोमाना* उत्तरदायी था। दूसरा, इसने डकैती और समुद्री लूटमार का अंत कर दिया और तीसरा, अब विश्वसनीय मुद्रा व्यवस्था स्थापित हो गई। इसके अतिरिक्त, पश्चिम में सबसे लम्बे समय के लिए शांति स्थापित हो गई जिसने व्यापार और वाणिज्य को प्रोत्साहन दिया। उद्योग में भी कुछ वृद्धि हुई लेकिन इसके विस्तार में यह तथ्य बाधक बना रहा कि शासक वर्ग के हाथों में ही सम्पत्ति का संकेन्द्रण रहा और औद्योगिक वस्तुओं के लिए व्यापक बाज़ार का विकास नहीं हुआ।

साम्राज्य की लगातार विस्तारित होती हुई अर्थव्यवस्था ने ऑगस्टस को विस्तृत, लोकनिर्माण कार्यों के लिए पूंजी से सक्षम किया – मार्सेलस की नाट्यशाला, क्युरिया जूलिया (सीनेट हाउस), क्लामिनियन क्रीकस, क्रीकस मेक्सिमस और ऐक्वा मर्सिया की पानी की क्षमता को तीन कृत्रिम जल नालों – जूलिया, वर्गो और अलसोक्टिवा – द्वारा दुगना किया गया। ऑगस्टस कहा करता था कि 'उसे रोम ईंटों के शहर के रूप में मिला था, और उसने इसे संगमरमर का एक शहर बना कर छोड़ा'। एक महत्वकांक्षी भवन निर्माण कार्यक्रम का आरंभ किया गया जिसने निम्न वर्ग के लिए महत्वपूर्ण रोज़गार उत्पन्न किया। गरीब नागरिकों को अनाज बांटने की प्रथा जारी रही जिसमें दूसरी शताब्दी सी ई के अंत तक अंगूर की मदिरा और तेल को भी शामिल किया गया। 'अच्छे शासकों' के काल में आर्थिक विकास लगातार होता रहा। आंतरिक शांति और कुशल प्रशासन ने दूरस्थ क्षेत्रों तक के व्यापार तथा उत्पादन को सरल बनाकर कृषि के साथ-साथ व्यापार और उद्योग के विकास में सहायता की। छोटे खेत विद्यमान रहे लेकिन अनुपस्थित भूस्वामियों के द्वारा संचालित अधिक से अधिक विशाल भूखंड और नकदी फसलों ने कृषि पर अपना दबदबा बनाए रखा।

2.2.3 उत्पादन की दास पद्धति और संकटकाल

पेरी एन्डरसन के अनुसार, उत्पादन की दास पद्धति यूनानी-रोमन जगत की एक निर्णायक पद्धति थी। यदि इसने यूनानी-रोमन जगत को फलने-फूलने का आधार प्रदान किया था तो उसके पतन के लिए भी यही उत्तरदायी थी। रोमन परिकल्पना में कृषि दासों को 'यांत्रिक वाणी' ('instrumentum vocale`) कहा जाता था, बोलने वाला औज़ार; पशुधन से एक श्रेणी दूर जो एक 'अर्ध-वाणी यंत्र' की तरह संस्थापित था, और औज़ार से दो श्रेणी दूर जो 'मूक यंत्र' ('instrumentum mutum') की तरह संस्थापित थे। यह दास महानगरीय बाज़ारों में बिक्री और खरीद की मानक वस्तुएं बन गए थे। इन्हें एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरित और

अलग-अलग प्रकार के कौशलों में प्रशिक्षित किया जा सकता था। जैसा कि पेरी एन्डरसन का विचार है कि क्लासिकल प्राचीन संपन्न, समृद्ध शहरी प्रतिष्ठित वर्ग की समृद्धि और सुख-सुविधा इन दास श्रमिकों द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में उत्पादित विशाल अधिशेष पर आधारित थी।

कुछ आलोचकों के अनुसार दासप्रथा ने तकनीकी विकास में बाधा डाली। दासों को कुछ नया करने के लिए प्रोत्साहन नहीं मिला और न ही उनको किसी कीमती उपकरण को देने पर विश्वास ही किया जा सकता था। अंततः दास उत्पादन के संबंध कृषि और उद्योग दोनों के ही उत्पादन को लकवा मारने लगे थे। निःसंदेह दास अर्थव्यवस्था में कुछ तकनीकी सुधार हुए थे। इनकी सहायता से अधिक लाभकारी अंगूर की मदिरा और तेल संवर्धन (अंगूर और जैतून की खेती) का फैलाव; अनाज पीसने के लिए रोटरी मिल की शुरुआत; दो-खेतीय आवर्तन प्रणाली (two-field system); वनस्पति का ज्ञान और खेत के जलनिकास के तरीकों में भी वृद्धि हुई। इस प्रकार तकनीकी विकास पूर्णतः बधित नहीं था। दास महिलाएं अक्सर अनाज की पिसाई और खेतों में कृषि की प्रभारी हुआ करती थीं। कारखानों और दुकानों में ये चरखा कातने वाली, बुनाई करने वाली और कपड़ा बनाने वाली के रूप में कार्य किया करती थीं। हालांकि, कुछ शिक्षित महिलाएं सेक्रेटरी, लिपिक और पठन-पाठन (reader) का कार्य भी किया करती थीं।

लेकिन, जैसा कि वर्णित किया गया है, अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए कभी भी बहुत अधिक अविष्कार नहीं हुए थे। कुल मिलकार प्राचीन अर्थव्यवस्था में तकनीक संबंधी गतिहीनता थी। असीमित शोषण योग्य श्रमिकों की प्रचुरता होने के कारण (जो कि दासप्रथा की वजह से था) श्रम बचत वाले उपकरणों के विकास को प्रोत्साहन नहीं मिला। मानव और पशु श्रम पर अधिक निर्भरता ने रोमवासियों को सीमित तकनीकी के दायरे में काम करने की परिस्थिति उत्पन्न की। दास प्रथा की चार शताब्दियों के दौरान श्रम की बचत करने वाला किसी भी प्रकार का उपकरण व्यवहार में नहीं लाया गया और जल्द ही 'रोमन कृषि अर्थव्यवस्था की सीमाएं' अपनी हद में पहुंच गईं और चिरस्थायी हो गईं।

साम्राज्यकाल के दौरान एक और कारक जिसने दास अर्थव्यवस्था के संकटकाल में योगदान दिया वह था दासों की आपूर्ति में तेजी से गिरावट और उनकी कीमतों में वृद्धि। परांपरागत रूप से, दासों की आपूर्ति मुख्य रूप से विदेशी विजय से प्राप्त युद्ध के कैदियों पर निर्भर थी जो प्राचीन समय में दास श्रमिक उपलब्ध कराने का मुख्य स्रोत था, 'ट्रैजन के पश्चात् साम्राज्य की सीमाओं के विस्तार की समाप्ति के साथ युद्ध कैदियों के स्रोत निःसंदेह समाप्त हो गए'।

इसके परिणामस्वरूप आई कमी की भरपाई वाणिज्यक व्यापार नहीं कर सका। इसका परिणाम यह हुआ कि दासों की कीमतें तेज़ी से बढ़ने लगीं और ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि दूसरी और पहली शताब्दी बी सी ई में दासों की कीमतों की तुलना में यह पहली और दूसरी शताब्दी सी ई में आठ से दस गुना अधिक थी। स्वामियों के लिए इनकी तेज़ी से बढ़ती हुई कीमतों ने विरोधाभास और दास श्रमिकों के प्रति खतरे को उजागर किया। दासों के स्वामियों के लिए प्रत्येक युवा दास नश्वर पूंजी निवेश के समान था जो कि उसकी मृत्यु होने पर पूर्ण रूप से समाप्त हो सकती थी। अतः दास स्वामी अब अतिरिक्त दासों को खरीदने में संकोच कर रहे थे।

प्रजनन दर में गिरावट भी दासों की संख्या में कमी का एक अन्य कारण था। दासों को घरों में कैदियों की तरह रखा जाता था और मात्र कुछ महिला दासों को ही नौकरी पर रखा जाता था क्योंकि वे स्वामियों के लिए अधिक लाभदायक नहीं थीं। इसके परिणामस्वरूप प्रजनन

दर में कमी आई, जिससे समय के साथ-साथ श्रम बल में भी कमी आई होगी। दासों की संख्या में इस गिरावट को रोकने के लिए कुछ स्वामियों ने प्रिन्सिपेट के दौरान दास-प्रजनन को बढ़ावा दिया। इससे दास अर्थव्यवस्था के संकटकाल को कुछ समय के लिए टाला जा सका परंतु यह दीर्घावधि के लिए इस संकटकाल का कोई निश्चित समाधान उपलब्ध नहीं करा सका। इसी दौरान, इस दास क्षेत्र के नुकसानों की क्षतिपूर्ति के लिए ग्रामीण क्षेत्र की स्वतंत्र आबादी में वृद्धि हो रही थी। इस प्रकार, प्रिन्सिपेट के अंत तक ग्रामीण अर्थव्यवस्था में संकट उमड़ रहा था।

इस दौरान, व्यापार और उद्योग में कोई वृद्धि नहीं हुई जो कृषि उत्पादन की इस गिरावट को प्रतिसंतुलित कर पाती। मुख्यतः किसानों, दास श्रमिकों और शहरी गरीबों से निर्मित आबादी ने बाज़ार के कार्यक्षेत्र को सीमित कर दिया। संपत्तिशाली वर्गों ने व्यापार के प्रति अपनी परंपरागत उपेक्षा को बनाए रखा। व्यापारी उपेक्षित वर्ग था क्योंकि उसमें लगातार दास प्रथा से स्वतंत्र हुए लोग (फ्रीडमैन) ही सम्मिलित हो रहे थे। रुचि और मांग दोनों की ही कमी ने उद्योग में तकनीकी आधुनिकता के विरूद्ध काम किया और उसकी संभावनाओं को कम किया।

आर्थिक और राजनैतिक संकट ने दास प्रथा के पतन को और बढ़ावा दिया। पहली दो शताब्दी सी ई के दौरान रोमन साम्राज्य अपने चरम पर था परंतु दूसरी शताब्दी सी ई तक यह साफ हो गया था कि आगे कठिन समय आने वाला है। केन्द्रीय प्रशासन ने गिरती हुई अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए अधिकतम उपाय किए। मौद्रिक स्थिरता के साथ-साथ राजनैतिक स्थिरता का भी पतन हो गया था। जबकि वहां की आबादी में महत्वपूर्ण गिरावट हो रही थी, सरकार के खर्चों में निरंतर बढ़ोतरी होती रही। धन की बढ़ती आवश्यकता ने सम्राट को कर बढ़ाने की नीति अपनाने के लिए विवश किया और सिक्कों में मिलावट करने के कारणवश मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिला। साम्राज्य पर जर्मेनिक जनजातियों द्वारा लगातार आक्रमणों के कारण यह स्थिति और भी दयनीय हो गई। आंतरिक राजनैतिक अस्थिरता और जर्मेनिक जनजातियों द्वारा खूंखार आक्रमणों ने मिलकर इस क्षेत्र में अन्य समस्याओं को बढ़ा दिया। युद्ध और महामारियों द्वारा हुए विनाश से आगे चलकर जनसंख्या में कमी और कमज़ोरी आई। भूमि वीरान हो गई थी और कृषि उत्पादन में तेज़ी से गिरावट आई। गॉल में, शोषित जनसमुदाय का आक्रोश ग्रामीण विद्रोह (जिसे बकॉड कहा जाता है) के रूप में बड़े स्तर पर फूट पड़ा और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे साम्राज्य का जल्द ही विनाश हो जाएगा।

बर्बर आक्रमणों ने आर्थिक संकट को और बढ़ा दिया जिसके करणवश सेना में आमूल परिवर्तन हुए। मुद्रास्फीति ने शासक कोमोडस को सैनिकों के वेतन बढ़ाने के लिए विवश किया और सेवेरन शासकों (रोम का एक शाही राजवंश) को बढ़ती हुई कीमतों की बराबरी के लिए इसे दुगुना करना पड़ा। इसने बजट को 25 प्रतिशत तक बढ़ा दिया। आय बढ़ाने के लिए शासकों ने नए करों का सहारा लिया और सिक्कों में मिलावट की। सेना में पुरुषों को आकर्षित करने के लिए अनुशासन में ढील दी गई और सैनिक सेवा सामाजिक उन्नति का जरिया बन गई।

जैसे ही शासकों का ध्यान सीमा सुरक्षा की ओर अधिक हुआ, वे आंतरिक व्यवस्था को बनाए रखने में विफल होने लगे। सिक्कों में मिलावट और मुद्रास्फीति की भांति समुद्री डकैती, लूटमार और सड़कों और बंदरगाहों की अनदेखी ने व्यापार को हानि पहुंचाई। छोटे शिल्पकार और कारीगर सुरक्षा और रोज़गार की तलाश में धीरे-धीरे शहरों से बड़े भूस्वामियों की जागीरों की ओर जाने लगे थे, जबकि आधिकारिक आदेशानुसार इस प्रकार के प्रवास पर पाबंदी लगा दी गई थी। इस दौरान साम्राज्य के ज्यादातर प्रांतों में व्यापार और उद्योग का तेज़ी से पतन हुआ और अनेक शहर नष्ट और विलुप्त हो गए।

2.2.4 दास अर्थव्यवस्था का पतन और कोलोनेट (Colonate) व्यवस्था का उदय

पेरी एन्डरसन के अनुसार, यह संकट जिसकी अभिव्यक्ति ग्रामीण क्षेत्र में हुई थी, उसका अंतिम हल स्वयं इसके द्वारा ही उजागर हुआ जिसने उत्पादन की एक पूर्णतः नई पद्धति के लिए मार्ग प्रशस्त किया। स्वामियों ने प्रत्यक्ष रूप से अपने अनेक दासों का पालन-पोषण करना बंद कर दिया था। इसके बजाए उन्होंने इन्हें भूमि के छोटे भूखण्ड देकर स्वयं अपनी देखभाल करने और अपने स्वामियों को अधिशेष उपज का भुगतान करने के लिए स्थापित किया। उसी दौरान, छोटे कृषकों वाले गांवों और स्वतंत्र पट्टेदार बड़े भूस्वामियों के 'संरक्षण' में आ गए जो राज्य द्वारा थोपे गये वित्तीय करों और अनिवार्य सैनिक भर्ती के विरूद्ध सुरक्षा की तलाश कर रहे थे, और अंततः उनकी आर्थिक स्थिति भूतपूर्व दासों के समान हो गई थी। इस प्रकार, आर्थिक दबाव ने अनेक निचले वर्ग के सदस्यों को '**कोलोनी**' (पट्टेधारी कृषक) बनने पर मज़बूर कर दिया और बाद में धीरे-धीरे कोलोनी ने दासों का स्थान ले लिया तथा कृषि श्रमिकों में परिवर्तित हो गए। 'कोलोनी' पट्टे पर कृषि करने वाले आश्रित कृषक होते थे जो अपने भूस्वामी की भूमि से बंधे होते थे और उन्हें नकद या भूमि के टुकड़े, या उस पर साझा फसल बटवारे के आधार पर भुगतान करते थे। 'कोलोनस' ('कोलोनी' का बहुवचन) सामान्यतः अपने भूखण्ड की फसल का आधा हिस्सा ही प्राप्त कर पाते थे। इस प्रकार, कोलोनेट व्यवस्था की स्थापना से दास प्रथा के आर्थिक महत्व में गिरावट आई, परंतु यह पूर्णतः समाप्त नहीं हुई। दास प्रथा शाही राजघरानों में बची रही और रोमन साम्राज्य के पतन के बाद भी अस्तित्व में रही।

चौथी और पांचवी शताब्दियों सी ई में पश्चिम में साम्राज्य का पतन और अधिक तेज़ी से हुआ। केन्द्र ने धीरे-धीरे उच्च वर्ग के सदस्यों पर अपना नियंत्रण खो दिया और वे ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर निर्भर श्रमिकों के बड़े वर्ग पर अधिकार रखने लगे। वे अपने किलेबंद भू-क्षेत्र (estates) में रहने लगे जिन्हें विला कहा जाता था, जहां कृषक अक्सर बर्बर आक्रमणकारियों और राजस्व एकत्रित करने वाले शाही अफसरों दोनों से ही सुरक्षा तलाश करते थे। वे अमीर भूस्वामियों के शिकार हो गए और उनकी भूसंपत्ति के बंधक बन गए। पांचवी शताब्दी तक पश्चिमी साम्राज्य ग्रामीण अभिजात वर्ग से संबंधित अलग-अलग भूखंडों (estates) में विखंडित हो गया जिनका निर्भर कृषकों के बड़े वर्ग, यानी 'कोलोनी', पर आधिपत्य था। केंद्रीय प्रशासन ने धीरे-धीरे साम्राज्य की जनता को व्यवस्था और सुरक्षा प्रदान करने की योग्यता खो दी। व्यापार और संचार का पतन हो गया और प्रादेशिक क्षेत्र तेजी से आत्मनिर्भर हो गए।

बोध प्रश्न-1

1.) *लैटिफंडिया* के उदय के कारण रोमन कृषि अर्थव्यवस्था में क्या परिवर्तन हुआ?

....

....

....

....

....

2.) रोम में दास प्रथा को बढ़ावा देने वाले कारकों का विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

....

3.) रोमन साम्राज्य के दौरान दास अर्थव्यवस्था में संकट लाने वाले कारकों पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

4.) युद्धों के प्रसार के कारण रोमन समाज में क्या परिवर्तन आया?

....

....

....

....

....

5.) कोलोनेट व्यवस्था से क्या तात्पर्य है? इसने किस प्रकार ग्रामीण अभिजात वर्ग को शक्तिशाली और समृद्ध बनाया?

....

....

....

....

....

2.3 सामाजिक संरचना

रोमन सामाजिक संरचना अत्यधिक स्तरीकृत थी। समाज अनेक वर्गों में विभाजित था जिनके अपने अंतर्विरोध और आपस में संघर्ष थे। इस भाग में हम सामाजिक श्रेणियों और उनके आपसी संघर्षों के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

2.3.1 समाज का पारंपरिक विभाजन

रोमन परंपरा इस धारणा में एकमत है कि राजतंत्र के अधीन कुछ परिवारों के समूह जिन्हें *कुलीन वर्ग* (*पेट्रीशियंस; Patricians*) के नाम से जाना जाता था, ही उसका आधार था। ये भूस्वामी अभिजात वर्ग पादरियों, दण्डाधिकारियों, वकीलों और न्यायधीशों का कार्य करते थे। गरीब नागरिक या *निम्न वर्ग* (*प्लेबियंस; Plebeians*) कारीगर, व्यापारी, श्रमिक और छोटे-भू-धारक हुआ करते थे। गणतंत्र के आरंभिक वर्षों में कुलीन वर्ग ने राज्य की सत्ता पर

एकाधिकार और समुदाय के लगभग संपूर्ण संसाधनों पर अधिकार प्राप्त कर लिया था। स्त्रोतों के अनुसार दोनों समूहों के सदस्य पूर्ण नागरिक होते थे, जिनके पास हथियार धारण करने का दायित्व और आम सभा की सदस्यता भी थी। हालांकि, राजाओं (राजतंत्र) के निष्कासन के पश्चात्, निम्न वर्ग पूर्ण रूप से कुलीन वर्ग के अधीनस्थ हो गया जो समृद्ध थे और जिनका सार्वजनिक पदों पर ('Orders') एकाधिकार था।

2.3.2 'श्रेणियों' ('Orders') में संघर्ष

आरंभिक गणतंत्र आर्थिक कठिनाईयों का काल था जिसमें निचली श्रेणियों पर बहुत अधिक भार पड़ा और कुलीन वर्ग (Patrician) के विशेषधिकारों को लेकर भी उनमें असंतोष बढ़ा। इसी दौरान, कुछ निम्न श्रेणियों (बहुत अधिक गरीब नहीं) ने सैनिकों के रूप में योगदान दिया जिस पर सेना की सफलता निर्भर थी और इस तथ्य ने उन्हें मोल-भाव की शक्ति प्रदान की जिसका उपयोग करने में वे बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाए। जल्दी ही वहां निम्न वर्ग का आंदोलन शुरू हुआ जो कुलीन वर्ग के राज्य पर एकाधिकार और अमीरों द्वारा गरीबों के आर्थिक शोषण के प्रभाव को कम करने के लिए आरंभ हुआ था जिसे श्रेणियों के संघर्ष के नाम से जाना जाता है (पूर्ण जानकारी के लिए इस पाठ्यक्रम की **इकाई 1** का **भाग 1.5** देखें)।

गणतंत्र की स्थापना के बाद दो से अधिक शताब्दियों तक निम्न वर्ग ने राजनैतिक और सामाजिक समानता के लिए संघर्ष किया। उन्होंने धमकी दी कि यदि उनकी मांगों को पूरा नहीं किया गया तो वे खुद को शहरों से अलग कर लेंगे। लगभग उसी समय समृद्ध हुए निम्न वर्ग के व्यक्तियों ने 366 बी सी ई में दो में से एक काउँसलर के पद प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की, बल्कि 172 बी सी ई में पहली बार दोनों ही पद निम्न वर्ग को प्राप्त हो गए। आरंभिक पांचवी शताब्दी बी सी ई में गरीब निम्न वर्ग 'काउंसिलियम प्लेबिस' ('Concilium Plebis') संस्था को स्थापित करने में भी सफल हुए जिसे बाद में संवैधानिक निकाय के रूप में जाना गया जिसे जनजातीय सभा (Tribal Assembly; 287 बी सी ई) कहा गया, जिसमें उनके ही अधिकारियों की अध्यक्षता होती थी जिन्हे 'जननायक' (ट्रिब्यून; 'Tribunes') कहा जाता था। हालांकि, निम्न वर्ग का संगठन सामान्य रूप से रोमन राज्य से जुड़ा हुआ था और ये कभी भी कुलीनतंत्र के पतन का कारण नहीं था। गणतंत्र में अभिजात वर्ग की सर्वोच्चता कभी भी गंभीर रूप से विचलित नहीं हुई।

समय के साथ निम्न वर्ग ने अन्य मौलिक अधिकारों और अपनी सुरक्षा के तरीकों को प्राप्त कर लिया था। 'बारह टेबल्स के कानून' ('Law of Twelve Tables'; 450 बी सी ई) ने नागरिक कानून के संहिताकरण में मदद की, जिससे कुलीन वर्ग द्वारा न्यायिक प्राधिकार के मनमाने ढंग से प्रयोग में कमी आई। कुलीन और निम्न वर्ग के मध्य विवाह संबंध वैध हुए और 326 बी सी ई में एक कानून पारित किया गया जिसके अनुसार नागरिकों को ऋण (*नेक्सम; nexum*) के बदले दास बनाने की प्रथा को समाप्त कर दिया गया।

2.3.3 रोमन साम्राज्य का विकास और समाज में परिवर्तन

भूमध्यसागरीय जगत में रोम, नगर-राज्य से एक प्रबल शक्ति के रूप में चार सौ वर्षों (509-133 बी सी ई) से कम समय में विकसित हुआ जिसने विशिष्ट रूप से उसकी आर्थिक और सामाजिक संरचना को प्रभावित किया। रोमन विस्तार युद्धों ने सीनेटोरियल अभिजात वर्ग को शक्तिशाली और समृद्ध बनाया। लेकिन इसने छोटे भूमिधारक वर्ग को निरंतर कमज़ोर किया। कृषक भूमि सुधार आंदोलन का अंत ग्रैची बंधुओं के दमन के साथ ही हो गया (इस पाठ्यक्रम की **इकाई 1** का **भाग 1.6** देखें)। लेकिन अब उनकी मांगें सेवानिवृत सैनिकों (युद्ध में बचे सैनिक जो रोमन कृषक वर्ग में से भर्ती हुए थे) को भूमि आवंटन के प्रश्न पर केंद्रित

हो गई थीं। सीनेटोरिसल अभिजात वर्ग ने विजयी युद्धों से बहुत लाभ उठाया था लेकिन उन्होंने उस लाभ को सैनिकों के साथ बांटने से इन्कार कर दिया। सैनिकों ने अपने आर्थिक पुनर्वास के लिए अपने सफल सेनापतियों की ओर देखा। इस प्रकार सेनापतियों ने राजनीति में आगे बढ़ने के लिए अपनी सेनाओं का प्रयोग शुरू कर दिया।

निम्न वर्ग के सबसे निचले स्तर में अब भी संपत्तिहीन नागरिक (श्रमिक वर्ग; proletari class) सम्मिलित थे जिनमें कारीगर, श्रमिक और छोटे दुकानदार थे, चाहे वह दास, दास प्रथा से स्वतंत्र या स्वतंत्र जन्मे लोग थे। 538 बी सी ई में पहली बार निःशुल्क अनाज बांटा गया और शीघ्र ही यह रोमन राजनैतिक जीवन की स्थाई विशेषता बन गई। रोम के बड़े महानगरों में शक्तिशाली पुलिस व्यवस्था न होने के कारण शहरी भीड़ बड़ी ही आसानी से संकट के समय में दबाव बना सकती थी जिसने गणतंत्र के पतन में योगदान दिया।

गणतंत्र के अंतिम काल ने सेना में महत्वपूर्ण सुधार देखे। यह काल जो गंभीर राजनैतिक और सामाजिक संकटों का साक्षी था, पश्चिमी एशिया में महत्वपूर्ण सैन्य अभियानों का काल भी था। गणतंत्र के अंतिम वर्षों में शक्तिशाली सेनानायकों ने राज्य के नियंत्रण के लिए सत्ता प्राप्ति के संघर्षों और हिंसक विवादों में भाग लिया (**इकाई 1** का **भाग 1.7** देखें)।

2.3.4 प्रिन्सिपेट के अधीन सामाजिक स्तरीकरण

एक्टीयम में मार्क एंटोनी पर ऑक्टेवियन की विजय ने एक शताब्दी के लंबे गृह युद्ध का अंत कर दिया और रोम में गणतंत्र के मुखौटे के पीछे छिपे हुए राजतंत्र की स्थापना के द्वारा शांति स्थापित की। समाज ने भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे। पहला, सीनेट धीरे-धीरे धुंधली होकर परिप्रेक्ष्य में चली गई और घुड़सवार श्रेणी (equestrian orders) से एक नई नौकरशाही आई। राज्य का उत्तरोत्तर सैन्यीकरण हो गया। दूसरा, 'ऑनेस्टिओरिस' (सीनेटर, घुड़सवार श्रेणी) और निचले वर्गों के 'ह्युमिलिओर्स' दोनों के बीच में एक गहरी रेखा खिंच गई। 'ऑनेस्टिओरिस' ने कानूनी विशेषाधिकारों का लाभ उठायाः जिनमें अपराधों के लिए हल्की सज़ा का प्रावधान, उत्पीड़न से प्रतिरक्षा, और शासकों को अपील का अधिकार था। समय के साथ निचले क्रम से उच्च क्रम में जाना और अधिक कठिन हो गया। तीसरा, रोमन अभिजात वर्ग का केंद्रीय राजनैतिक सत्ता पर एकाधिकार खत्म हो गया और साम्राज्य में 'प्रांतीयकरण' की प्रवृत्ति बढ़ने लगी। प्रांतीय कुलीन वर्ग ने ऑगस्टस के सत्ता में आने का समर्थन किया और इन्हें महत्वपूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई जब अंततः प्रांतीय परिवारों से सीनेटर और शासकों को चुना जाने लगा। 212 सी ई तक साम्राज्य के लगभग प्रत्येक स्वतंत्र निवासी तक नागरिकता पहुंच चुकी थी। इस प्रकार, रोमन निवासियों ने प्रांतों के उच्च वर्गों को अपने ही प्रशासन में सम्मिलित कर लिया, रोमन कानून और संस्कृति का फैलाव किया और प्रभावशाली लोगों की निष्ठा को जीता।

कुलीन तंत्र (Aristocracy)

जिस समाज में बहुत से प्रांतीय लोगों ने रोमन नागरिकों के रूप में प्रवेश किया था वह समाज वर्ग और रुतबे से प्रभावित था। संपदा, सामाजिक स्तर और समाज में विशेषाधिकार संबंधी भारी असमानताएं थीं। गरीब आमतौर पर *निसुलाय* (*nisulae*, कई परिवारों के आवास के लिए एक अपार्टमेंट इमारत) में रहा करते थे; जबकि अमीर लोगों के पास प्रमुखतः भव्य *डोमस* (केवल एक परिवार के आवास के लिए घर) थे। उच्च वर्गों का शासन, समाज और धार्मिक संगठनों में विस्तृत प्रभाव था। यह प्रभाव 'क्लाइंटेला' गतिविधियों के द्वारा और बढ़ा जिसमें निम्न स्तर (*क्लाएंट; clients* मातहत) के व्यक्ति विशेष, व्यक्तिगत रूप से दूसरे सामाजिक रूप से सम्मानित व्यक्ति (*पेट्रन; patron*, मालिक) पर निर्भर थे, जो अपना मत देकर उन्हें राजनैतिक सहयोग देते थे अथवा उनके राजनैतिक सम्मेलनों में सम्मिलित होते

थे। इसके बदले में सम्मानित व्यक्ति, उदाहरण के लिए, न्यायालयों में अपने प्रभाव का उपयोग करके उनको लाभ पहुंचाता था जैसे ऋण या सुरक्षा प्रदान करके।

रोमन साम्राज्य के नगरों का रख-रखाव और राजनैतिक संचालन अभिजात वर्ग के हाथों में था। अपनी दानशीलता और उदारता के द्वारा इन स्थानीय अभिजातों ने अपने नगरों का निर्माण किया, उन्होंने अपनी भौतिक गतिविधियों को जारी रखा, अपनी साहित्यिक संस्कृति का संरक्षण किया और अपने मनोरंजन उपलब्ध कराये। इसके बदले, उनका सम्मान नगरों के 'शुभचिंतक' (benefactors) या 'संरक्षक' (patrons) के रूप में हुआ, जहां वे अत्यंत प्रभावशाली थे।

2.4 दास प्रथा और समाज

प्रिन्सिपेट और उत्तर रोमन साम्राज्य काल में रोमन समाज स्तरीकृत बना रहा। यह एक पिरामिड की तरह था जिसमें सबसे ऊपर सीनेटरों का छोटा कुलीन वर्ग और 'अश्वारोही' ('इक्विट्स') थे। पिरामिड के आधार पर दास प्रथा कायम थी। यहां तक कि दासों में भी श्रेणियां थीं। *विलिकस*, एक दास प्रबंधक / निरीक्षक था, जो स्वयं एक दास था जो भूस्वमियों की अनुपस्थिति में भूमिं की देख-रेख करता था। उसकी पत्नी घरेलू मामलों की निरीक्षक (*विलिका*) होती थी। गणतंत्र के अंत तक दासों की संख्या लगभग बीस लाख थी और इनकी संख्या साम्राज्यीय काल में भी काफी अधिक बनी रही। दास श्रम का उपयोग अनेक तरीकों से किया जाता था और रोमन जगत में मुख्य रूप से तीन प्रकार के दास होते थेः

i) घरेलू दास जो परिवार के साथ एक ही घर में रहते थे और उससे संबंधित सभी कार्य किया करते थे। लगभग प्रत्येक रोमन घर में कुछ से लेकर हज़ार तक दास हुआ करते थे। पहली शताब्दी सी ई में केलियस आईसोडोसस के पास 4116 दास थे। वास्तव में दास 'समाज में समृद्धि के दिखावे' का प्रतीक बन गए थे। व्यक्ति विशेष के पास दासों की संख्या कुछ हद तक समाज में उसकी प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गई, यहां तक कि कम समृद्ध जैसे सैनिक और युद्ध के दिग्गजों के पास भी कुछ संख्या में दास होते थे। समृद्ध घरों में बड़ी संख्या में घरेलू दास होते थे जो नर्स, रसोईया, माली, सफाई कर्मचारी आदि का काम करते थे, लेकिन अधिकतर घरेलू दास विभिन्न प्रकार के कार्य किया करते थे। घरेलू दासों में वर्गीकरण और विशेषीकरण था। प्रोक्यूरेटर (*procurator*) घर के बाहर व्यवसाय संभालता था; *एट्रीएंसिस* (*atriensis*) घर की देखभाल करता था; *डिस्पेंसेटर* (*dispensator*) आपूर्ति और भण्डार संभालता था; *साईलेनिएरियस* (*sileniarius*) दासों में अनुशासन बनाए रखता था।

ii) औद्योगिक दास खदानों, कारखानों, लंबी नावों (galleys) और विशाल भू-जागीरों पर कार्य करते थे जिन्हें *लैटिफंडिया* के नाम से जाना जाता था। ये अधिकतर सबसे कठोर परिस्थितियों में रहते थे और काम करते थे। *लैटिफंडिया* में काम करने वाले दासों की देख-रेख के लिए जो निरीक्षक होता था संभवतः वह भी एक दास होता था जो उनके साथ बहुत ही निर्दयी तरीके से व्यवहार करता था।

iii) सार्वजनिक दासों का स्वामी राज्य होता था और ये अनेक प्रकार के कार्य करते थे जैसे सड़कों और सार्वजनिक इमारतों का निर्माण करना या मंदिरों और स्नानाघरों की सफाई करना। जलसेतुओं (*क्यूरा एक्वारम; cura aquarum*) की देख-रेख का कार्य पूर्ण रूप से केवल सार्वजनिक दासों – 'सीज़र के दास' – द्वारा ही कराया जाता था। दासों को सार्वजनिक स्नानघरों में भी रखा जाता था जहां वे मालिश करने, तेल लगाने का कार्य, नाई (delapidators) और इत्र लगाने (perfumers) का कार्य किया करते थे। दावतों के समय ये रसोइये का कार्य करते थे और स्वामियों तथा अतिथियों को शानदार

भोजन परोसते थे। इनमें से अनेक दास तलवार चलाने वालों (gladiator) का काम किया करते थे। ग्लैडिएटर की उनकी यह भूमिका बहुत ही खतरनाक होती थी। जानवरों के शिकार के समय ग्लैडिएटरों को जानवरों के सामने चारे के रूप में भी डाल दिया जाता था। ये सेना का भी हिस्सा थे, नौसेना में सुबह जगाने वाले और सेना में सेना के अधिकारी के 'अर्दली' (बैटमैन) के रूप में।

रोमन कानून के अनुसार, दासों को उनके स्वामियों की संपत्ति समझा जाता था। एम. आई. फिनले (1980) के अनुसार, दास के स्वामी का अधिकार पूर्णरूप से इस तथ्य से निर्धारित होता था कि दास उस समाज के लिए बाहरी है जहां उसे दास के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। उसे सबसे प्राथमिक सामाजिक बंधन – रिश्ते-नातेदारी – से वंचित रखा गया था। यहां दास परिवार भी होते थे, परंतु यह विशेषाधिकार दास के स्वामी द्वारा दिया जाता था जो कि एकपक्षीय होता था और इसे एकपक्षीयता से समाप्त भी किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त, दास परिवार को बिक्री के द्वारा दूसरी जगह भेजा भी जा सकता था। दास अपने अपराधों के लिए शारीरिक रूप से जवाबदेह था।

दासों के साथ कैसा व्यवहार होता था?

एक दास के साथ किस प्रकार का व्यवहार होता था यह पूर्णरूप से उसकी परिस्थितियों पर निर्भर करता था। *लैटिफंडिया* और खदानों में काम करने वाले दास आमतौर पर बहुत ही दयनीय स्थिति में रहते थे और काम करते थे। गणतंत्र के दौरान स्वतंत्र नागरिकों और दासों में भेद करने के लिए कोई विशिष्ट चिह्न का प्रयोग नहीं किया जाता था। हालांकि, उत्तर रोमन साम्राज्य काल में कुछ मामलों में उनके गलों में पट्टों का प्रयोग दिखने को मिलता है; इसके साथ ही इन पर 'लम्बे बाल' रखने और 'खाल से बने कपड़ों' का प्रयोग करने पर प्रतिबंध था। ये तकनीकी रूप से 'विवाहित' नहीं हो सकते थे, हालांकि वह *कांट्रीबर्नियम* (*contribernium*, बिना कानूनी अधिकार के शारीरिक संबंध) में प्रवेश कर सकते थे। लेकिन कुछ प्रकार के कार्यों में, विशेषकर कुशल कार्यों में, उनका स्वामी उनके साथ अच्छा बर्ताव करता था और शायद उन्हें स्वयं का कार्य प्रारंभ करने में मदद करता था। लेकिन अंततः वह स्वामी ही था जो उनका भविष्य निर्धारित करता था। कुछ स्वामी अपने दासों के बीमार पड़ने पर उनकी देखभाल करते होंगे, लेकिन अन्य पारंपरिक तौर पर भूस्वामी, कैटो, की राय का पालन करते हुए बीमार दासों के राशन में कटौती, दासों की जुबान काटना या बूढ़े अथवा बीमार दासों को किसी बूढ़े (निर्बल) बैल, पुराने औज़ार और 'अन्य किसी भी अतिरिक्त चीज़' की तरह बेच देते होंगे।

परंतु अमीर स्वामियों के कुछ दास समृद्ध होते थे और यहां तक कि उनके स्वयं के दास भी थे। रोमन प्रिन्सिपेट के दौरान और उत्तर रोमन साम्राज्य के काल में दासता से मुक्त होने से पहले से ही शाही दास अपनी हालत सुधारने के लिए अच्छी स्थितियों में थे। फिनले (1980) ने सही कहा है कि पहली शताब्दी सी ई में शाही परिवारों के दासों को सामाजिक गतिशीलता के सबसे अच्छे अवसर प्राप्त थे।

रोमन साहित्य घरेलू दासों के साथ हुई क्रूरता के उदाहरणों से भरा हुआ है। एक रोमन लोकोक्ति थी कि 'सब दास शत्रु होते हैं'। दसियों हज़ारों दासों का खेतों और खदानों में व्यवस्थित ढंग से शोषण होता था। वह अपने स्वामियों की दया पर निर्भर होते थे। वह अतिश्रम के शिकार, उपेक्षित, अनदेखे, बाहर फेंके, मारे-पीटे और कत्ल किये जा सकते थे, उनके पास स्वयं को बचाने का कोई वास्तविक अवसर नहीं होता था।

स्वामी और दास दोनों की आपसी शत्रुता, जो निःसंदेह दासप्रथा द्वारा अनिवार्य रूप से उत्पन्न की गयी, सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों रूप से प्रदर्शित थी (कीथ हॉप्किंस)। 135 और 70

बी सी ई के बीच सिसिली और इटली में तीन प्रमुख दास आंदोलन हुए, जो कि संभवतः हज़ारों नए बनाए गए दासों के बंदीकरण और उपेक्षा से भड़के थे। पहला दास युद्ध (135-132 बी सी ई) रोमन गणतंत्र के विरोध में इयून्स (सीरिया मूल का) और क्लीओन के नेतृत्व में बाग़ान में कार्यरत दासों के विद्रोह के रूप में आरंभ हुआ। बागान दासों ने बागान-स्वामी डेमोफिलस की क्रूरता से हत्या कर दी। हालांकि, 132 बी सी ई में भारी सैन्य टुकड़ियों की तैनाती से इस विद्रोह को कुचल दिया गया। दूसरा दास युद्ध 104 बी सी ई में आरंभ हुआ जिसका नेतृत्व सल्वियस ने और उसकी मृत्यु के बाद एथिनियन ने किया था। यह संघर्षपूर्ण विद्रोह 102 बी सी ई तक चलता रहा। आखिरकार, राज्य की रक्षक सेना द्वारा इसे समर्थन मिला। तीनों विद्रोहों में 73-71 बी सी ई का ग्लेडिएटर दासों का विद्रोह सबसे गंभीर था जिसका नेतृत्व ग्लेडिएटरों के सेनापति स्पार्टकस ने किया था। इसका रोमन इतिहास पर गहरा प्रभाव रहा। पॉम्पे और क्रॉसस ने अपने राजनैतिक लाभ के लिए इसका फायदा उठाया। इसने रोमन गणतंत्र को रोमन साम्राज्य में परिवर्तित करने के बीज भी बोए। 70 बी सी ई के दास विद्रोह (स्पार्टक्स के नेतृत्व में) के बाद कोई बड़े स्तर का विद्रोह नहीं हुआ।

अधिकांश दास प्रतिरोध न तो खुले तौर पर विद्रोह थे और न ही उसमें कोई हत्या हुई। इसने संभवतः छल-कपट, धोखेबाज़ी, झूठ और निष्क्रियता का रूप धारण किया था।

दासत्वमुक्ति / स्वतंत्र दास

स्वतंत्र दासों की तीन प्रकार की श्रेणियां थीः *इंजेनस* (*ingenuus*), ये वे स्वतंत्र व्यक्ति होते थे जिन्हें दास नहीं बनाया जा सकता था; *लिबर्टिनस* (*libertinus*), वे दास जिन्हें **दासमुक्ति (manumission)** के तहत स्वतंत्रता मिली थी; और तीसरे वे जिन्होंने अपनी *'बचत'* (***पेक्यूलियम; 'peculium'***) से स्वतंत्रता खरीदी थी। हालांकि रोमन समाज अपनी प्रतिष्ठा के प्रति बहुत ही सचेत और वर्गीकृत था, परंतु यहां पर कभी-कभी आश्चर्यजनक रूप में सामाजिक गतिशीलता भी थी और इस सामाजिक गतिशीलता का प्रमुख मार्ग दासों को स्वतंत्र (दासमुक्ति) करना था। लगभग सभी दासों को जिन्हें उनके स्वामियों द्वारा मुक्त कर दिया गया था उन्हें रोमन नागरिकता प्राप्त हुई। जो दास धार्मिक मठ से जुड़ जाता था वह स्वतंत्र हो जाता था। हालांकि, इसमें सम्मिलित होने के लिए स्वामी की आज्ञा आवश्यक थी।

कीथ हॉप्किंस (1978) के अनुसार, प्राचीन दासप्रथा के इतिहासकारों ने सामान्यतः दासों की स्वतंत्रता का विवरण मानवता के दृष्टिकोण से किया हैः उन्होंने इसे कठोर व्यवस्था में एक नरम तत्व की तरह देखा है। यह सत्य है कि प्रत्येक दास के लिए स्वतंत्रता उसके स्वामी द्वारा उदारता का कार्य था। लेकिन जैसा कि हॉप्किंस द्वारा इस बात पर बल दिया गया है कि रोमन दास इस स्वतंत्रता के लिए लगातार काफी अच्छी मात्रा में रकम अदा करते थे। कुछ दासों द्वारा काम के वर्षों के दौरान उन्हें छोटी मात्रा में धन कमाने की अनुमति थी, यह 'बचत' ('*पेक्यूलियम*') ही थी जिससे वे अन्ततः अपनी स्वतंत्रता खरीद सकते थे। स्वामी अपनी समृद्धि और शक्ति के दिखावटी प्रतीक के लिए भी दासों को स्वतंत्र करते थे।

रोमन दासों के एक बार स्वतंत्र होने के बाद वह समाज के निचले तबके में घुल-मिल सकते थे। कुछ पूर्व-दासों ने काफी अधिक धन संपदा और सामाजिक ख्याति अर्जित की। प्रांतों में शासकों के पूर्व-दास कर एकत्रण के निरीक्षक के रूप में कार्य करते थे और शासकों के लिए सीनेटरी गवर्नरों की गतिविधियों पर नज़र रखते थे। निजी स्वामी स्वतंत्र दासों का व्यापारिक एजेंट, गुप्त सचिव आदि की तरह प्रयोग करते थे। अनेक कुशल कारीगर दासों ने स्वतंत्रता प्राप्त की और उनमें से कुछ ने अपने लिए भारी मात्रा में संपत्ति एकत्र की। लेकिन एक बार स्वतंत्र होने के पश्चात् भी दासों को अपने मूल कार्य के सामाजिक कलंक से बाहर निकलना होता था। उच्च वर्ग अक्सर स्वतंत्र दासों की समृद्धि का उपहास उड़ाते थे और उन्हें उपेक्षा की नज़र से देखते थे। यद्यपि इनका क्रोध अधिकतर उन स्वतंत्र दासों की ओर निर्देशित

होता था जो सचिव के तौर पर कार्य करते थे और जिन्होंने शासकों से अत्यधिक निकटता होने के कारण अपने लिए शक्ति, प्रभाव और लाभ प्राप्त किया था।

स्वतंत्र दास का उसके पुराने स्वामी से संबंध एक कानूनी अधिनियम द्वारा निर्धारित किया गया था। स्वामी संरक्षक की तरह होता था और स्वतंत्र दास आज्ञापालक था और विभिन्न प्रकार की सेवाओं के लिए उत्तरदायी था। और यदि दास अपना कार्य करने में असफल होता था तो कानूनी रूप से उसे दण्ड भुगतना होता था। इसके अतिरिक्त, स्वतंत्र दास सीनेटर और घुड़सवार श्रेणी (equites) में भर्ती नहीं हो सकते थे, और न ही वे उच्च वर्गों में विवाह कर सकते थे और न ही ***लीजन*** में अपनी सेवाएं दे सकते थे।

दास प्रथा रोमन सभ्यता के लिए इस हद तक अत्यावश्यक थी कि जब दासों की आपूर्ति कम (दूसरी शताब्दी सी ई के अंत में) हो गई तो अर्थव्यवस्था में संकट उभरने लगा। यह संकट राजनैतिक अस्थिरता और विदेशी आक्रमण दोनों के साथ एक साथ आ पड़ा। अंततः साम्राज्य का पश्चिम में पतन होना आरंभ हो गया।

2.5 रोमन कला और वास्तुकला

रोमन कला और वास्तुकला इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि उसने विश्व भर के कलात्मक स्वरूपों को प्रभावित किया।

वास्तुकला

मंदिर, बेसिलिका (basilicas), स्नानागार, नाट्यशालाएं और ऐम्फिथियेटर (गोलाकार इमारत जिसमें दर्शकों के बैठने की व्यवस्था हो) रोमन वास्तुकला के प्रमुख चिन्ह थे। रोम की विशालकाय महान् स्मारकीय वास्तुकला के अवशेष गणतंत्र की स्थापना (509 बी सी ई) के समय छठी शताब्दी बी सी ई से देखे जा सकते हैं। आरंभिक चरण में रोमन वास्तुकला ऐट्रूस्कन शैली – ट्रस्कन बरामदा और टेराकोटा अलंकरण – से अत्यधिक प्रभावित थी। रोम का कैपिटोल स्थित मंदिर काफी हद तक सिग्निया और वेई की ऐट्रूस्कन वास्तुकला के सादृश्य था। लेकिन, रोमन विस्तार, विशेषरूप से 200 बी सी ई से 50 सी ई तक रोम के यूनान के साथ नज़दीकी संबंधों के कारण रोमन वास्तुकला पर यूनानी वास्तुकला के प्रतिरूपों का बढ़ता प्रभाव दिखाई देता है। यह प्रभाव तीसरी शताब्दी बी सी ई में गैबी के मंदिर और अपोलो के पांपेई स्थित मंदिरों (120 बी सी ई), फॉर्चुना विरिलिस के मंदिर (40 बी सी ई) में देखने को मिलता है। ये सारी संरचनाएं हेलेनिस्टिक आंदोलन के गहरे प्रभाव को दर्शाती हैं। हालांकि, रोमन फोरम में स्थित के कांकॉर्द, कैस्टर और पॉलक्स के उत्तर ऑगस्टन मंदिर 'सीमित रूप में विस्तार और अत्यधिक विस्तृत स्थानीय अलंकरण की व्यवस्था की स्वतंत्रता और अलंकृत मोल्डिंग (mouldings) को दर्शाते हैं ('रोमन आर्किटेक्चर', 1965: 404)। रोमन अवधारणाओं का प्रयोग लौकिक वास्तुकला में अत्यधिक प्रत्यक्ष था – पांपेई (120 बी सी ई), ट्यूलिआनम (100 बी सी ई) और टेबुलेरियम (78 बी सी ई) में स्थित स्टेबियन स्नानागारों में रोमन मेहराबदार प्रकोष्ठ (vaulted spaces) की मौजूदगी। हालांकि अलंकरण में हेलेनिस्टिक शैली का प्रयोग किया गया था। इटली के बाहर रोमन प्रभाव को आर्लेस (Arles) और निमेस (Nimes) में स्थित नाट्यशालाओं और एम्फिथियेटरों (16 बी सी ई) में देखा जा सकता था। पहली शताब्दी सी ई से यूनानी मोटिफ (motifs; दृश्यकला) और अलंकरण और भी अधिक वैभवशाली और विस्तृत हुए जो कि कोलेसियम (75-82 सी ई) में प्रत्यक्षतः दिखाई देता है, जो ट्रेजन और हेड्रियन (लगभग 98-138 सी ई) के काल में अपने उत्कर्ष पर पंहुचा – फोरम ऑफ ट्रेजन और तिवोली में स्थित हेड्रियन की विला। फिर भी, प्रांतीय इमारतों ने 'महान् व्यक्तिगत विशेषता' को कायम रखा। 200 सी ई से लेकर कॉस्टेंटाइन के काल तक इमारतों पर 'भौतिक पदार्थ' से अधिक 'भव्यता' पर बल दिया गया। 'दूसरी शताब्दी सी ई के अंत

से पहले से ही तीव्र विषम प्रकाश और प्रतिबिंब के साथ की गई गहरी कटाई ने नक्काशीदार अलंकरण की ठोस शैली की छाप को कम कर दिया' ('रोमन आर्किटेक्चर', 1965: 405)। प्रकाश और प्रतिबिंब का उत्कृष्टतम उदाहरण सेप्टिमियस सेवरस (लगभग 200 सी ई) की मेहराबों में देखने को मिलता है। डायोक्लेशियन के महल (लगभग 300 सी ई) में मेहराबदार कोलोनेड का व्यापक प्रयोग किया गया था।

चित्र 2.1: फ्रांस के निमेस में स्थित रोमन मंदिर
साभार: दानीचाउ, जनवरी, 2011; वाटरबरो, जून, 2019
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/1/10/MaisonCarr%C3%A9e.jpeg

सबसे पहले प्रयोग में आने वाली इमारती सामग्री *तूफ़ा* थी, जो कि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध एक आग्नेय शिला (ज्वालामुखी से प्राप्त पत्थर) थी। इस आग्नेय शिला के अपेक्षाकृत कम कठोर होने के कारण इस पर कांस्य के उपकरणों से काम करना आसान था। हालांकि, बाद में अल्बान पहाड़ी से लाए गए सख़्त आग्नेय पत्थरों का प्रयोग किया गया। उत्तर गणतंत्र काल में तिबुर (तिवोली) से लाया गया चूना पत्थर (ट्रेवरटाइन; travertine) इमारतों में प्रयोग होने वाला मुख्य पत्थर था (विशेष रूप से कोलेसियम के बाहरी भाग में)। संगमरमर का प्रयोग प्रमुखतः अलंकरण के लिए किया जाता था। पैलेटाइन पर स्थित फ्लावियन महल और तिवोली में स्थित हेड्रियन की विला में संगमरमर का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया गया था। कांस्य का अत्यधिक प्रयोग दरवाज़ों, ग्रिल और पट्टिकाओं (panels) की कटाई में किया गया था। पॉज़ुओलाना (उत्कृष्ट चॉकलेटी लाल आग्नेय मिट्टी), जो पॉज़ुओली (नेपल्स) के नदीतल में बड़ी मात्रा में उपलब्ध थी, चूने के साथ मिश्रित होने पर यह उत्कृष्ट 'प्राकृतिक गारा' (natural hydraulic cementing) उपलबध कराती थी ('रोमन आर्किटेक्चर', 1965: 405)। आरंभिक पत्थर की इमारतों में 'खड़े और आड़े' (headers and stretchers; *opus quadratum*) विधि द्वारा चुनाई किए गए वर्गाकार पत्थर के टुकड़ों का प्रयोग किया गया था। रोमन वास्तुकला की एक और प्रमुख विशेषता पत्थर के स्तंभ और खंबे थे, जो प्रायः एकाश्म (monolithic) थे। पहली शताब्दी बी सी ई तक बैरल महराबों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाने लगा था। रोमन मेहराबों का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण मैक्सेंटियस की बेसिलिका (लगभग 310-320 सी ई) में देखा जा सकता है।

रोमन **बैसिलिका (basilicas)** आवृत (covered) हॉल थे जिनका प्रयोग न्यायालय की तरह किया जाता था और जो बैंकिंग और वाणिज्यिक लेन-देन के स्थान भी थे। इनमें से प्रमुख थे बैसिलिका जूलिया और बैसिलिका एमिलिओन, जो रोम में फोरम के उत्तर और दक्षिणी क्षेत्र में स्थित थे। **रोमन स्नानागार** विश्वभर में रोमन जीवलशैली के प्रमुख चिन्हिक माने जाते हैं। केवल रोम में ही इनकी संख्या एक हज़ार थी। इनमें से सबसे अच्छी तरह से संरक्षित स्नानागार पांपेई में स्थित स्टैबियन स्नानागार है। रोमन समाज का एक और चिन्हिक उसकी नाट्यशालायें और एम्फिथियेटर हैं। इनमें से कुछ प्रमुख नाट्यशालायें जैसे कि पांपेई, सिसिली में स्थित तॉओरमिना, इटली में स्थित ओस्तिया और फ्रांस में ऑरेंज आज भी अस्तित्व में हैं। हालांकि रोम की सर्वाधिक उत्कृष्ट इमारत रोमन रंगभूमि (एम्फिथियेटरों) – कोलोसियम है जिसका निर्माण वेस्पेसियन, टाईटस और डोमिशियन शासकों द्वारा 72-80 सी ई में करवाया गया था। कुछ अन्य महत्वपूर्ण रंगभूमि (एम्फिथियेटर) कैपुआ, पांपेई, पोजुओली, आर्लेस और निमेस में स्थित हैं।

रोमन वास्तुकला की एक और महत्वपूर्ण विशेषता **स्तम्भावलीयुक्त पथ (colonnaded avenues)** थे जो अक्सर अलंकृत मेहराबों से विभूषित हुआ करते थे जैसा कि रोम में स्थित सैप्टिमियस सैवरस की मेहराबें। **फोरम**, वह स्थान जहां पर महत्वपूर्ण कारोबार किया जाता था, रोमन जीवनशैली का एक और महत्वपूर्ण चिह्न था। ट्रेजन का फोरम रोमन साम्राज्य का सबसे अधिक चित्ताकर्षक फोरम था।

सेतु और कृत्रिम जलमार्ग को सही मायनों में रोम के महान्तम स्मारकों के रूप में उल्लिखित किया जा सकता है। रोमन अपने कृत्रिम जलमार्गों में यंत्र पंप (siphon conduits) के सिद्धांत का प्रयोग किया करते थे। सर्वाधिक प्रख्यात रोमन कृत्रिम जलमार्ग निमेस में स्थित पांट ड्यू गार्ड और स्पेन में स्थित तरागोना और सेगोविया हैं।

रोमन कला

रोमन कला रूप अपनी शक्ति दो स्रोतों से प्राप्त करते थे – पहला, जो रोम और उसके आस-पास बनाए गए और दूसरे, वे जो यूनानी कलाकारों और यूनानी प्रभाव में सृजित और 'विदेशी संपर्कों के प्रभाव का दर्पण' थे। रोमन सिक्के यूनानी कलाकारों की कलाकृति थे। सही कहा गया है कि, 'यह अनुमान लगाना गलत नहीं होगा कि अगर रोम इनसे [कलाकारों] यूनानी कला की मातृभूमि में मिला नहीं होता तो उसकी (रोम की) कला, साम्राज्य काल की महान् कला के रूप में कभी विकसित नहीं हुई होती... रोमन कला दो परंपराओं के मेल-जोल से उभरी – पहली, हेलेनिस्टिक कला परंपरा और खासतौर पर उस परंपरा की मूर्तिकला शाखा, और दूसरी रोम की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और मनोवैज्ञानिक परंपरा' ('रोमन आर्ट', 1965ः 413)। इन तीन कला रूपों में जो रोमन भावना को सबसे भावपूर्ण तरह से व्यक्त करते हैं, का पहला प्रतीक हेलेनिस्टिक काल में खोजा जा सकता है। यह कला रूप सजीव या यथार्थवादी चित्रांकन हैं, जिसमें हर एक रेखा, सलवट और शिकन, और यहां तक कि ज़रा सा दाग भी बेबाकी के साथ अभिलेखित था; कथनात्मक कला के सभी प्रकारों में लगातार या ''चलचित्र'' के अंदाज में कथन; और नक्काशी और चित्रकारी में प्रकृति, गहराई और परिप्रेक्ष्य का त्रि-आयामी प्रतिपादन किया जाता था' ('रोमन आर्ट', 1965ः 413)।

हालांकि रोमन कला पर हेलेनिस्टिक प्रभाव पूर्णतः प्रभावी था, फिर भी बदले में रोमन संरक्षणत्व में हेलेनिस्टिक कला ने नयी ऊंचाइयों को छुआ और 'नवीन जोश हासिल किया' ('रोमन आर्ट', 1965ः 412)। आरंभिक गणतंत्र के कलात्मक रूप ज्यादातर ऐट्रूस्कनों के जरिये पूरी तरह से यूनानी कलाकारों द्वारा निर्मित थे – छठी शताब्दी बी सी ई में ईष्टदेव की एक प्रतिमा को वेई के वल्का की कृति माना जाता है। एथेंस के मेट्रोडोरस को ऐमिलियस पॉलस द्वारा रोम में उसकी मेसिडोनियन विजय का चित्रण करने के लिए नियुक्त किया गया

था। हालांकि पांचवी से तीसरी शताब्दी बी सी ई में रोमन अभियानों और सफलताओं के बाद मध्यस्थों के तौर पर ऐट्रूस्कन प्रभाव धीरे-धीरे लुप्त होता गया और रोमवासी केम्पेनिया और मेगना ग्रेशिया द्वारा सीधे यूनान के संपर्क में आए।

दूसरी शताब्दी बी सी ई में रोमन **मूर्तिकला** की प्रथा रोमन और ऐट्रूस्कनों द्वारा अंतिम-संस्कार के लिए बनाए गए मोम और टेराकोटा (पकी हुई मिट्टी) के मुखौटों में खोजी जा सकती है। लगभग 100 बी सी ई तक हमें रोमनों द्वारा कांस्य, पत्थर और संगमरमर से बनी 'सजीव और यथार्थ शीर्ष प्रतिमाएं (Head) आवक्ष मूर्तियां (busts; धड़) और प्रतिमाएं' मिलती हैं। इस प्रकार का पहला ऐसा साक्ष्य सूला के काल (138-78 बी सी ई) से प्राप्त होता है जो लगभग 75-65 बी सी ई में अपनी चरम सीमा पर पहुंचा। ऐसी प्रतिमाओं का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण आगस्टस और एरा पेसस आगस्टाय (13 बी सी ई) के नक्काशीदार पैनल हैं। आवक्ष मूर्तियों में गहराई उत्तर फ्लेवियन काल में दिखाई देती है, जो ट्रेजन की प्रतिमाओं के साथ और भी गहन हुई। यह गहराई हेड्रियन के काल में और भी गहन हुई। कैपिटोल में स्थित मार्कस ऑरेलियस की कांस्य की घुड़सवार आकृति और कोमोडस हरक्यूलिस की संगमरमर की प्रतिमा रोमन एन्टोनाइन और सेवेरन काल की मूर्तिकला के बेहतरीन उदाहरण हैं। इस काल की एक और महत्वपूर्ण विशेषता विशद् रूप से नक्काशीयुक्त ताबूत (sarcophagi; पत्थर के अंतिम-संस्कार बॉक्स जो आमतौर पर भूमि के ऊपर प्रदर्शित होते हैं) हैं। यह कला एशिया माइनर में जन्मी एक ऐसी कला थी जिसका सीधा आयात रोम और इटली में हुआ और स्वतंत्र रूप से इसका अनुसरण किया गया। हालांकि, तीसरी और चौथी शताब्दी सी ई तक, कला के इन रूपों में निश्चित तनाव देखने को मिलते हैं। चेहरे के विन्यास का सरलीकरण और ढलकते हुए घूंघराले बालों का त्याग और उसके स्थान पर हैट (टोपी; Headgear) के चित्रण का मार्ग प्रशस्त किया।

पहली शताब्दी बी सी ई के उत्तरार्ध से घरेलू भित्ति चित्रण की श्रृंखला दिखाई देने लगती है। इनमें सर्वाधिक उत्कृष्ट चित्रण एस्क्युलाइन हिल पर स्थित वेटिकन हॉउस के ओडीसी भित्तिचित्रों में पाई जाती है। इसमें घटनाक्रम को निरंतरता में दर्शाया गया है। एक और प्रख्यात विशालकाय फ्रीज़ (friezes; इमारत के उर्ध्व-खंड में की गई नक्काशी) पांपेई के हरक्यूलेनियम दरवाज़े के बाहर स्थित मिस्ट्री (रहस्यमयी) विला की दीवारों और रोम में नीरो के गोल्डन हाउस पर पाई गई हैं। इन चित्रणों की विषयवस्तु सामान्यतः यूनानी पौराणिक कथाओं से, और कुछ धार्मिक अनुष्ठानों और रोमन किंवदंतियों से ली गई थीं। उत्तर गणतंत्र और आरंभिक साम्राज्यीय भित्तिचित्र 'आश्चर्यजनक रूप से सजीव और अत्यंत यथार्थ' हैं ('रोमन आर्ट', 1965: 417)।

रोमन कला की एक और महत्वपूर्ण विशेषता उसके मोज़ेक फुटपाथ थे। रोमनों ने मोज़ेक की तीन तकनीकें अपनाई: *ओपस टेसेलेटम*[1]: इस मोज़ेक तकनीक में ज्यादातर ज्यामितीय रचनाएं प्रस्तुत की जाती थीं। *ओपस सेक्टाइल*[2]: इस तकनीक के द्वारा अक्सर अपेक्षाकृत बड़े *टेसेराय* (*tesserae*) का प्रयोग कर अमूर्त और शैलीगत बेल-बूटेदार पैटर्नस बनाए जाते थे। *ओपस वरमिक्यूलेटम*[3]: इस तकनीक में छोटे *टेसेराय* (*tesserae*) का प्रयोग कर बेल-बूटेदार रचनाएं बनाई जाती थीं। रोमन मोज़ेक उत्तर हेलेनिस्टिक काल के पेरगामन में स्थित अटालिड्स के शाही महल के मोज़ेक से प्रत्यक्ष रूप से प्रेरित थे। दूसरी शताब्दी बी सी ई में पांपेई में स्थित हॉउस आफ फॉन में सिकंदर का मोज़ेक (नेपल्स) सबसे प्रख्यात रोमन

---

[1] वह मोज़ेक तकनीक जिसमें समरूप *टेसेराय* (*tesserae*; छोटे क्यूब) का प्रयोग किया जाता था।

[2] वह मोज़ेक तकनीक जिसमें *ओपस टेसेलेटम* में प्रयुक्त क्यूब की तुलना में अधिक बड़े *टेसेराय* का प्रयोग किया जाता था।

[3] वह मोज़ेक तकनीक जिसमें *ओपस टेसेलेटम* में प्रयुक्त क्यूब की अपेक्षा छोटे *टेसेराय* (*tesserae*; छोटे क्यूब) का प्रयोग किया जाता था।

मोज़ेकों में से एक है। चौथी शताब्दी के पियाज़ा आरमेरिना, सिसली में स्थित कंट्री विला अब तक के प्राप्त सबसे बड़े अखंडित श्रृंखलाबद्ध रोमन घरों के मोज़ेक फर्श हैं। चित्रकला की तरह इन मोज़ेकों की विषयवस्तु भी ज्यादातर यूनानी पौराणिक कथाएं और रोमन किंवदंतियों से व्युत्पन्न थी।

चित्र 2.2: ओपस टेसेलेटम पच्चीकारी तीसरी शताब्दी सी ई
साभारः जेस्ट्रो, अक्टूबर, 2006;
स्रोत फोटोग्राफरः मेरी.लेन गुयेन
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/2/23/Mosaic_ducks_Massimo.jpg

चित्र 2.3: बाघिनी एक बछड़े पर आक्रमण करते हुए, संगमरमर ओपस सेक्टाइल (325-350 सी ई), जूनियस बासुस की बैसिलिका, एस्क्यिुलाइन पहाड़ी, रोम
साभारः जेस्ट्रो, नवंबर, 2006
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/9/90/Tiger_calf_Musei_Capitolini_MC1222.jpg

चित्र 2.4: *ओपस वरमिक्यूलेटम* फर्श पच्चीकारी, बिल्ली और दो बतख, पहली शताब्दी बी सी ई के प्रथम चौथाई
साभारः जेस्ट्रो, दिसंबर, 2009;
स्रोत फोटोग्राफरः मेरी-लेन गुयेन
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/d4/Mosaic_cat_ducks_Massimo_Inv124137.jpgcks/k iz'u&2

बोध प्रश्न-2

1) रोमन वास्तुकला पर पांच पंक्तियां लिखिए।

....
....
....
....
....

2) क्या आप इस बात से सहमत हैं कि रोमन कला लगभग पूरी तरह से यूनानी कला रूपों को दर्शाती थी?

....
....
....
....
....

3) निम्नलिखित में से कौन से कथन सही या गलत हैं? सही के आगे (**सही**) अथवा गलत के आगे (**गलत**) लिखेंः

क) रोम में ग्राम्य क्षेत्र के दास श्रमिक शहरों में रहने वाले भूस्वामी वर्ग को समृद्धि और आराम उपलब्ध कराते थे। (**सही / गलत**)

ख) प्रिंसिपेट काल में कृषि में गिरावट आई, वहीं व्यापार और उद्योग को झटका लगा था। (**सही / गलत**)

ग) सम्राट ट्रेजन के पश्चात् आक्रमण करने और विजय की नीति को त्याग देने अथवा 'सीमाओं को बंद करने' से रोम में दासों की आपूर्ति में तेज़ी से गिरावट आई। (**सही / गलत**)

घ) ऑगस्टस के सत्ता में आने के बाद और उसके द्वारा सुधारों का एक सिलसिला शुरू होने के पश्चात् भी, सीनेटरी अभिजात वर्ग पहले की ही तरह केंद्रीय शक्ति का आनंद लेता रहा। (**सही / गलत**)

च) रोमन जगत में 'क्लाइंटेला' के प्रचलन ने आगे चलकर निम्न वर्ग (Plebeians) के ऊपर उच्च वर्गों की शक्ति को और अधिक बढ़ावा दिया। (**सही / गलत**)

2.6 सारांश

रोमन समाज पूर्णरूप से दासप्रथा पर आश्रित था। उनकी राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज व्यावहारिक रूप से दासों और उत्पादन की दास पद्धति द्वारा शासित था। यद्यपि, तीसरी शताब्दी बी सी ई से पूर्व यह कुछ हद तक केवल अत्यधिक धनी वर्ग के बीच सीमित रह गया था जो दासों को रखने में समर्थ थे। तीसरी शताब्दी बी सी ई के बाद, युद्ध बंदियों और रोमन जगत के विस्तार ने दासों की उपलब्धता को आसान बना दिया और दास प्रथा तीव्र गति से फैली। हालांकि, उत्पादन की दास पद्धति पर आधारित समाज में शोषण व्याप्त था, दास मुक्ति (manumission) के प्रावधान और यह तथ्य कि दास 'संपत्ति' रख सकते थे, ने कुछ दासों को अपनी स्थिति में सुधार लाने में मदद की और वह स्वतंत्र नागरिक बन सके। यद्यपि, दास समाज की प्रकृति पूर्णरूप से शोषक थी, तुच्छ कार्य करने के अलावा दासों में से अक्सर शिक्षित थे और वे शिक्षक के रूप में भी कार्य करते थे। जबकि, कुछ अन्य दास राज्य के विभागों में लिपिक, मुंशी आदि के पद पर नियुक्त किये जाते थे। 135 बी सी ई से दासों में असंतोष के संकेत देखने को मिलते हैं जब सिसिली में बागान-दासों द्वारा विद्रोह किया गया। अंत में उनके संघर्ष की विजय हुई और साम्राज्य की स्थापना के साथ उन्हें स्वतंत्रता प्राप्त हुई, और उत्पादन की दास पद्धति या दास आधारित उत्पादन व्यवस्था क्रमशः समाप्त हुई।

2.7 शब्दावली

कोलोनी : पट्टेदार-कृषक जो अपने भूस्वामियों की भूमि से बंधे होते थे और जिन्हें उत्पादन में से नकद या वस्तु रूप में अपने स्वामियों को मेहनताना देना होता था।

स्वतंत्र दास : वह दास जिसे स्वतंत्र कर दिया गया हो और जिसे नागरिकता प्राप्त हो।

लीजन : रोमन सेना में बड़ी संख्या में शामिल सैनिकों तथा घुड़सवारों की एक इकाई

दासमुक्ति (manumission) : दास को स्वतंत्र करने की प्रक्रिया

***पेक्युलियम* / निजी सम्पत्ति** : ऐसी व्यवस्था जिसमें दासों को कुछ धन कमाने की अनुमति दी जाती थी जिससे वे अपनी स्वतंत्रता खरीद सकते थे

सर्वस : दासों के लिए प्रयुक्त शब्द

विला : किलेबंद भूसंपत्ति जहां भूस्वामी वर्ग रहा करते थे और किसान यहां भ्रष्ट अधिकारियों और बर्बर आक्रमणकारियों से अपनी सुरक्षा के लिए आते थे

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) उप-भाग 2.2 देखें

2) उप-भाग 2.2.1; 2.2.2 देखें

3) उप-भाग 2.2.3 देखें

4) उप-भाग 2.2.2 देखें

5) उप-भाग 2.2.4 देखें

बोध प्रश्न-2

1) भाग 2.5 देखें

2) भाग 2.5 देखें

3) क) सही; ख) गलत; ग) सही; घ) गलत; च) सही

2.9 संदर्भ ग्रंथ

ब्रंट, पी. ए., (1971) *सोशल कॉन्फलि्क्टस इन द रोमन रिपब्लिक* (लंदनः चाटो एवं विंडस).

डडले, डी., (1970) *रोमन सोसाइटी* (हार्डमन्ड्सवर्थः पैंगुइन बुक्स).

फिन्ले, एम. आई., (1980) *एंशियंट स्लेवरी एंड मॉडर्न आईडियोलोजी* (न्यूयॉर्कः वाइकिंग प्रेस).

हॉपकिन्स, कीथ, (1978) *कॉन्क्ररर्स एंड स्लेव्स,* भाग-1, *सोशियोलॉजिकल स्टडीज़ इन रोमन हिस्ट्री* (न्यूयार्कः कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस).

'रोमन आर्किटेक्चर' (1965) *एनसाईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका,* भाग-19 (शिकागोः विलियम बेनटन), पृ. 403-412.

'रोमन आर्ट' (1965) *एनसाईक्लोपिडिया ब्रिटेनिका,* भाग-19 (शिकागोः विलियम बेनटन), पृ. 412-421.

2.10 शैक्षणिक वीडियो

रोमन सोसाइटी एंड पॉलिटिकल स्ट्रक्वरः हिस्ट्री वीडियोज़

https://www.youtube.com/watch?v=3B5pGiWptb4

इकाई 3 रोमन जगत में धर्म और ईसाई मत का उदय*

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

रोमन सभ्यता प्रथम स्हस्त्राब्दी बी सी ई की आरम्भिक शताब्दियों के दौरान उभरी, और जैसे-जैसे पूरे भूमध्य-सागर क्षेत्र में इसका विस्तार हुआ यह उन समाजों के पंथों और सम्प्रदायों (जिन्हें आज हम आमतौर पर धर्म कहते हैं), को आत्मसात करने लगी जिससे उसका सामना हुआ। अन्य सभ्यताओं की तरह इस अवधि में रोमन रोजमर्रा की दिनचर्या की लय से जुड़ी धार्मिक प्रथाओं ने सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति की। रोमन प्राधिकारियों ने राज्य के गठन और सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया में धार्मिक पंथों और व्यवहारों के प्रति संरक्षण और दमन, दोनों तरह का व्यवहार किया। जैसा कि रोमन प्रशासन का स्वरूप बाद में पहली स्हस्त्राब्दी बी सी ई में गणतन्त्रवाद और सीमित राजतन्त्र से निरकुंशता के स्वरूप में परिवर्तित हुआ (सीजरों द्वारा शासित साम्राज्य) और जैसे-जैसे रोमन शासन की सीमाओं का इटालियन प्रायद्वीप के पार विस्तार हुआ, कई नवीन धर्मों का उदय हुआ और अन्य धर्म अपनी उत्पत्ति के स्थान से भी दूर क्षेत्रों में फैले। नये धर्मों में से ईसाई धर्म को 300 सी ई के बाद रोमन जगत में विशेषाधिकार की स्थिति प्राप्त हुई और यह उत्तर रोमन समाजों की (500 सी ई के बाद) शक्ति संरचनाओं में गहराई से अंतःस्थापित हो गया।

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप :

- रोमन जगत में धार्मिक व्यवहारों और परम्पराओं के बारे में जानेंगे,
- ईसाई धर्म के प्रसार के लिए उत्तरदायी कारकों की सूची बना सकेंगे;
- रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म के उदय से जुड़े घटनाक्रम को राजनीतिक संरचना से जोड़कर समझ सकेंगे, और
- प्रारंभिक ईसाई धर्म की विशेषताओं का आकलन कर सकेंगे और यह समझ सकेंगे कि

* प्रोफेसर डेनिस पी. लेटन, स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज, अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली

यह किस प्रकार उत्तर रोमन समाजों, विशेषरूप से यूरोप और बाइज़ेंटाइन साम्राज्य, में आगे फैल सका।

3.1 प्रस्तावना

जैसा कि हमने इस पाठ्यक्रम की पिछली इकाइयों में चर्चा की है, इटली में 'रोम' एक शहर के रूप में 800 बी सी ई के आसपास उभरा और एक छोटी सी राज्य-व्यवस्था की राजधानी बन गया। अगली पाँच शताब्दियों तक 'रोम' अपने शक्तिशाली पड़ोसी राज्योंः ग्रीक नगर-राज्यों (जिनमें से कुछ ने इटली प्रायद्वीप में उपनिवेश स्थापित किए थे), विशाल ईरानी साम्राज्य और भूमध्यसागर के उत्तरी, दक्षिणी और पश्चिमी किनारों के साथ विभिन्न कबीलाई राज्यों का कुछ ध्यान ही आकर्षित कर पाया। हालांकि आठ शताब्दियों के बाद 'रोम' का मतलब न केवल एक महान् शहर था बल्कि 6 करोड़ जनसंख्या का एक साम्राज्य था। (लगभग इस समय के चीनी केन्द्रीय साम्राज्य की जनसंख्या के समान) जिसका विस्तार पश्चिमी एशिया ('निकट पूर्व') उत्तरी अफ्रीका और महाद्वीप के एक बड़े भू-भाग, जिसे आज यूरोप कहा जाता है; तक था।

हालाँकि हम एक रोमन सांस्कृतिक प्रारूप का जानकारी प्राप्त कर सकते हैं – कुछ इतिहासकार और अन्य विद्वान रोमनता शब्द का इस्तेमाल करते हैं – लेकिन रोमन जगत में धर्म के अनेक रूप जो प्रचलित थे, अतः उनके बारे में सामान्यीकरण करना अधिक कठिन है। उस समय कई 'प्रमुख' धर्म जैसे ग्रीक प्रारूप में सर्वेश्वरवाद (विविध देवों की पूजा, 'सभी' देवी और देवताओं का पूजन, यहूदीवाद, मेनीकीइज़्म, 'रहस्यवादी धर्म' (जिसमें मिथराः देखें **भाग 3.4**), और संभवतः सौ से भी ज्यादा गौण पंथ और उपासना विधियाँ प्रचलित थीं। और फिर ईसाई धर्म था जो पहली शताब्दी सी ई के दौरान एक रोमन जुडेया पंथ के रूप में उभरा – जिसका निर्माण आंशिक रूप से सदियों पुरानी यहुदी आस्था परम्परा और कुछ इसके विरूद्ध विद्रोह के द्वारा हुआ। चौथी शताब्दी सी ई में ईसाई धर्म को पूरे रोमन साम्राज्य का राजकीय धर्म बना दिया गया। रोमन ईसाई नेताओं ने पोप (**लैटिन** भाषा से लिया गया शब्द *पापा* : पिता) की पदवी को धारण किया, जिसमें पोप लियो प्रथम (पाचँवी शताब्दी सी ई) भी शामिल थे – पोप ईसाई उपासकों के विश्व-व्यापी समुदाय का नेतृत्व करने के इच्छुक थे, भले ही उस समय ईसाई धर्म की कई प्रकार की शाखाएँ एशिया और अफ्रीका में फैली हुई थीं और उनके नेता हमेशा ही रोम शहर के पोप के वर्चस्व को स्वीकार नहीं करते थे। एक तर्क-संगत अनुमान के अनुसार लगभग 400 सी ई तक *पूरे विश्व के आधे से अधिक ईसाई रोमन साम्राज्य की सीमाओं से परे* दूरस्थ ईरान (ईरानी सासानिद साम्राज्य[1] ने रोमन शासन को चुनौती दी जो अब सीरिया, जॉर्डन और टर्की हैं), अरब, आमेनिया, जार्जिया, मध्य एशिया, उत्तरी अफ्रीका, इथियोपिया और शायद भारत तक में भी थे। फिर भी यह महत्वपूर्ण है कि रोम के शहर में, लियो प्रथम के समय से 'पोप', ने एक सर्वोच्च पादरी (Pontiff; लैटिन में, *पोंटिफेक्स मैक्सिमसः* राज्य धर्म के मुख्य पादरी) की पदवी धारण की, जो कि ईसाई धर्म के उद्भव से पहले ही, सदियों से रोमन शासकों द्वारा धारण की गई थी।

यहूदीवादः यहूदियों का एकेश्वरवादी धर्म जो कम से कम 15 बी सी ई से चलता चला आ रहा है। अपने मूल रूप में, यहूदीवाद मानता है कि ईश्वर (यहवेह) ने मूसा को, जो कि गुलाम बनाए हुए इजरायलियों के प्रमुख थे, अपने नियमों और ईश्वरीय आदेशों का लिखित और मौखिक रूपों में खुलासा किया जिनका समावेश *तोराह*, हिब्रू बाइबिल (या ईसाईयों की ओल्ड टेस्टामेंट) के मुख्य भाग में है। मजबूत ईश्वरीय आज्ञायें और निषेधाज्ञायें यहूदीवाद की विशेषता थी; व्यवहार की यह कठोरता ईसाई धर्म और उसके बाद इस्लाम में भी आ गई।

मैनीकीइज़्मः ईरान में उत्पन्न एक धार्मिक आन्दोलन, जिसका नाम मानी (216-274 सी ई) के नाम पर रखा गया, जिनके दर्शन ने अच्छे और बुरे के बीच शाश्वत संघर्ष पर ज़ोर दिया। मानी मूल रूप

से एक यहूदी-ईसाई संप्रदाय से संबंध रखते थे, जिन्हें एल्केसाइट्स कहा जाता था। एक किशोर के रूप में दर्शन का अध्ययन करने के पश्चात्, मानी ने अपने माता-पिता के संप्रदाय को छोड़ दिया और अफगानिस्तान की यात्रा की, जहाँ उनका साक्षात्कार हिन्दू और बौद्ध शिक्षाओं से हुआ। चूँकि मानी के उपदेश को ईरान के बहुसंख्यक, जरतुष्ट धर्म के लिए खतरे के रूप में देखा गया, इसलिए उन्हें कैद कर लिया गया, और उसी दौरान उनकी मृत्यु हो गयी। विद्वान अल-बिरूनी ने मानी के जीवन के कुछ पहलुओं पर रोशनी डाली है। मैनीकीइज़्म ने न केवल सासानिद (ईरानी) शासित क्षेत्रों में बल्कि (अभी भी) रोमन एशिया माइनर, मिश्र और उत्तरी अफ्रीका में ईसाइयों को भी प्रभावित किया।

इतावली प्रायद्वीप के लोगों के लिए, जो रोमनों, एट्रूस्कनों और लातिन के पूर्वजों के रूप में जाने जाते हैं, विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा अभिजात्य वर्ग के साथ-साथ आम लोगों के जीवन का भी अभिन्न अंग थी। रोम मध्य इटली में कबीलाई समाजों के सहमिलन क्षेत्र के रूप में उभरा और उसने अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक (धार्मिक सहित) व्यवहारों को समाहित किया। रोमन ईसाई धर्म के निर्माण से बहुत पहले और नज़ारत (Nazarath) के यीशु के जन्म और उनके तथाकथित पुनर्जीवन (Resurrection) की तीन शताब्दियों के बाद तक रोम में 'मूल' या देशज रोमन देवताओं की पूजा की जा रही थी। रोम (राजधानी शहर; रोमन कवियों टिबुलस, ओविड और लिवी द्वारा इस 'अनादि नगर' का यशगान किया गया है) और उसके आसपास के लोग पूर्वजों की पूजा के साथ-साथ अपनी जनजातियों और राज्य के देवताओं की भी पूजा करते थे। परिवार के पूर्वजों को पारिवारिक अनुष्ठानों और समारोहों में याद किया जाता था। यह रोमन *पौराणिक* धर्म था, जिसका स्वरूप चीन और दुनिया भर के अन्य समाजों में प्रचलित धर्मों जैसा था। प्रारंभिक रोमन पूजा में देवी-देवताओं की उपासना के अन्य रूप जैसे सूर्य और चन्द्रमा, प्रजनन और विजय के देवी-देवताओं की आराधना शामिल थी, जैसा कि प्राचीन यूरोप, निकट पूर्व और अफ्रीका के अन्य समाजों में प्रचलित था। प्रारंभिक रोमन राज्य ने मंदिरों और पवित्र स्थलों को संरक्षण प्रदान किया, और लोगों को प्रमुख रोमन अधिकारियों के इष्ट पसंदीदा देवताओं की पूजा करने के लिए बाध्य किया। 'मूल' रोमन देवताओं को सम्मानित करने वाले मंदिर जैसे कि जानूस (आदि और अंत के देवता) और वेस्ता (परिवार या गृह-अग्नि देवी), रोम के महत्वपूर्ण स्थलों और भवनों जैसे रोम के फोरम और केपिटोलाइन हिल में रोम के राजनैतिक और नागरिक प्राधिकरणों के निकट थे।

एक देवता जिसे मुख्य रूप से पूजा जाता था (यद्यपि वह सभी रोमनों के लिए मुख्य नहीं थे) वह ज्यूपिटर था। इस 'देवताओं के राजा' को रोमनों ने हेलनेस् ('यूनानी') की पुरानी सभ्यता से अपनाया था, जो ज़ियस की पूजा करते थे। इस प्रकार, रोमन देवता ज्यूपिटर ग्रीक देवता का ही नवीन नामकरण था। लगभग 400 बी सी ई तक रोमन लोगों ने ग्रीक **देव-समूह** (देवताओं के संग्रह) से कई देवताओं को अपनाया अथवा आयात किया था, ठीक वैसा ही जैसा कि शिक्षित रोमन लोगों से अपेक्षा रहती थी कि वे ग्रीक भाषा द्वारा ग्रीक कविता, नाटक, दर्शन को सीखें। ज़ियस की पत्नी हेरा को रोमन धर्म में जूनो और ज़ियस और हेरा की संतानों – हरमेस्, एरिस, एथेना और एफ्रोडाइट – को रोमन धार्मिक प्रारूप में मरकरी (Mercury), मार्स (Mars), मिनरवा (Minerva) और वीनस (Venus) के रूप में समाहित किया गया। इसी प्रकार क्रोनोस, ग्रीक 'समय-काल के परम पिता' और आद्य-देवता, जो ज़ियस और हेरा के पिता थे, उन्होंने रोमन देवतागण में सैटर्न (Saturn) के रूप में स्थान पाया। क्रोनोस के बेटे और ज़ियस और पोसाइडन (रोमन नेप्च्यून) के भाई हेडिस ने रोमन धर्म में प्लूटो के रूप में प्रवेश किया। चौथी शताब्दी सी ई तक रोमन आधिकारिक व्यवहार

[1] सासानिद साम्राज्यः 224 से 651 सी ई तक राजधानी इस्ताखर (पर्सीपोलिस) के साथ, वर्तमान दक्षिण ईरान में सासान राजघराने द्वारा शासित। सासानिद साम्राज्य ईरानियों द्वारा परम्परागत रूप से नियंत्रित और इस्लाम के उदय से पहले का अंतिम ईरानी साम्राज्य था, जिसमें विश्व का एक बड़ा भाग शामिल था। विस्तृत जानकारी के लिए **बी एच आई सी-102** की **इकाई 13** देखें।

में मूल 'ग्रीक' देवताओं के साथ परिवार व राज्य के 'मूल' रोमन देवताओं को पूजने की स्वीकृति भी थी। ज्यूपिटर और सैटर्न के मंदिर विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे। उन्हें राज्य की तरफ से आर्थिक सहायता दी जाती थी, और वे रोम में फोरम के निकट स्थित थे। रोमन लोगों ने कई प्रजनन पंथों और 'रहस्यों' का समर्थन किया जो भू-मध्यसागर और एशिया के आसपास विभिन्न स्थानों में उत्पन्न हुए थे (देखें **भाग 3.4**)।

संक्षेप में, हालांकि रोमन जगत में धर्मों के विभिन्न रूप प्रचलन में थे, परन्तु उनका राजनीतिक और सार्वजनिक व्यवस्था के मसलों से अलग कोई सामाजिक अर्थ नहीं था। पाँचवी शताब्दी सी ई के दौरान रोमन राज्य की एक उग्र नई नीति सामने आई जिसमें चर्च के ईसाई नेताओं (रोमन कैथोलिक) द्वारा मान्य पद्धतियों के अलावा अन्य सभी पूजा पद्धतियों को निषेध कर दिया गया। रोमन साम्राज्य के अन्तिम चरण में राज्य ने ईसाइयों, जो उनके लिए वास्तविक उचित प्रजा थे, और रोमन कानूनों की संरक्षता का आनन्द ले रहे थे, तथा **पेगन (बुतपरस्त)** और गैर-ईसाइयों के बीच, जिनकी स्वतंत्रताएँ सीमित थीं, विभेद किया।

3.2 धर्म और रोमन जगत : एक अधिग्रहण आधारित सभ्यता

हम रोमन जगत में ईसाई धर्म के उदय को दो चीजों की अधिक बारीकी से जाँच करके समझ सकते हैं। प्रथम, रोमन संस्कृति के वे पहलू और इसकी विरासत जो इसने अन्य संस्कृतियों से अधिग्रहण की और दूसरा, वह साधन जिनके द्वारा 'रोम' ने उन लाखों लोगों को प्रभावित कर अपनी छाप छोड़ी, जो रोमन केन्द्रीय स्थल से परे थे परन्तु जिन पर इसने शासन किया। लगभग 400 बी सी ई से रोमन समाज पर यूनानी या हेलेनिक प्रभाव का पहले ही उल्लेख किया जा चुका है।

चित्र 3.1: जानूस की शीर्ष प्रतिमा, वेटिकन म्यूज़ियम, रोम
साभार: Loudon Dodd
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Janus1.JPG

चित्र 3.2: वेस्टा, द विरजिन रोमन पौराणिक गाथाओं में अग्नि, गृह और परिवार की देवी
साभार: Guillaume Rouille (PromptuariiI conumInsigniorum)
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Vesta-Roma.jpg

जैसा कि अपेक्षित था कि जब रोमन शासन का विस्तार गॉल और स्पेन, आल्पस के उत्तर में, डेन्यूब नदी की घाटियों के साथ, निकट पूर्व और उत्तरी अफ्रीका तक हुआ तो इन रोमन प्रांतों के प्रमुख शहर रोमन पंथ के आधिकारिक या समर्थित मन्दिरों से भर गए। रोमन पंथ 'स्थानीय' देवताओं के मंदिरों के साथ मौजूद थे, जिन्हें रोमन लोगों ने स्थानीय आबादी की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए संरक्षण प्रदान किया था। उदाहरण के लिए, प्राचीन यहुदी देवता बाल (Baal) को रोमनों द्वारा ज्यूपिटर हेलियोपोलिटेनस के रूप में मान्यता प्रदान की गई थी। और बाल मन्दिरों (उदाहरण के लिए बालबेक, लेबनान में) का रोमनों द्वारा निर्माण या

पुनर्निर्माण किया गया। दोनों प्रकार के भद्र पुरुष – रोमन सीनेट में बैठने वाले पेट्रिशियन और राजनैतिक ओहदे की महत्वाकांक्षा रखने वाले प्लेबियन (गैर-कुलीन) – महत्वपूर्ण मंदिरों के प्रबंधन की चाह रखते थे। चाहे वे मंदिर रोम के शहर में या फिर रोमन सत्ता के अन्य केन्द्रों में रहे हों।

रोमन इतिहास में कई बार, उनके सर्वोच्च लीडरों को, जो कि राजकीय पंथ के मुख्य पुजारी भी थे, उनकी मृत्यु के पश्चात् देवता घोषित किया जाता था। उदाहरण के लिए, गेयस जुलियस सीजर (100-44 बी सी ई) ने स्वयं की एक प्रतिमा को क्वीरीनस, प्राचीन रोमन युद्ध की देवी, के मन्दिर में स्थापित करवाया था। जुलियस सीजर का स्व-देवत्वारोपण असामान्य और आपत्तिजनक था, हालांकि मृत्यु के बाद शासकों को शाही पंथ में शामिल करना वहाँ एक सामान्य बात थी। कई प्राचीन समाजों जैसे कि असीरियन, ईरानी, और मिश्रवासियों में सर्वोच्च शासकों को देवताओं या अर्ध-देवता के रूप में देखा जाता था। पौराणिक नायकों को देवता के रूप में पहचानने और नये पंथ स्थापित करने में रोमन भी अभ्यस्थ थे, जिनमें से कुछ अतिशीघ्र भुला भी दिए जाते थे।

चित्र 3.3ः जुलियस सीज़र, तुईलेरीस के बागान में
साभारः जेस्टरो / स्सोलबर्गी
स्त्रोतः https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Julius_Caesar_Coustou_Louvre.png

चित्र 3.4ः कान्सटेनटाइन प्रथम की प्रतिमा, केपिटोलाइन म्यूजियम, रोम
साभारः जीन-क्रिस्टोफ बेनोइस्ट
स्त्रोतः https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Rome-Capitole-StatueConstantin.jpg

मृतक-उपासना की प्रथा, चाहे वो परिवार के सदस्य हों, राज्य के शासकगण हों, या फिर पौराणिक संस्थापक, पूरे इतिहास में कई समाजों में आम रही हैं। यह धर्म, पूजा और पवित्रता की परिभाषाओं पर प्रश्न चिन्ह लगाती हैं, जिसके बारे में विभिन्न विद्वानों की भिन्न राय रही है। क्या मनुष्यों की आराधना धर्म का हिस्सा है या उससे अलग है? क्या मृतक 'दिव्य' बन सकते हैं? क्या 'पवित्र' तभी माना जा सकता है, जब वह स्पष्ट रूप से 'लौकिक', रोजमर्रा के जीवन से अलग हो? लैटिन शब्द '*रिलीजियो*' (*religio*) क्रिया रूप है जिसका अर्थ 'जोड़ना' या 'बान्धना' है, यह दर्शाता है कि रोमन समाज में धर्म को एक दायित्व या कर्त्तव्य के रूप में समझा गया। एक पंथ (*cultus*) के पास देख-रेख करने वाले या अनुयायी होने चाहिएः 'Cult' और 'cultivation' लैटिन में एक ही मूल के शब्द हैं। कुछ रोमन धार्मिक व्यवहार संस्थागत ढांचे में संगठित हुये, लेकिन अन्य नहीं। सभी रोमन धर्मों में अधिकारी

(पुजारी या पुजारिन) या औपचारिक धर्म-शास्त्र आवश्यक नहीं थे। पंथों के व्यवहार स्वैच्छिक या वैधानिक हो सकते थे। इस प्रकार ज्युपिटर के मन्दिर के पवित्र स्थान में प्रवेश करना, मूर्तियों और सम्मानित वस्तुओं के साथ रास्तों पर जुलूस निकालना, प्रत्येक सप्ताह के किसी एक दिन को बिना श्रम के रूप में देखना (जैसे यहुदी शैबात या **सबाथ**[2]), पूर्वज की प्रतिमा के सामने भोजन या पेय रखना, समूह में इकट्ठे होकर धर्म-गुरू द्वारा पढ़े गये पवित्र धर्म-ग्रंथ के व्याख्यानों को सुनना और समूह में अपने सह-धर्मी साथियों के साथ दीक्षित होने के लिए समारोह में भाग लेना, ये सभी रोमन जगत में धार्मिक व्यवहार की अभिव्यक्तियाँ थीं।

विद्वानों के अनुसार प्राचीन रोमन जगत का अध्ययन करने में अन्य कालों और स्थानों की तरह बहुत सारे मानवीय व्यवहारों को धार्मिक प्रथाओं के रूप में पहचानने का खतरा है। उदाहरण के लिए, जादू और ज्योतिष जो मूल रोमन लोगों में और जिनको उन्होंने आत्मसात किया उनमें प्रचलित थे, उनको किस श्रेणी में रखा जाए? अनेक रोमन लोग इन पुरातन प्रथाओं को धर्म से अलग नहीं मानते थे। धर्म पर शोध करने वाले समाजशास्त्री एमिल दुर्खाइम (1858-1917) द्वारा प्रस्तुत किये गये अवलोकन को हम प्रोत्साहन अथवा चेतावनी के रूप में देख सकते हैं कि धर्म मूल रूप से प्रत्येक समाज द्वारा अपनी स्वयं की पूजा है। फिर भी रोमन धर्म को समझने के लिए उनकी पूजा पद्धति और अनुष्ठानों को ध्यान में रखने के साथ-साथ यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि अनुष्ठान विशेषज्ञों या गुरुओं ने कैसे इनकी अनुमति दी, बढ़ावा दिया या इन्हें लागू किया, और राज्य के अधिकारीगण विभिन्न समुदायों के उपासकों (विभिन्न पंथों) के प्रति कैसी भावना रखते थे। जैसा कि हम देखेंगे कि, पहली चार शताब्दियों सी ई में रोमन अधिकारियों ने ईसा मसीह के पंथ को और 'ईसाई' धर्म के प्रसार को एक समस्या के रूप में देखा। जैसा कि इतिहासकार मार्विन पेरी समीक्षा करते हैं:

> अनेक रोमन लोगों के लिए ईसाई सामाजिक व्यवस्था के शत्रु थेः ऐसे अजीब लोग जो राज्य – देवताओं को स्वीकार नहीं करते, रोमन त्यौहारों को नहीं मनाते, पेशेवर लड़ाई (ग्लेडिएटर प्रतिस्पर्धाओं) को हेय दृष्टि से देखते थे, सार्वजनिक स्नानागार से दूर रहते थे, अहिंसा का गुणगान करते थे, मृतक सम्राटों को देवता का सम्मान देने से इन्कार करते थे। और सूली पर चढ़ाये गए एक 'अपराधी' की पूजा करते थे। रोमन अन्ततः ईसाइयों को एक ऐसे सार्वभौमिक बलि के बकरे के रूप में देखते थे, जो साम्राज्य पर अकाल, प्लेग और सैन्य पराजय जैसी विपदाओं के बोझ के लिए उत्तरदायी थे।
>
> **पेरी, 2012: 111.**

यह विचारणीय है कि रोमन नागरिक (राजनीतिक) और धार्मिक अधिकारियों ने आमतौर पर सहयोग किया था, इसलिए नागरिक कानून से ऊपर या परे की गतिविधि के एक क्षेत्र को परिभाषित करते हुए ईसाइयों द्वारा अधिकारियों और कानून की अवहेलना करने के आधार पर ईसाइयों को शाब्दिक अर्थ में एक विद्रोही के रूप में चिह्नित किया जा सकता था। धार्मिक कर्त्तव्यों और नागरिक शक्ति और कानून के बीच संभावित और वास्तविक संघर्ष एक ऐसा विषय है जो 476 सी ई में रोमन राज्य-व्यवस्था के अधिकारिक पतन से पहले और उसके बाद के 'यूरोपीय' इतिहास में भी चलता आया है। हालांकि ऐसे बुनियादी मुद्दे किसी भी तरह से सिर्फ यूरोप में ही अद्वितीय नहीं हैं।

पूर्वगामी भागों में सुझाव दिया गया है कि रोमन जगत में धर्मों का विकास 'केन्द्रीय' रोमन समाज की परम्पराओं द्वारा विदेशी प्रभावों को अवशोषित करके और रोमन राज्य द्वारा उन चुनौतियों के प्रति अनुकूल हो जाने से हुआ था। हालांकि रोमन साम्राज्य के ज्यादातर निवासी नागरिकों से ज्यादा अधीनस्थ प्रजा-जन थे, रोमन नागरिकता सैन्य सेवा द्वारा

[2] यहूदी परम्परा में ईश्वर और मूसा की आज्ञा के अनुसार विश्राम और पूजा का अनिवार्य दिन (बुक ऑफ एग्ज़ोडस; Book of Exodus) 31: 13-17, में उल्लेखित है)। ईसाइयों ने इस यहूदी व्यवहार को अपनाया, अधिकांश ईसाई सम्प्रदायों ने सबाथ के पालन का दिन शनिवार से रविवार को स्थानांतरित कर दिया।

पुष्टिकृत या अर्जित की जा सकती थी। रोमन सेनाओं में सेवा करके, अनगिनत अफ्रीकी, सीरियाई, यूनानी, स्लाव, स्पेनवासी, गॉल (फ्रांसीसि), जर्मनिक और ब्रिटेन के लोगों ने रोमन नागरिकता के कानूनी और राजनीतिक लाभ प्राप्त किए। रोमन साम्राज्य के लिए अपनी सीमाओं पर निरंतर प्रतिरोध का सामना करने से बेहतर बर्बर लोगों को आत्मसात करना था, चाहे वो विजय के माध्यम से हो अथवा गठबंधन द्वारा। यह स्पष्ट है कि रोमन साम्राज्य की सफलता कुछ हद तक *सांस्कृतिक सामंजस्य* की वजह से भी थी – जिस तरह से रोम ने पराजित और अधीनस्थ आबादी की मान्यताओं और व्यवहारों को अपनाया था। यह उनके साथ आपसी समझौतों की एक जटिल प्रक्रिया थी, और यह आवश्यक नहीं कि यह एक पूर्ण निर्धारित रणनीति का परिणाम रहा हो। 'विदेशी' धार्मिक प्रथाओं और देवी-देवताओं को अपनाकर रोमन अधिवासी उस आबादी के साथ घुल-मिल सकते थे जिस पर वो अपना शासन स्थापित करते थे और स्थानीय पंथों के संरक्षक के रूप में प्रतिष्ठा और सम्मान अर्जित कर सकते थे। स्थानीय आबादी, रोमन धार्मिक प्रथाओं को स्वीकार करते हुए और रोमन पंथों को संरक्षण देते हुए रोमनकृत हो गई, जैसा कि उन्होंने रोमन सभ्यता और उसके अन्य कानूनों को स्वीकार किया था।

रोमन जगत के हेलेनीकरण का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। ग्रीक देवताओं को अपनाने के साथ-साथ, रोमनों को ग्रीक *दार्शनिकों* (*philosophia*) ने विस्मित किया, जिसमें भौतिक पदार्थों के साथ जो (अदृश्य रूप से) पदार्थ के पीछे या परे था, मीमांसा, तत्व मीमांसा और सत्ता मीमांसा (अस्तित्व का प्रश्न) का चिन्तन शामिल था। ईसा से छः या सात शताब्दियों पहले ग्रीक दार्शनिकों ने शरीर और आत्मा के बीच संबंध और शरीर की मृत्यु से परे आत्मा की अमरता की निरंतरता के बारे में अनुमान लगाया था और विचार व्यक्त किए थे। ऑगस्टीन (354-430 सी ई) की *कन्फैशन्स* (*confessions*; आत्मकथा) और उनकी कृति '*द सिटी ऑफ गॉड* हमें यह समझने में मदद करते हैं कि शिक्षित रोमन जिन्होंने ईसाई धर्म स्वीकार किया था, ने पूर्ववर्ती परम्परागत ज्ञान और चिन्तन को कैसे देखा। ऑगस्टीन एक अफ्रीकी रोमन नागरिक था जो हिप्पो का ईसाई बिशप बन गया और एक सन्त के रूप में घोषित हुआ। ऑगस्टीन और अन्य 'चर्च फादरों'[3] ने अपने ईसाई धर्म को तर्क संगत और स्पष्ट करने के लिए ग्रीक दर्शन का उपयोग करने की कोशिश की। ऑगस्टीन के निष्कर्षों के अनुसार यहूदी और यूनानी शिक्षा ईसाइयों के काम आ सकती थीं: गैर-ईसाई मूर्तिपूजकों के ज्ञान को पूरी तरह से अस्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। नवप्लेटोवाद (यूनानी दार्शनिक प्लेटो, 428 / 427-348 / 347 सी ई) का उल्लेख तीसरी से छठी शताब्दी सी ई में रोमन जगत के अलेक्जेंड्रिया, एथेंस और कुछ अन्य बौद्धिक केन्द्रों में जिनमें ईसाई समुदाय थे, विकसित हो रहे विचारों की एक प्रवृत्ति थी। नवप्लेटोवादियों ने एक अज्ञेय स्त्रोत के विचार को प्रोत्साहन दिया, 'अनन्त एक' ज्ञानातीत ऐसा स्त्रोत जो सभी यथार्थ के प्रारंभ और अंत में और अवलोकन की जाने योग्य वास्तविकता से परे था। कई ईसाई नवप्लेटोवादियों के साथ सहानुभूति रखने वालों ने इस 'अनन्त एक' को ईश्वर तत्व के समकक्ष रखा। छठी और सातवीं शताब्दी सी ई में ईसाई बुद्धिजीवी प्रोकोपियस (एक इतिहासकार), बूथियस और जॉन फिलोपोनस, अरस्तु और अन्य प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों के विचारों का उपयोग **बिशपों** और अन्य चर्च अधिकारियों के साथ विवादों में कर रहे थे, और मूर्तिपूजकों के ज्ञान का इस प्रकार का उपयोग निषिद्ध या दण्डनीय नहीं था[4]। बाद में मध्य युग में, जब धर्मशास्त्री थॉमस

---

[3] या धर्म दूतीय फादर्स (ईसा मसीह के प्रथम शिष्यों के उत्तराधिकारी के रूप में): लगभग 100-700 सी ई में चर्च के प्रशासक, ईसाई शिक्षक और धर्मशास्त्री, जिन्हें संस्थागत ईसाई धर्म के संस्थापक के रूप में देखा जाता है। उनके महत्व का इस तथ्य से संकेत मिलता है कि चर्च फादर को रोमन कैथोलिक और पूर्वी रूढ़िवादी चर्चों द्वारा संत घोषित किया गया था।

[4] बिशप शब्द यूनानी शब्द *एपिस्कोपोस* (episkopos) जिसका अर्थ अभिभावक होता है, से निकला है। इकाई के अंत में शब्दावली देखें।

एक्विनॉस (1224 या 1225-1274 सी ई) ने दर्शन को धर्म के हाथों की कठपुतली बताया, इस अर्थ में वह ईसाईयों के ऊपर मूर्तिपूजक यूनानियों के आभार को स्वीकार कर रहे थे।

3.3 ईसा पंथ और रोमन शासन को खतराः उत्पीड़न से प्रोत्साहन तक

सभी ईसाई चर्चों या संप्रदायों के ईसाई अधिकारियों के अनुसार, नज़ारत के यीशु के माता-पिता (जोसफ और मेरी) का सामान्य परिवार में पालन-पोषण हुआ था। जब उन्हें दिव्य रहस्योद्घाटन हुआ, उन्होंने समस्त यहूदी क्षेत्र में उपदेश दिये, जबकि कुछ अन्य यहूदियों के द्वारा उन्हें नकली मसीहा करार दिया गया, और रोमन अधिकारियों ने उन्हें सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरा मानकर जेरूसलम में प्राणदंड दिया। हम ईसा मसीह की कहानी पर विश्वास करें या ना करें, हम ईसाई बाइबिल न्यू टेस्टामेन्ट के माध्यम से जो पहले ग्रीक में रचा गया था, परन्तु तत्पश्चात् लेटिन, सीरिएक, आर्मेनियन और अन्य भाषाओं में लिखी गई – ईसाई धर्म के उदय के बारे में अन्तर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। और इसी प्रकार हम चर्च फादरों के बारे में और उनके द्वारा संकलित कार्यों द्वारा जैसे, टर्टूलियन, साईपेरियन, ओरिगेन, ऑगस्टीन, जेरोम, एम्बरोस, बेसिल, एथनेसियस, एंथनी, जॉन क्रिसोस्तम, अफराहट और एंटिओक के आइज़ैक जैसे व्यक्तियों की कृतियों से इस विषय के बारे में जान सकते हैं। उस समय की अनुकरणीय अग्रणी ईसाई महिलाओं द्वारा और उनके बारे में वर्णित ग्रन्थ भी हमें प्राप्त होते हैं। अन्य उपयोगी स्त्रोत प्रारंभिक सन्तों, पवित्र पुरुषों और स्त्रियों के जीवन की कहानियाँ हैं, जो अपने कार्यों या अवज्ञा के लिए प्रशंसनीय हैं।

ईसाई संत अपने धर्म पर मिटने वाले हुतात्मा (*मार्टिस* = ग्रीक में 'गवाह') थे। उनके बारे में कहानियों ने ईसाई धर्म के व्यवहार की सीख प्रदान की और इसकी आत्म परिभाषा को आकार दिया। वास्तव में संतों की इन गाथाओं ने ईसाई अस्मिता को स्वरूप प्रदान किया। जैसा कि इनसे आशा की जाती है यह स्त्रोत ईसाइयों का पक्ष लेते हैं और बुतपरस्तों या विधर्मियों की आलोचना करते हैं। वे मानवता की मुक्ति के लिए हुतात्माओं की साधुता और कष्ट भोगने की प्रक्रिया को ईश्वरीय योजना के रूप में दर्शाते हैं (पाचँवी शताब्दी सी ई तक आते-आते लैटिन शब्द *पेगन* का मतलब गैर-ईसाई से था)। इस समय के धर्मनिरपेक्ष या गैर-ईसाई स्त्रोत टकराव और पीड़ा के अन्य कारणों को प्रकट करते हैंः ईसाइयों ने रोमन रीति-रिवाजों और सामाजिक मानदंडों – जैसे सम्राटों का मंगलगान करने वाले शाही पंथों – को अस्वीकार किया और कानून का विरोध किया।

बाइबिल के यीशु मसीह (नज़ारत के) के जीवन, मृत्यु और पुनः जी उठने के वर्णन और साथ ही साथ गैर-ईसाई रोमन इतिहासकार जैसे टाइटस फ्लेवियस जोसेफस (37-100 सी ई)[5] के वृत्तांतों से ईसा मसीह पंथ को रोमन राज्य द्वारा संदिग्ध मानने का एक स्पष्ट कारण प्रकट होता हैः इसके अनुसार कुछ यहूदी जो प्राचीन यहूदी राज्य (जुडिया या इजराइल) के रोमन अधिग्रहण से नाराज़ थे, उन्होंने यीशु का मसीहा के रूप में अभिवादन कर 'अभिषेक' किया और यह माना कि वह यहूदियों और शायद अन्य लोगों पर सार्वभौमिक शांति के युग में शासन करेगा। न्यू टेस्टामेन्ट अपने आप में यह स्पष्ट नहीं करता, कि यीशु वास्तव में राजनीतिक शासन के मामलें में अपनी यहूदी मातृभूमि के लिए क्या चाहते थे। यहूदी आजादी के लिए हुतात्मा यीशु मसीहा के रूप में मृत्यु दंड पाये यीशु की अपूर्व कथा ने जुडिया और पड़ोसी क्षेत्र में जो रोमन नियंत्रण में थे, उनके लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत की। रोमन

---

[5] इस विषय में जोसेफस की मुख्य कृतियाँ हैंः *वर्क्स ऑफ जोसेफस,* कम्पलीट एन्ड अनएब्रिज़्ड न्यू अपडेटेड एडिशन में सम्मिलित *द जयुइश वार एन्ड एन्टीक्यूटीस ऑफ द ज्यूज़,* विलियम व्हिस्टन द्वारा अनुवादित (पीबॉडी, मेसाचुसेट्सः एम. ए. हेन्ड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1987)।

अधिकारियों ने उन्हें अपमानजनक ढंग से सामान्य चोरों के साथ सूली पर चढ़ाया, और नकली और ढ़ोंगी 'यहूदियों के राजा' के रूप में उनका उपहास उड़ाया। इसके बहुत कम प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि उनकी शिक्षाओं को वहन करने वाले संदेशवाहक – प्रचारक, धर्मदूत और चर्च के संस्थापक – पहली शताब्दी सी ई के उतरार्द्ध में यहूदी राजनीतिक और सैन्य उपद्रव में प्रमुख भूमिका निभा रहे थे। रोमन यहूदी ईसा मसीह के सर्वप्रथम अनुयाईयों में से थे, परन्तु बहुत से यहूदियों ने ईसा मसीह को एक नकली मसीहा के तौर पर देखा। हालांकि यह स्पष्ट है कि यीशु की कहानी ने पूरे साम्राज्य में गैर-यहूदियों को आकर्षित किया। ईसाई बाइबिल की मुख्य पुस्तकों में धर्मदूतों द्वारा दिया गया इस तरह का विवरण शामिल था जिसमें एक मनुष्य, जिसके पास एक मानवीय माँ थी, और जो मनुष्य और ईश्वर दोनों का पुत्र था, जो एक धार्मिक शिक्षक था, जिन्हें मरते हुए देखा गया और पुनर्जीवित होते हुए भी देखा गया और स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता की ओर जाते हुए देखा गया। जूडावाद (यहूदी) और उभरते हुई ईसाई धर्म दोनों ने मूर्तिपूजा और किसी भी प्रकार के बहुदेववाद के बारे में कठोरता अपनाई। उभरते ईसाई धर्म और स्थापित यहूदी धर्म के बीच कई विभिन्नताओं के बावजूद, दोनों ने केवल एक सर्वशक्तिमान ईश्वर को मान्यता दी – मूसा और इब्राहीम के साथ-साथ ईसा मसीह – और लगभग सभी पंथों के ईसाईयों ने समय के साथ यहूदियों के 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' को अपने धर्म की नींव के रूप में स्वीकार किया। सदियों से ईसाईयों और यहूदियों के बीच कभी-कभी तनावपूर्ण और हिसंक सम्बन्ध सामान्य विचारों और विश्वासों के साझा भंडार की सहायता से सामान्य भी होते रहे।

तीसरी और चौथी शताब्दी सी ई के दौरान ईसाई समुदायों के विकास ने रोमन अधिकारियों को उन पर अधिक ध्यान देने, अन्य समुदायों के साथ उनके संबंधों और ईसाइयों के शासन के प्रति रवैये पर अधिक निगरानी रखने के लिए प्रेरित किया। सम्राट कॉन्सटेंटाइन I, जिन्होंने पूर्वी भाग से साम्राज्य पर शासन किया था, ने 313 सी ई में ईसाइयों पर पहले के शासकों द्वारा लगाए गए कानूनी प्रतिबन्धों और उत्पीड़न को हटा दिया। कॉन्सटेंटाइन ने अपने जीवन के अन्तिम काल में ही ईसाई धर्म को अपनाया और उन्होंने ईसाई धर्म को साम्राज्य का आधिकारिक धर्म *नहीं* बनाया। बल्कि उन्होंने रोमन क्षेत्रों में ईसाई धर्म को अन्य धार्मिक विश्वासों और पंथों के साथ सह-अस्तित्व में स्वीकृत किया। कॉन्सटेंटाइन ने ईसाई धर्म को अधिक व्यवस्थित करने के लिए चर्च-समितियों को भी प्रायोजित करवाया, जैसे 325 सी ई में **नाइसिया** (एशिया माइनर) में ईसाई समुदायों में फैल गए ईसाई धर्मशास्त्र और चर्च प्रशासन के विवादों को सुलझाने के लिए एक समिति का आयोजन किया गया। चूंकि कॉन्सटेंटाइन ने अपने आप को ईसाई घोषित किये बगैर ऐसा किया था तो हम यह मान सकते हैं कि उनका मुख्य उद्देश्य 'सार्वजनिक व्यवस्था' को बनाए रखना रहा होगा जो उनका शाही कर्त्तव्य था। सम्राट थियोडोसियस ने 380 सी ई में ईसाई धर्म को रोमन साम्राज्य का राज्य धर्म बनाया और पाँचवी शताब्दी के मध्य तक गैर-ईसाइयों के रोमन साम्राज्य के प्रशासन में शामिल होने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। कई इतिहासकारों ने 300 सी ई के अंत और 400 सी ई के प्रारंभ में रोमन और पूर्वी ईसाइयों और अन्य विश्वासों और पंथों का अनुसरण करने वाले लोगों, जिसमें बहुत से रोमन प्रजा के लोग शामिल थे जो ईसा मसीह को ईश्वर के पुत्र के रूप में और *अन्य देवताओं को भी पूजते थे,* के बीच बढ़ती असहिष्णुता के प्रमाणों का हवाला दिया है। लगभग 350 सी ई से पहले जाहिर तौर पर कई अंशकालिक ईसाई भी थे। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि उस समय से पहले के कुछ रोमन या शासक या आम लोग, किसी व्यक्ति के एक से अधिक पंथ में भाग लेने को नैतिक या राजनीतिक समस्या के रूप में नहीं मानते थे, जब तक कि वे लोग नागरिक अधिकारियों और कानून का सम्मान करते थे।

चित्र 3.5: नाइसिया की समिति, 325 सी ई
साभार: फ्रेस्को इन केपेला सिसटीना, वेटिकन
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Nicea.jpg

बोध प्रश्न-1

1. ईसाई धर्म के प्रभुत्व से पहले रोमन जगत के कुछ धार्मिक संप्रदायों या पंथों का नाम बताइये और उनके समर्पित दर्शन या विचारों का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

....

....

....

....

....

2. रोमन जगत को 'अधिग्रहण की सभ्यता' क्यों कहा गया था? व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

3. हेलनीकरण और रोमन जगत पर यूनानी दार्शनिकों (*philosophia*) के प्रभाव के कुछ उदाहरणों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

4) रोमन जगत के कुछ लोगों ने प्रारंभिक ईसाई धर्म को जूडावाद (Judaism) धर्म के एक सम्प्रदाय के रूप में क्यों समझा?

....

....

....

....

....

3.4 'रहस्यवादी धर्म' और ईसाई धर्म का उदय

रोमन ईसाई धर्म के उद्भव और इसके विशिष्ट रूपों को समझाने की कोशिश में, कुछ विद्वानों ने ईसाई पंथ और रहस्यवादी धर्मों के बीच विशेष संबंध पर जोर दिया है, जैसे कि एल्युसीनियन रहस्यवाद और मिथ्रावाद। ग्रीक शब्द *मिस्टीस (mystes)* का अर्थ था वह व्यक्ति जिसे गुप्त रहस्य बताए गए हो, विशेष रूप से एक पंथ की सदस्यता के लिए दीक्षित करना या विशेष अनुष्ठान करके सम्मिलित करना। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, कई पुराने पंथ थे – जैसे कि साइबेल, महान् मातृ देवी की पूजा, जिसने पूर्व की ओर से रोमन साम्राज्य में प्रवेश किया था। इस पंथ में प्रजनन क्षमता और बहुलता से अच्छी फसल सुनिश्चित करने के लिए अनुष्ठानों में सामूहिक या लोकप्रिय अनुपालन या सहभागिता की जाती थी। कुछ प्राचीन प्रजनन पंथों में एक महान् नदी की बाढ़ या शीत ऋतु की संक्रांति के बाद सूर्य की 'वापसी' का स्वागत करने के लिए पशु बलि या अनुष्ठान शामिल थे। ग्रीक में पवित्र स्थलों पर एल्यूसीनियन रहस्यों का अभ्यास किया जाता था, और संभवतः 'ग्रीक सभ्यता' से पूर्व के समय में पर्सेफोन के हेड्स (पाताल-लोक) में अवतरण वर्ष के आठ महीनों तक मानव संसार में उसकी वापसी (वसंत और गर्मियों के मौसम) का उत्सव मनाया जाता था। यह पंथ सभी के लिए खुला नहीं था, यह सिर्फ उनके लिए खुला था जो *दीक्षित* थे और जिन्होंने विस्तृत सदस्यता समारोहों में भाग लिया था। इसी तरह मिथ्रावाद, जो पश्चिम एशिया में उत्पन्न हुआ प्रतीत होता है, और जिसमें वैदिक संस्कृति के तत्व (वेद में मित्र का वर्णन प्रकाश के देवता के रूप में किया किया गया है) शामिल थे, सूर्य की आराधना से संबंधित था। और जिसमें बैलों का बलिदान शामिल था। दीक्षित लोग भूमिगत कक्षों या इमारतों में गुफा के आकार के कमरों (*मिथ्राई*) और पूजा करने वालों के सह भोज के लिए स्थापित बेंचों वाली जगह में एकत्र होते थे। मिथ्रावाद में आनुष्ठानिक शुद्धि के समारोह शामिल थे और इसमें पुनर्जन्म या मृत्यु के बाद जीवन का वादा किया जाता था। रोमन जगत में सैनिक विशेष रूप से इस पंथ के पक्षधर थे। सीरिया, फिलीस्तीन और आर्मीनिया से लेकर हंगरी, जर्मनी और इंग्लैंड तक रोमन काल के सैकड़ों मिथ्राई खंडहर मिलते हैं।

एल्यूसीनियन रहस्य ग्रीस में एल्युसिस पर आधारित डेमिटर और पर्सेफोन के पंथ से संबंधित हैं। इस पंथ में पर्सिफोन के उसकी माँ डेमिटर से अपहरण और फिर उनके पुनर्मिलन के रूप में मनाया जाता था। मिथ्रावाद का नामकरण ईरान और आर्मीनियाई लोगों के देवता मिथ्रा के नाम पर किया गया था, जिसका संभवतः साझा वैदिक आधार था (मित्र की *ऋग्वेद* में प्रंशसा की गई हैं)। मिथ्रवाद की कला/मूर्तिशास्त्र तीन परिदृश्यों में देवता को दर्शाती हैः एक चट्टान से एक बच्चे के रूप में प्रकट होते हुए; एक व्यस्क की वीर मुद्रा में सूर्य को देखते हुए सांड को मारते हुए; और पत्थर में तीर मारते हुए जिससे पानी फूटता है। क्योंकि कोई भी मिथ्राई धर्म पुस्तक या पवित्र ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, मिथ्रावाद का धर्मशास्त्र कल्पित है। स्पष्ट रूप से पंथ में अमरता या रूपान्तरण का कुछ वादा प्रमुख था। पंथ के सदस्यों की सात अवस्थाएँ या पद-स्थितियां थीं, प्रत्येक अवस्था में अलग-अलग रहस्य प्रकट होते थे।

चित्र 3.6: मिथ्रा रिलीफ
साभार: फॉस्टीना ई.
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Mithras-Relief.jpg

रोम के शहर में सान क्लेमेन्ट और सान प्रिस्का के ईसाई बेसीलिकस (केथड्रेल) के नीचे *मिथ्राका* हैं। यह मिथ्रावाद के चार शताब्दियों के उनके अस्तित्व के दौरान तीन सौ साल तक ईसाई धर्म के साथ उनके सह-अस्तित्व के दौरान उनके आपसी घनिष्ट संबंध का सुझाव देता है। या तो कुछ मिथ्रावादियों ने ईसाई धर्म को भी अपनाया या ईसाइयों ने मिथ्रावाद को अपने 'सच्चे' धार्मिक विश्वास की हास्यानुकृति या नकल के रूप में या फिर इन दोनों के रूपों में देखा। प्रारंभिक ईसाई ग्रंथ और उनके विवरण मिथ्रावादियों के बारे में शिकायतों से भरे हुए हैं। हालाँकि एक दृष्टिकोण से प्रारंभिक ईसाई धर्म मिथ्रावाद से बहुत अलग प्रतीत नहीं होता। ईसाइयों की धार्मिक दीक्षाओं में (चर्च में शामिल होने का संकेत देने के लिए बच्चों या व्यवस्कों का **बैपटिज़्म**), शुद्धि अनुष्ठानों और परम् संस्कारों (sacraments; पवित्र जल के साथ एक पादरी द्वारा आशीर्वाद देना, स्वर्ग में जगह के लिए 'अन्तिम संस्कार') में केवल चर्च के 'सदस्यों' अथवा समागम को अनुमति थी। समागमों में पवित्र कहानियों के बारे में बताना (चर्च के उपदेश) और सामूहिक भोज का उत्सव करना इसमें शामिल थे। ईसाई **यूकेरिस्ट** (पवित्र समागम; 'holy communion'), मनाते थे जो उन्हें ईसा मसीह का उनके प्रेरित धर्मदूतों के साथ खाए गए अन्तिम भोज (Last Supper) की याद दिलाता था।

रोमन साम्राज्य में मिथ्रावाद और ईसाई धर्म एक साथ विकसित हुए और प्रतिद्वन्दिता के माध्यम से इन्होंने एक दूसरे को संगठित होने में मदद की। रहस्यवादी धर्मों ने प्रारंभिक ईसाईयों को अनुष्ठानों और अपनेपन का एहसास कराने वाले समारोहों के विषय में सिखाया। हालांकि, मिथ्रावाद की कोई उत्तरजीवी या प्रत्यक्ष पवित्र पुस्तक या शास्त्र नहीं है, यह मुमकिन है कि ईसाई धर्म ने रूपान्तरण और दिव्य रहस्यों में मनुष्यों की भागीदारी के बारे में मिथ्रा-वादी धर्म के विचार अपनाये। उनकी प्रतिद्वन्दिता के अन्तिम चरण में ईसाइयों ने पांचवी शताब्दी सी ई के दौरान मिथ्रावाद और अन्य रहस्यवादी धर्मों को **विधर्मी** (*heresy;* पाप-पूर्ण और दंडनीय त्रुटि के रूप में) मानते हुए उनका उन्मूलन कर दिया।
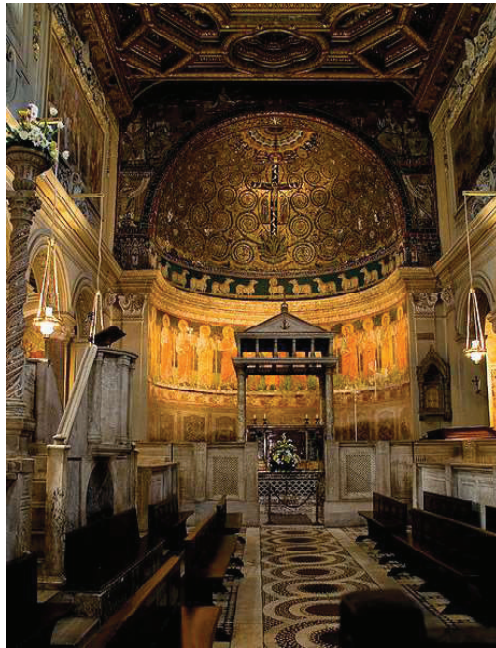
चित्र 3.7: सेंट क्लेमेन्ट की बेसिलिका
साभार: एम पी पी पी (https://www.panoramio.com/photo/3363563)
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Basilica_di_S.Clemente_-_panoramio.jpg

चित्र 3.8: सेन्टा प्रिस्का का अग्रभाग
साभार: विकिमीडिया कॉमन्स
स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/Santa_Prisca,_Rome#/media/File:Santa_Prisca-facciata-antmoose.jpg

3.5 ईसाई धर्म और रोमन राज्य का अन्तिम चरण

रोमन साम्राज्य का पतन एक लंबी प्रक्रिया थी। यह कहना कि 476 सी ई में (कई शताब्दियों में होने वाले अनेक आक्रमणों में से एक) रोम के शहर पर बर्बरों के कब्जे के साथ ही वह समाप्त हो गया सरलीकरण होगा (रोमन साम्राज्य के पतन के बारे में अधिक जानकारी के लिए अगली इकाई (**इकाई 4**) देखें। कॉन्सटेंटाइन I के अन्तर्गत पश्चिमी रोम से 'पूर्वी रोम' का (बाइज़ेंटाइन क्षेत्र में केन्द्रित) औपचारिक अलगाव हुआ और स्वयं को रोमन और ईसाई कहने वाले सम्राटों ने कान्सटेन्टीनोपल से (कॉन्सटेंटाइन शहर, आधुनिक इस्तान्बुल) 1453 सी ई तक शासन करना जारी रखा। कॉन्सटेन्टीनोपल एक धर्म प्रधान (Patriarch) के नेतृत्व में अन्य उभरते हुए ईसाई धर्म, पूर्वी ग्रीक रूढ़िवादी ईसाई धर्म (ऑर्थोडाक्स चर्च), का केन्द्र बन गया। भाषा और ईसाई पूजन पद्धति में पूर्वी रूढ़िवादी चर्च ग्रीक थी, लैटिन नहीं। और पूर्वी रूढ़िवादी चर्च की एशिया, यूरोप और अफ्रीका के ईसाईयों पर अधिकार के लिए रोमन कैथोलिक धर्म के साथ होड़ थी। जैसा कि हमने देखा, ईसाई चर्च की शक्ति तीसरी शताब्दी सी ई से पूरे साम्राज्य में मज़बूत हुई और ईसाई सम्प्रदायों ने रोमन जगत के हाशिये पर स्थित अनुयायियों को इकट्ठा किया। वास्तव में, गॉथ्स का राजा ओडोएसर, जिसने 476 में कान्सटेंटिनोपल में सम्राट के एक प्रतिनिधि या उप-शासक के रूप में रोम पर कब्जा कर लिया था, पहले से ही एरियन सम्प्रदाय का ईसाई था, जिसका पोप द्वारा अनुमोदन नहीं किया गया था।

पोप लियो I ने रोम के साम्राज्य (*इम्पीरियम; imperium*) तथा ईसाई क्षेत्र (*ऑर्बिस क्रिश्चिएनस; orbis Christianus*) को एक समान माना। पांचवी शताब्दी सी ई के शिक्षित रोमन लोगों ने रोमन साम्राज्य को उस 'सार्वभौमिक' साम्राज्य के दैवीय विधान के उत्तराधिकारी के रूप में देखा, जिसमें ईरानी साम्राज्य, असीरियन, बेबीलोन के पुराने साम्राज्यों के साथ-साथ सिकंदर महान् का साम्राज्य भी शामिल था। लियो द्वारा रोमन साम्राज्य (imperium) के साथ एक ईसाई क्षेत्र को समान मानने का समीकरण हमें पोप के

पद और सत्ता की महत्वकाक्षाओं (**papacy**; रोमन पोप का 'कार्यालय' और संस्था) के बारे में बताता है, जो स्वयं को 'निष्ठावन ईसाइयों के रक्षक' के रूप में प्रस्तुत करने की थी और यह उस समय की रोमन सभ्यता के सतत् राजनीतिक और सांस्कृतिक आकर्षण के बारे में भी बताता है। यूरोप के 'मध्ययुग' (लगभग 500-1500 सी ई) के राजा, जो यूरोप में बड़े क्षेत्रों पर शासन करने के इच्छुक थे, जैसे शार्लेमेन (768 सी ई से फ्रैंक्स के राजा, जिन्हें 800 सी ई में रोम के सम्राट पोप लियो III द्वारा ताज पहनाया गया था), और जर्मेनिक राजा ऑटो I (962-972 सी ई में जिन्होंने पवित्र रोमन सम्राट के रूप में शासन किया) ने कैथोलिक चर्च का समर्थन पाने की और साथ ही इसके अधिकार को सीमित करने की कोशिश की। ग्याहरवी शताब्दी सी ई तक, *क्रिश्चियनिटास* (*Christianitas*; ईसाई जगत) एक ऐसा शब्द था जिसका लगातार उपयोग यूरोप के लीडरों द्वारा पश्चिमी और पूर्वी यूरोप के सभी देशों में ईसाई उपासकों और ईसाई शासकों का उल्लेख करने के लिए किया जाता था।

बोध प्रश्न-2

1) 'रहस्यवादी धर्मों (मिथ्रावाद सहित) और प्रारंभिक ईसाई धर्म के बीच की कुछ समानताओं और विभिन्नताओं का वर्णन कीजिये।

....

....

....

....

....

2) पहली और पाँचवी शताब्दी सी ई के मध्य ईसाई धर्म और रोमन राज्य के बीच बदलते संबंधों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

3) ईसा मसीह के पंथ को रोमन शासकों द्वारा खतरा क्यों माना गया? स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

3.6 सारांश

जिस तरह रोम ने ग्रीक नगर-राज्यों और बाद के कई राजतन्त्रों से राजनीतिक प्रथाओं को अपनाया, उसी तरह रोमन जगत में ईसाई धर्म ने यहूदी, ग्रीक और पूर्वी विचारों को ग्रहण

किया और उनमें संशोधन किया। रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म की राजनीतिक विजय का परिणाम यूरोप, एशिया और अफ्रीका के समाजों के लिए यह हुआ कि वे स्वयं को रोमन साम्राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में देखने लगे (500 सी ई के बाद से)। इस इकाई में प्रारंभिक ईसाई धर्म की कई महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन नहीं किया गया है, जैसे कि इसके प्रतीकवाद का विकास, मठवाद की भूमिका ('दुनिया से परे हटकर' लोगों का दिव्य शक्ति का चिन्तन करना) और पादरियों का ब्रह्मचर्य (इसके पुरूष पादरी को विवाह के लिए हतोत्साहित करना) तथा पादरीवर्ग, ईसाई कला और वास्तुकला और शिक्षा के विचारों और मान्यताओं के विषय में प्रारंभिक ईसाई विचारों में स्त्रियों की भूमिका का खंडन करना। लेकिन इसमें यह दर्शाया गया है कि कैसे रोमन साम्राज्य (और उत्तर रोमन यूरोप और निकट पूर्व) के ईसाई कई अलग-अलग मतों का पालन करते थे, जिनके संरक्षकों ने एक-दूसरे को विधर्मी के रूप में दोषी ठहराने की कोशिश की। नागरिक लीडरों को इन विवादों में खींचा गया और जिन्होंने कभी-कभी विभिन्न ईसाई समूहों के बीच विभाजन को दूर करने की कोशिश की; और अन्य समय में उन्होंने विभिन्न ईसाई समूहों को अपने पक्ष में जीतने के लिए विभिन्न मतों के बीच टकरावों का उपयोग भी किया।

ईसा मसीह और उनके देवदूतों की सरलता और 'दुनियादारी' के प्रति उदासीन रहने की मूलभूत कहानियों के साथ, चर्च के प्रमुखों द्वारा पवित्र दरिद्रता की प्रशंसा और राजनीति की दुनिया की निन्दा की जाती थी क्योंकि उनका कहना था कि ये लोगों को नर्क में धकेलती थी। फिर भी चर्च धनी संस्थायें बन गए और पादरीजनों ने राजनीतिक शक्ति को हथियाया। चौथी शताब्दी के बाद से बिशप और चर्च के अन्य अधिकारी मुख्य रूप से धनाढ्य रोमन नागरिक थे, और कुछ ने अपनी चर्चों को संभालने के साथ-साथ अन्य सरकारी संस्थाओं की सेवा की, जैसा कि महत्वाकांक्षी रोमनों ने पूर्व-ईसाई काल में किया था। छठी शताब्दी सी ई के अन्त में रोम के चर्च का प्रशासनिक क्षेत्र इटली का सबसे बड़ा भूमिपति था। उस समय तक पोप, बिशप और मठों की भूसंपत्तियों गॉल (फ्रांस), हिस्पेनिया, (स्पेन और पुर्तगाल) और उत्तरी अफ्रीका में थीं। और पूर्वी रोम में उनके समकक्षों पर भी समान रूप से कृपा की जाती थी। सातवीं शताब्दी सी ई में एक और प्रमुख एकेश्वरवाद, इस्लाम, के उद्भव ने इस क्षेत्र में, जो अंततः यूरोप कहलाया, ईसाई धर्म की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ता प्रदान की।

3.7 शब्दावली

बैपटिज़्म (Baptism) : ईसाई धर्म में दीक्षा देने से संबंधित जल छिड़ककर दीक्षित करने वाला अनुष्ठान, जिसमें बपतिस्मा लेने वाला (baptized) चाहे बच्चा हो या वयस्क।

बिशप (Bishop) : ईसाई पादरी वर्ग का एक सदस्य जिसे एक उच्चतर पादरी वर्ग, जैसे एक महानगरीय धर्म प्रधान या पोप द्वारा विधिवत पादरी बनाया जाता है या नियुक्त किया जाता है।

यूकरिस्ट (Eucharist) : ग्रीक *यूकरिस्टिया*, 'धन्यवाद देना' से व्युत्पन्न। कैथोलिक और अधिकांश अन्य ईसाई चर्चों का एक अनुष्ठान (पवित्र समारोह)। यूकरिस्ट उपासकों के संस्कार के माध्यम से उपासक ईसा मसीह और ईश्वर के साथ ऐक्य (एक साथ आना) को प्राप्त करते हैं।

विधर्म (Heresy) : ग्रीक *ईरेसिया,* 'किसी चीज का चुनना'। मतलब एक धर्म को गलत तरीके से या अज्ञानता से चुनना। इसलिए विधर्म का अर्थ जानबूझकर झूठी शिक्षाओं का पालन करना था और विधर्मियों को कानून के तहत दंडित किया जाता था।

लैटिन (Latin) : इतालवी प्रायद्वीप में उत्पन्न भाषा जो रोमन साम्राज्य के प्रशासन की और बाद में रोमन कैथोलिक चर्च की मुख्य भाषा बनी। यह मध्य इटली में रोमन और उनके अधिकार क्षेत्र के पूर्व एक इतालवी जनजाति को भी संदर्भित करती है।

नाइकिया (Nicaea) : एशिया माइनर में 325 सी ई में बैठक ईसाई मत (धर्मशास्त्र) और चर्च प्रशासन के विवादों, जो ईसाइयों के समुदायों के बीच उभरा था, को हल करने के लिए सम्राट कान्सटेंटाइन I द्वारा प्रायोजित सभा या समिति की बैठक।

पेगन/बुतपरस्त (Pagan) : यहूदियों के अलावा अन्य गैर-ईसाई। लेटिन *पेगस;* शहरों से परे एक प्रशासनिक क्षेत्र या गांव। *पेगानस* इस प्रकार एक साधारण या अज्ञानी ग्रामीण व्यक्ति, जो कस्बों और शहरों में पनप रही नयी धार्मिकता से अछूता था।

पेंथियन (Pantheon) : ग्रीक से व्युत्पन्न 'सभी दिव्यताओं' अथवा 'सभी देवता'; का समूह। यूनानियों (हेलेनिक) के पैन्थियोन (देव-समूह) में ऐसे देवी-देवताओं को शामिल किया गया था जिनकी कल्पना एक दूसरे से संबंधित ऐसे रिश्तेदारों की तरह की जाती थी जैसे कि मनुष्यों में होती है।

पेपेसी (Papacy) : पोप के आध्यात्मिक और प्रशासनिक कार्यालय या अधिकार क्षेत्र का संदर्भ देते हुए (लैटिन *पापा-* 'पिता'), रोम के बिशप, सेंट पीटर के धर्म प्रचारक उत्तराधिकारी, विश्वव्यापी कैथोलिक निष्ठा/धर्म के नेता।

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) विस्तृत विवरण के लिए भाग 3.1 देखें

2) भाग 3.2 देखें

3) भाग 3.2 देखें

4) भाग 3.3 देखें

बोध प्रश्न-2

1) भाग 3.4 देखें

2) भाग 3.5 देखें

3) भाग 3.5 देखें

3.9 संदर्भ ग्रन्थ

ब्राउन, पीटर, (1978) *द मेकिंग ऑफ लेट एन्टीक्यूटी* (कैम्ब्रिज, एम. एः हारवर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस).

ब्राउन, पीटर, (1993) 'द प्रॉबलम ऑफ क्रिस्चेनाइजेशन', *प्रोसीडिंग्स ऑफ द ब्रिटिश एकेडमी,* 82: 89-106.

इगंलबर्ट, हर्वे, (2012) 'इन्ट्रोडक्शन', स्कॉट फिट्ज़जेरॉल्ड़ जॉन्सन (संपा.), *द ऑक्सफोर्ड हेन्डबुक ऑफ लेट एन्टीक्युटि* (ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस). (आनलाइन एड़ीशनः DOI 10.1093/oxfordhb/98780195336931.013.0000).

लोसल, जोसेफ एवं निकोलस जे. बेकर-ब्राएन (संपा.), (2018) *ए ब्लेकवेल कम्पेनियन टू रिलीजन इन लेट एन्टीक्यूटि* (मेलडेन, एम एः विलि एन्ड सन्स).

पेरी, मारविन, (2012) *वेर्स्टन सिविलाइजेशनः ए ब्रीफ हिस्ट्री,* दसवां संस्करण (यूनाइटेड स्टेटसः वाड्सवर्थ सेनगेज लर्निंग).

सेरिस, पीटर, (2011) *एम्पायर्स ऑफ फेथः द फाल ऑफ रोम टू द राइज ऑफ इस्लाम, 500-700* (ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

सेरिस, पीटर, डेल सान्तो, मैथ्यू एवं बूथ, फिल (संपा.), (2011) *एन ऐज ऑफ सेन्ट्स? पावर कानफ्लिक्ट एन्ड डिसेन्ट इन अर्ली मिडिवल क्रिश्चेनिटी* (लायडन एवं बॉस्टनः ब्रिल).

टेलर, डेविड जी. के., (2000) 'क्रिश्चियन रीजनल डाइवरसिटी', पी. आइसलर (संपा.), *द अर्ली क्रिश्चियन वर्ल्ड,* भाग 1 (लंदन एवं न्यूयार्कः रुटलेजः 330-43).

3.10 शैक्षणिक वीडियो

रोम एंड क्रिश्चिनिटी। नेशनल ज्यॉग्राफीक
https://video.nationalgeographic.com/tv/00000144-2f3a-df5d-abd4-ff7f265c0000

जीजसः राइज़ टू पावर 3/3 क्रिश्चियन्स, नेशनल ज्यॉग्राफीक
https://www.youtube.com/watch?v=F0iDQ65Ubas

इकाई 4 रोमन साम्राज्य का संकटकाल*

इकाई की रूपरेखा

* डॉ. दीक्षा भारद्वाज, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- रोमन साम्राज्य के पतन की प्रक्रिया को समझ सकेंगे,
- इस पतन के प्रमुख कारकों की सूची तैयार कर सकेंगे,
- साम्राज्य की क्रमवार विफलता का विश्लेषण कर सकेंगे, और
- साम्राज्य के पतन पर विद्वानों के विचारों के बारे में जान सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

किसी भी सामाजिक-राजनैतिक व्यवस्था के पतन और विनाश को गहन ऐतिहासिक चिंतन और विश्लेषण द्वारा ही चिन्हित किया जा सकता है, विशेषतः रोमन साम्राज्य को जो निःसंदेह प्राचीन विश्व का विशालतम साम्राज्य था। रोमन साम्राज्य दूसरी शताब्दी सी ई में अपने चरम पर था, इसका विस्तार पश्चिमी और पूर्वी यूरोप, उत्तरी अफ्रीका और पश्चिमी एशिया के कुछ भागों सहित अरब प्रायद्वीप को मिलाकर लगभग 6,500,000 किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ था। तीसरी शताब्दी के आरंभ में अपरिवर्तनीय संकटों की श्रृंखला ने रोम को घेर लिया था, जिसने राजनैतिक, आर्थिक, सैन्य और सामाजिक उथल-पुथल को जन्म दिया और अंततः साम्राज्य को पतन की ओर ढकेल दिया। कई संकटों के संयोजन – आंतरिक विघटन और व्यवस्थित विफलता, लगातार जर्मनिक जनजातियों द्वारा बाह्य आक्रमणों – के कारण गंभीर आघातों के परिणामस्वरूप अंततः धीरे-धीरे पश्चिमी रोमन साम्राज्य का पतन हो गया।

4.2 पृष्ठभूमि और इतिहास

पूर्व-आधुनिक विद्वता की क्लासिकीय पहेली – रोम को पतन की ओर ले जाने वाले क्या कारक थे? अनेक विद्वानों ने इसकी व्याख्या की है और विभिन्न सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं। आरंभ में, इम्पीरियम रोमनम (रोमन साम्राज्य के लिए प्रयुक्त लैटिन शब्द) के संकट और पतन पर लिखे गए सिद्धांतों ने किसी एक प्राथमिक कारण पर अधिक बल दिया। इतिहासकारों का अनुमान है कि अनेक कारकों के संयोजन ने धीरे-धीरे साम्राज्य को पतन की ओर धकेला। पतन के अनेक कारण खोजे गए और इनमें से अधिकतर राजनैतिक, आर्थिक, सैन्य और अन्य सामाजिक संस्थाओं का विघटन, जर्मनिक आक्रमणों और रोमन साम्राज्य के भीतर अनाधिकृत रूप से कब्ज़ा करने के प्रयास धीरे-धीरे पतन की ओर जाने के संकेत देते हैं। इसके अतिरिक्त, तीसरी शताब्दी सी ई के बाद साम्राज्य का क्षेत्रीय प्रसार रुकने से इसने नए विजित क्षेत्रों से तुरंत मिलने वाले राजस्व लाभों को खो दिया और फिर अपने ही नागरिकों पर कर वृद्धि का सहारा लिया।

ऐतिहासिक पुनरावलोकन की दृष्टि से पतन तीन शताब्दियों की समयावधि के दौरान हुआ। डायोक्लीशियन और कांस्टेनटाइन द्वारा रोमन राज्य के राजनैतिक, आर्थिक और प्रशासनिक पुनर्गठन के प्रयासों के कारण ही यह तीसरी शताब्दी के संकट का सामना करने के योग्य हो सका, परंतु पांचवी शताब्दी और अधिक भारी आघात लाई। चौथी शताब्दी के अंत तक जर्मनिक जनजातियों ने राइन और डेन्यूब नदियों की ओर से साम्राज्य में प्रवेश किया और उन्होंने स्वयं के बल पर वस्तुतः अपने स्वतंत्र राज्यों और कबीलाई तंत्रों की स्थापना की। 410 सी ई में रोम को विसिगोथ राजा, ऐलेरिक, ने लूटा। कुछ आधुनिक इतिहासकार जब तिथि के महत्व पर प्रश्न उठाते हैं तो पश्चिमी रोमन साम्राज्य के विघटन की तिथि 4 सितम्बर 476 सी ई मानी जाती है जब ओडेसर ने सम्राट रोमुलस को अपदस्थ कर रोम के पश्चिमी शासकों की श्रृंखला को समाप्त पर कर दिया था। तत्पश्चात्, पश्चिमी रोमन साम्राज्य की

सैन्य, राजनैतिक अथवा आर्थिक शक्ति नगण्य मात्र रह गई थी और उसने बिखरे हुए पश्चिमी क्षेत्रों पर, जिसे उस समय तक भी रोमन कहा जा सकता था, अपना नियंत्रण खो दिया।
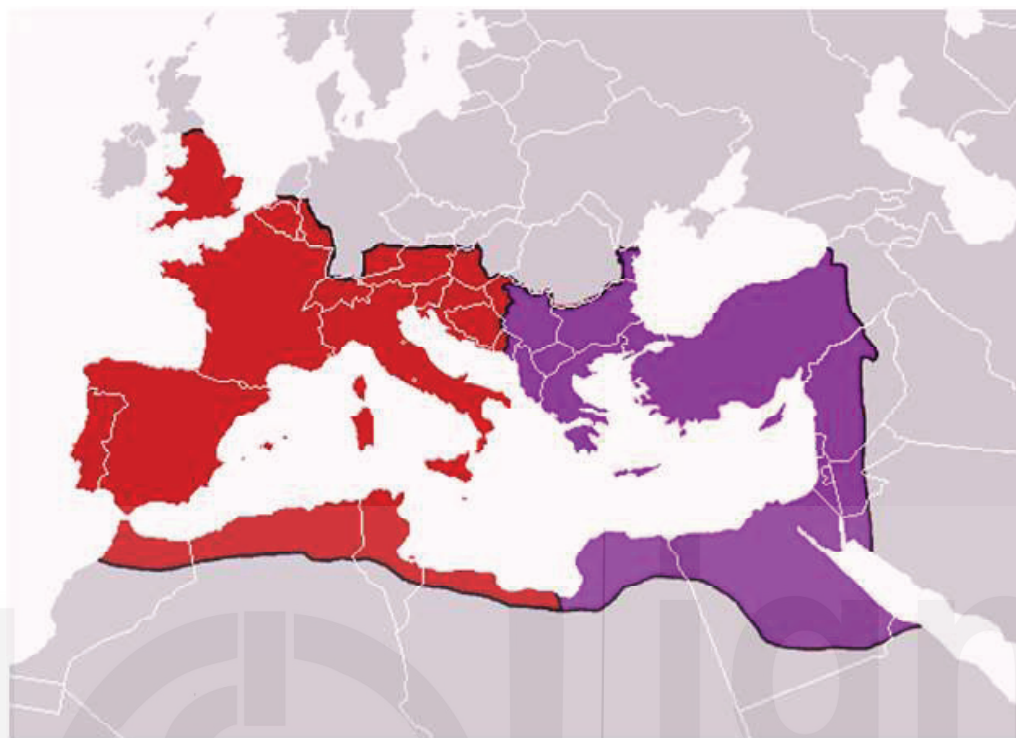
मानचित्र 4.1: थियोडोसियस प्रथम की मृत्यु के पश्चात् 395 सी ई में पश्चिमी और पूर्वी रोमन साम्राज्य की सीमाओं का मानचित्र

साभार: गियूवोगबिल एट एन.विकिपीडिया

स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/File:Theodosius_I%27s_empire.png

तीसरी शताब्दी का संकट

'कुछ मायनों में यह उल्लेखनीय है कि तीसरी शताब्दी सी ई तक रोमन साम्राज्य जीवित रहा। 235 सी ई के पश्चात् आधी शताब्दी तक यह गृह युद्ध, विदेशी आक्रमण, प्लेग और अन्य आपदाओं से पीड़ित रहा जो ज्यादातर साम्राज्यों के अंतिम विघटन का कारण बनने के लिए काफी थे। लेकिन रोम की केंद्राभिमुखी राष्ट्रभक्ति, जो कि रोमन भावना के आदर्श के साथ ही रोम की यथार्थता भी थी, ने अंत में यह सिद्ध कर दिया कि थोड़े समय के लिए यह साम्राज्य को जीवित रखने में सक्षम थी। हालांकि, यह एक अलग रूप में जीवित रहा जिसके लिए इसे धीरे-धीरे बढ़ती हुई आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक दमन के रूप में कीमत चुकानी पड़ी' (रोजर्स, 2009: 218)।

विडंबना यह है कि दो सौ वर्षों की *पैक्स रोमाना* (रोमन शांति) तीसरी शताब्दी के संकट के साथ नष्ट हो गई। राजनैतिक रूप से, 235 सी ई के बाद की आधी शताब्दी (284 सी ई तक) गृह युद्धों से व्याप्त थी और तब पहली बार ऐसा भी हुआ जब रोमन सैनिक आपस में एक दूसरे से लड़ते हुए मारे गए। राज्य सिंहासन के कम से कम पचास दावेदार थे और छब्बीस शासकों ने इस काल में शासन किया जिसमें से पच्चीस की हत्या कर दी गई। उत्तराधिकार की समस्या अत्यधिक प्रखर हो गई और कभी इसका हल सर्वसम्मति से नहीं निकल पाया। प्लेग के प्रकोप से बड़ी संख्या में लोग मारे गए जिससे साम्राज्य में आंतरिक खलबली मच गई और आक्रमणकारियों के लिए यह आसान शिकार बन गया। एथेंस और टारागोना जैसे शहर जो राज्य की सीमाओं से बहुत दूर हो गए थे, 260 के दौर में आक्रमण के शिकार हुए। अनिवार्य आर्थिक प्रतिघात के कारण कर वृद्धि और मुद्रा के मूल्य में गिरावट की गई।

4.3 उत्तर रोमन साम्राज्य

तीसरी शताब्दी के संकट का अंत ऑरेलियन के राज्यकाल के साथ हो गया था, इसे 'शांति और व्यवस्था की पुनर्स्थापना' के नाम से भी जाना जाता है, और यह अधिक दृढ़तापूर्वक डायोक्लीशियन के राज्यकाल में समाप्त हुआ जिसने *टेट्रार्की* (चार का शासन) की प्रणाली द्वारा साम्राज्य में प्रशासन व्यवस्था को सुदृढ़ किया। डायोक्लीशियन ने मेक्सीमियन को, जिसे 286 में सह-शासक बनाया गया, को आगस्टस के तौर पर नियुक्त करते हुए साम्राज्य को दो भागों में विभाजित कर दिया। आगे चलकर उसने 293 में गलेरियस और कांस्टेनटियस को कनिष्ठ (जूनियर) सह-शासक (सीज़र) नियुक्त किया। इस *टेट्रार्की* के अंतर्गत साम्राज्य के प्रभावपूर्ण रूप से चार स्वायत्त भाग हो गए थे और प्रत्येक भाग पर एक अलग शासक का शासन था। डायोक्लीशियन पूर्वी क्षेत्र (निकोमीडिया) पर शासन कर रहा था; मेक्सीमियन ने इटली और अफ्रीका पर शासन किया; कांस्टेनटाइन ने स्पेन, गॉल और ब्रिटेन पर; और गलेरियस ने इलिरिकम, मेसिडोनिया और ग्रीस पर शासन किया। हालांकि, वंशीय महत्वकांक्षा *टेट्रार्की* को अंत की ओर ले गई और कांस्टेनटाइन ने शासक बनने पर साम्राज्य को संगठित करने के लिए दुबारा एकीकृत साम्राज्य की स्थापना की। लेकिन उसने साम्राज्य की गद्दी रोम से कांस्टैंटिनोपल (आधुनिक तुर्की का इस्तांबुल) स्थानांतरित कर दिया। उसने ईसाइयों पर अत्याचार को बंद करवाया और मृत्यु-शय्या पर ईसाई धर्म की दीक्षा ली। इसके साथ रोम की राजनैतिक भूमिका का अंत हो गया।

मानचित्र 4.2 : प्रथम *टेट्रार्की* के दौरान रोम का मानचित्र
साभार: कॉपरमाइन फोटो गैलरी (सीपीजी)
स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/File:Tetrarchy_map3.jpg

थियोडोसियस (379-395 सी ई) के राज्यकाल में ईसाई धर्म राज्य धर्म बन गया और सभी मूर्तिपूजक संप्रदायों पर प्रतिबंध लगाया गया। थियोडोसियस ने साम्राज्य को अपने दोनों पुत्रों के बीच विभाजित कर दिया – आर्केडियस ने विसिगाथों के सहयोग से पूर्वी रोमन भाग (बाइज़ेंटाइन) पर शासन किया और होनोरियस ने वेंडालों की सहायता से रोम के पश्चिमी साम्राज्य पर शासन किया।

जर्मनिक जनजातियों के लगातार आक्रमणों और मुठभेड़ों, जो स्वयं मध्य एशिया के हूणों जैसे कबीलाई समूहों, जिन्होंने सीमाओं को नष्ट कर दिया था, से बचते हुए भाग रही थीं, ने उत्तर-रोमन साम्राज्य की जीवन शैली को ही बदल दिया। अनेक जर्मनिक जनजातियां (गॉथ, वेंडाल, सुर्बी, अलानी और बर्गन्डी की शाखाएं) लगातार रोमन प्रदेशों में प्रवेश करने का प्रयास करती रहीं और उन्होंने अधिकतर क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया। 404 सी ई में राजधानी को रोम से अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित क्षेत्र रावेना स्थानांतरित कर दिया गया और 410 सी ई में विसिगाथों ने आक्रमण कर रोम को लूटा। 455 सी ई में रोम पर वेंडालों ने आक्रमण किया और 476 सी ई में रोमुलस आगस्टलूस के अपदस्थ होने पर पश्चिमी रोमन साम्राज्य का अस्तित्व ही समाप्त हो गया। यहां तक कि पूर्वी रोमन साम्राज्य भी अपने अनेक प्रदेशों को खोने के कारण काफी हद तक कमज़ोर हो गया था। इस कमज़ोर साम्राज्य को बाइज़ेंटाइन साम्राज्य के तौर पर उल्लेखित किया जाता है। बाइज़ेंटाइन शासक जस्टिनियन प्रथम (527-563 सी ई) ने इटली पर विजय प्राप्त कर साम्राज्य को पुनर्जीवित और एकीकृत करने का एक अंतिम प्रयास किया। परंतु इसका कोई लाभ नहीं मिला। पश्चिम में नई सामाजिक-आर्थिक संरचनाएं उभरीं, हालांकि मौजूदा रोमन संस्थाएं पूर्णरूप से खत्म अथवा लुप्त नहीं हुई थीं। लेकिन, सेना पूर्णतः नए शासकों के नियंत्रण में थी।

4.4 राजनैतिक अराजकता

राजनैतिक रूप से रोमन राज्य, सत्ता के बटवारे, और इसके तीन मुख्य घटकों – सम्राट, प्रशासनिक सीनेटोरियल कुलीनतंत्र और सेना – में संतुलन पर टिका हुआ था। इन प्रारूपात्मक घटकों का कमज़ोर होना और इसमें उत्तराधिकार की अप्रिय समस्या का जुड़ जाना पश्चिमी साम्राज्य के राजनैतिक विनाश का कारण बना। दूसरी शताब्दी सी ई के अंत से, शासकों के चयन में सेना निर्णायक भूमिका निभाने लगी और धीरे-धीरे सीनेट और सेना के मध्य संबंध टूट गए। केंद्राभिमुख प्रवृत्तियां प्रखर होने लगीं और राजनैतिक अराजकता का क्रम बन गया।

'तीसरी शताब्दी सी ई के मध्य तक रोमन राज्य सैद्धांतिक रूप से गणतंत्र रहा। जनता अपने प्रतिनिधि के रूप में शासक को चुनती थी जो उनकी ओर से शासन करता था। वास्तव में शासक कुलीन तंत्र में से चुना जाता था। वंशानुगत सिद्धांत बहुत कमज़ोर था और वहां कुछ ही वंशानुगत उत्तराधिकारी हुए। राजतंत्र की प्रकृति अनिवार्य रूप से निर्वाचनीय थी। एडवर्ड गिब्बन के अनुसार, 'शासक का चुनाव सीनेट द्वारा और सैनिकों की स्वीकृति से होता था' (फारूक़ी, 2001: 260)।

4.4.1 सैन्य शासन

तीसरी शताब्दी में सेप्टीमियस सेवरस (राज्यकाल 193-211 सी ई), सेवरन वंश का प्रथम शासक, ने सेना को प्रशासन का अनिवार्य हिस्सा बनाया और परिणामस्वरूप राजसी दायित्व महत्वाकांक्षी सेनापतियों का मोहरा बन गया। नागरिक शासन से सैन्य तानाशाही में परिवर्तन ने राज्य की आर्थिक आवश्यकताएं बढ़ाईं। अंतिम सेवरन शासक, एलेक्ज़ेंडर सेवरस (राज्यकाल 222-235 सी ई), की हत्या उसके स्वयं के सैन्य दस्ते ने की थी। साथ ही उत्तराधिकार के स्पष्ट नियमों की कमी के कारण लम्बी अवधि तक आन्तरिक अशांति बनी रही जिसमें कठपुतली शासकों, जिनका राज्यकाल बहुत छोटा रहा और जिसे सैन्य तानाशाही द्वारा नियंत्रित किया गया, का एक क्रम देखने को मिलता है।

तीसरी शताब्दी के बाद साम्राज्य को सैनिक संघर्षों, जो कि बर्बर आक्रमणों के रूप में

लगातार हो रहे थे, और एशिया में सासानिद साम्राज्य की ताकत का सामना करना पड़ा। डायोक्लीशियन ने तीसरी शताब्दी के अंत और चौथी शताब्दी सी ई के आरंभ में जो सैन्य सुधार किए, उसमें **कांसक्रिप्शन** (सेना में अनिवार्य भर्ती) को पुनः आरंभ किया और रोम अपनी सेना के आकार को लगातार बढ़ाता रहा जिससे चौथी शताब्दी सी ई में सैनिकों की संख्या 650,000 हो गई। इस विशाल सेना के रख-रखाव के लिए राजस्व करों की मांग गणतंत्र के अंत में प्रचलित करों की मांग से तीन गुना अधिक थी। ए.एच. एम. जोन्स (1964) के अनुसार, करों की अधिकता ने रोमन साम्राज्य के पतन की गति को तेज़ कर दिया। इसके अतिरिक्त, सेना का विभाजन कर दिया गया जिसमें नागरिक सेना को सीमाओं पर, और अनुभवी सैन्य अधिकारियों को शासक के पास नियुक्त किया गया। साम्राज्य पर इसका प्रभाव उल्टा साबित हुआ।

4.4.2 प्रशासन का संकट

एक छोटे नगर राज्य के प्रशासनिक तंत्र का प्रयोग एक व्यापक साम्राज्य को शासित करने के लिए किया जा रहा था, इस तथ्य ने साम्राज्य के पतन को एक पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष बनाया। प्रशासन का यह संकट सभी स्तर के शासक वर्ग में तेज़ी से फैल रहे भ्रष्टाचार से दुगना हो गया। सत्ता की भूख, लालच और अधिकार की भावना का परिणाम यह निकला कि यह राजनैतिक अस्थिरता का कारण बन गया। अन्य सभी कारणों में, इतिहासकार ब्रायन-वार्ड पर्किंस (2005) तर्क देते हैं कि भ्रष्ट प्रशासन और राजनैतिक अस्थिरता के क्रूर चक्र ने साम्राज्य के पतन में प्रमुख भूमिका निभाई।

रोमन शासक होना हमेशा से ही एक जोखिम भरा काम था, लेकिन दूसरी और तीसरी शताब्दी के दौरान यह लगभग मृत्यु दण्ड का पर्याय बन गया। गृह युद्धों ने साम्राज्य को अव्यवस्था की ओर ढकेला और **प्रिटोरियन गार्ड्स** – रोम में तैनात चयनित टुकड़ी – जब चाहते थे सम्राट की हत्या कर अपनी इच्छानुसार नए शासक पदारूढ़ कर देते थे और उन्होंने एक बार सम्राट के पद की नीलामी भी की। यह राजनैतिक सड़न सीनेट तक भी पहुंच गई थी जो अपने ही फैले हुए भ्रष्टाचार और अक्षमता के कारण शासकों की अतिवादिता को कम करने में असफल रही।

4.4.3 गृह युद्ध

उत्तर रोमन साम्राज्य के लिए गृह युद्ध आम हो गए। डायोक्लीशियन और कांस्टेनटाइन के अपवादों के अलावा अन्य शासकों के राज्यकाल छोटे थे और शक्तिशाली सेनापतियों के साथ लड़ना आम था। इस आन्तरिक कलह का सबसे हानिकारक प्रभाव दूर तक फैले हुए व्यापार तंत्र का पतन था, जो कि मार्गों और राजमार्गों के निर्माण से विकसित हुआ था। जैसे-जैसे परिस्थितियां यात्रा के लिए अहितकर हुईं, लम्बी दूरी के वाणिज्यिक व्यापार का स्थान अधिक स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं ने ले लिया। गृह युद्धों ने मूलभूत रूप से राजनैतिक अफरा-तफरी और प्रभावकारी प्रशासनिक असमर्थनीयता को बढ़ावा दिया।

4.4.4 राजनैतिक विखंडन

क्रमिक विखंडन और प्रशासनिक विभाजन ने भी साम्राज्य को कमज़ोर किया। 258 सी ई के आस-पास दो बड़े प्रदेश मुख्य रोमन साम्राज्य से टूट कर अलग हो गए और स्वतंत्र गैलिक राज्य और पालमरीन राज्य में परिवर्तित हो गए। गॉल, ब्रिटेन और हिस्पेनिया प्रांतों के साथ गैलिक साम्राज्य रोम के उत्तर और पश्चिम की ओर स्थित था। सीरिया, फिलिस्तीन और मिस्र प्रांतों के साथ पूर्व में पालमरीन साम्राज्य स्थित था।

मानचित्र 4.3: 271 सी ई के प्राचीन रोम का मानचित्र
साभार: विकिमीडिया कॉमन्स
स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/File:Map_of_Ancient_Rome_271_AD.svg

284 सी ई में शासक डायोक्लीशियन ने साम्राज्य को प्रशासनिक तौर पर दो इकाइयों में विभाजित कर दिया था – पश्चिमी रोमन साम्राज्य और पूर्वी रोमन साम्राज्य – और नियंत्रण दो प्रदेशों के शासकों के बीच बंट गया था। *टेट्रार्की* अथवा चार का शासन (विस्तार से जानने के लिए **भाग 4.3** देखें) ने प्रत्येक प्रदेश में सैन्य टुकड़ियों की संख्या में वृद्धि की मांग की जिसने नागरिकों पर राजस्व करों का भार बढ़ा दिया। शाही नियंत्रण की वृद्धि की मांग को देखते हुए डायोक्लीशियन के प्रशासनिक सुधारों ने आगे चलकर साम्राज्य के बीस प्रांतों को सौ में विभाजित कर दिया। इससे नौकरशाही का आकार बड़ा हो गया। इस प्रकार नौकरशाही के आकार में वृद्धि होने से एकीकृत रोमन साम्राज्य आगे चलकर और अधिक विखंडित हो गया।

4.4.5 राजनैतिक तंत्र का टूटना

डायोक्लीशियन और कांस्टेनटाइन का सामूहिक राज्यकाल, साम्राज्य के अपरिवर्तनीय पतन को केवल कुछ समय के लिए टाल सका, जो कि तेज़ी से नष्ट हो रहा था। 337 सी ई में कांस्टेनटाइन की मृत्यु के पश्चात् सेना का विद्रोह फूट पड़ा और उसके परिवार के सदस्यों की हत्या कर दी गई। 340 सी ई में कांस्टेनटाइन के जीवित बचे तीन पुत्रों – कांस्टेनटाइन द्वितीय, कांस्टेन्स प्रथम और कांस्टेनटिनस द्वितीय – ने साम्राज्य को अपने बीच बांट लिया लेकिन आपसी संदेह और शत्रुता इसे अंत की ओर ले गई और इसके अंतिम मूर्तिपूजक शासक जूलियन (361-363 सी ई) की मृत्यु ईरानियों से लड़ते हुए हुई। सम्राट वेलेंटीनियन (364-375 सी ई; पश्चिमी रोमन साम्राज्य) और वेलेन्स (364-378 सी ई; पूर्वी रोमन साम्राज्य) ने रोम के बढ़ते हुए संकट को संभालने का असफल प्रयास किया और अगस्त 378 सी ई में वेलेन्स एड्रियानोपल के युद्ध में विसिगाथों से लड़ते हुए मारा गया। एडवर्ड गिब्बन के अनुसार, यह पराजय रोम के इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़ था जिसका पतन अब एकदम निश्चित था।

थियोडोसियस प्रथम (379-395 सी ई) के राज्यकाल के दौरान ब्रिटेन में विद्रोही सेनापति मेग्नुस मेक्सिमस को उसकी सैन्य टुकड़ी द्वारा 383 सी ई में शासक घोषित किया गया और उसने गॉल में ट्रायर नामक स्थान से तीन सुदूर पश्चिमी प्रांतों पर शासन किया। 395 सी ई में फिर से हुए गृह युद्धों के पश्चात् साम्राज्य पूर्व में आर्केडियस और पश्चिम में

ऑनरियस के मध्य विभाजित हो गया। स्टिलिको जो रोमनीकृत वैंडल था और ऑनरियस का प्रतिनिधि भी था, की 408 सी ई में मृत्यु के पश्चात विसिगाथों द्वारा इटली पर लगातार आक्रमण किए गए और 410 सी ई में उन्होंने रोम को लूटा।

4.4.6 पूर्वी साम्राज्य का उदय

आंशिक रूप से पश्चिमी साम्राज्य का भाग्य तीसरी शताब्दी सी ई के अंत में ही तय हो गया था जब शासक डायोक्लीशियन ने साम्राज्य को दो भागों में बांट दिया था – पश्चिमी साम्राज्य जिसकी राजधानी मिलान थी और पूर्वी साम्राज्य जिसकी राजधानी नोवा रोमा थी। 330 सी ई में कांस्टेनटाइन ने शाही राजधानी को नोवा रोमा में स्थानांतरित कर दिया और उस शहर का नामकरण अपने नाम पर कर दिया। यह नगर उस समय से कांस्टैंटिनोपल के नाम से जाना जाने लगा। 395 सी ई में शासक थियोडोसियस ने युक्तिपूर्वक ढंग से यह माना कि साम्राज्य किसी एक के द्वारा प्रशासन चलाने के हिसाब से बहुत विस्तृत है और उसने इसे अपने दोनों पुत्रों में विभाजित कर दिया। साम्राज्य का पूर्व और पश्चिम में यह विभाजन स्थाई सिद्ध हुआ।

अल्पावधि के लिए इस विभाजन ने साम्राज्य को प्रशासन चलाने योग्य बनाया लेकिन समय के साथ इन दो भागों में दूरी आ गयी। पूर्व और पश्चिम संगठित होकर बाहरी आक्रमणों का सामना करने में असफल रहे और दोनों आपस में अक्सर संसाधनों, सैन्य वित्त और नियुक्तियों को लेकर झगड़ते रहे। इस दूरी के बढ़ने से यूनानी-भाषी पूर्वी साम्राज्य समृद्ध होता गया, जबकि लैटिन-भाषी पश्चिम अलग-अलग अनेक संकटों में घिरता चला गया। सबसे महत्वपूर्ण बात, पूर्वी साम्राज्य के मज़बूत होने से बाहरी आक्रमण अब पश्चिम की ओर होने लगे। जबकि कांस्टेनटाइन जैसे शासकों ने सुनिश्चित किया कि कांस्टैंटिनोपल शहर की पूर्ण रूप से किलेबंदी और अच्छी तरह से सुरक्षा हो, इटली और रोम शहर, जिनका अब केवल सांकेतिक महत्व रह गया था, उनको नाज़ुक हालत में छोड़ दिया गया था।

4.5 सैन्य पतन

रोम की अधिकांश ताकत उसकी सेना पर निर्भर थी और उसके द्वारा चिरस्थायी बनाए रखी जाती थी। उत्तरवर्ती सैन्य बल को प्रभावी बनाने के लिए रोमन राज्य ने, अपने आरंभिक चरण से ही सेना के कार्य और विजय को प्रेरक बल के तौर पर शामिल किया। छोटे नगर-राज्य से रोम का एक प्रभावकारी लैटिन संघ बनना और फिर भूमध्यसागर और पश्चिमी विश्व का अद्वितीय नेता बनना, सैन्य शक्ति और कौशल से प्राप्त किया गया था। हालांकि, रोमन ***हॉपलाइट*** सेना (प्राचीन यूनान की शस्त्र सज्जित पैदल सेना), उसकी ***लीजन*** (सैन्य दल) और ***फैलेंक्सेस* (संघटित दल)** के कार्यों ने इसमें फूट के बीज भी बोए। इसके साक्ष्य सुला, मेरियस, पांपेई और गेयस जूलियस सीज़र जैसे सेनापतियों के उत्थान में देखने को मिलते हैं।

पैक्स रोमाना (रोमन शांति) काल शांति लाया लेकिन यह रोमन सेना की सर्वोच्चता के पतन का आरंभ था। क्षेत्रीय अति-विस्तार और सेना के अधिक खर्चों में भी कमी नहीं की जा सकती थी और इसने व्यवस्था को अपाहिज बनाना आरंभ कर दिया था। सैन्य दलों (लीजन) का कमज़ोर होना और भाड़े के सैनिकों की संख्या में वृद्धि ने एक बार फिर सेना की एकता की भावना में कमी लाई और यह इससे इसकी उच्च अति विशिष्टता में कमी आई।

4.5.1 अति-विस्तार और सैन्य अधिव्यय

रोमन सेना रोमन साम्राज्य के विस्तार और सुरक्षा की कुंजी थी और इसका नेतृत्व सम्राट द्वारा किया जाता था। गणतंत्र के पतन के बाद सेना के प्रधानों द्वारा सैनिकों का प्रयोग

राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए किया जाने लगा। उत्तर रोमन साम्राज्य में डायोक्लीशियन ने सेना को पुनःव्यवस्थित किया और सेना में अनिवार्य भर्ती को लागू किया। उत्तर रोमन साम्राज्य में बड़ी संख्या में बर्बर स्वयंसेवक सैनिक सेना में शामिल हो गए और इन बर्बर स्वयंसैनिकों ने अनेक सर्वोत्कृष्ट सैन्य दल उपलब्ध कराए। कांस्टेनटाइन के धर्म परिवर्तन के बाद और मेक्सिेंटियस की मिलवियन ब्रिज पर हार से राज्य के ईसाईकरण के परिणामस्वरूप कांस्टेनटाइन के राज्यकाल में वृहत संस्थागत परिवर्तनों के कारण समस्त साम्राज्य के अभिजात वर्ग के स्वरूप में आमूल परिवर्तन हुए। ईसाई धर्म में नव-परिवर्तित बहुत से लोगों को प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया गया और बाद में उत्तर रोमन राज्य की प्रकृति पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। नव धर्म परिवर्तित ईसाइयों में से अधिकतर पूर्व से नियुक्त किए गए थे और उनमें से कई कांस्टैंटिनोपल में विकसित दूसरी सीनेट के सदस्य बन गए। रोमन साम्राज्य में आधिकारिक धर्म के तौर पर ईसाई धर्म की स्थापना ने राज्य की धर्मनिरपेक्ष संरचना को आघात पहुंचाया। इसमें धार्मिक नौकरशाही एक नया आयाम था और कुछ ही समय में पादरी आधारित यह नौकरशाही रोमन राज्य की धर्मनिरपेक्ष नौकरशाही से कहीं अधिक शक्तिशाली हो गई।

सेना का नियंत्रण *मजिस्टर इक्विटम* के हाथ में था और उनके नीचे *लिमिटांसि* के **ड्यूस** और *कॉमिटेटनेस* के **कॉमिट** थे, सभी विशेष रूप से सैन्य शक्ति रखते थे। वेलेन्टीनियन प्रथम के राज्यकाल (364-375 सी ई) में किले और छावनियों का निर्माण तर्कसंगत युक्ति से किया गया था।

पांचवी शताब्दी के रोमन साहित्यकार, वेजेटियस के लेखों में लम्बे समय से कमज़ोर हो रही सेना में सुधार के लिए आग्रह किया गया है। अपने चरमोत्कर्ष पर रोमन साम्राज्य का विस्तार अटलांटिक महासागर से पूर्वी एशिया की फरात (Euphrater) नदी तक था। इतिहासकारों का मानना है कि इसका विशाल आकार और भव्यता भी इसके पतन के लिए उत्तरदायी था। इतने विस्तृत प्रदेश का प्रशासन चलाने में साम्राज्य को प्रशासनिक और भौतिक संसाधनों की भयानक कमी का सामना करना पड़ा। यहां तक कि उच्च स्तरीय राज मार्गों की व्यवस्था होने पर भी रोमवासी अपनी संपत्ति का प्रबंधन करने के लिए शीघ्रता से संपर्क स्थापित करने में असमर्थ हो रहे थे। रोम को अपनी सीमाओं को स्थानीय विद्रोहियों और बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रखने के लिए अपनी सैन्य टुकड़ियों और संसाधनों को व्यवस्थित करने में काफी संघर्ष करना पड़ा। दूसरी शताब्दी में शासक हेड्रियन (राज्यकाल 117-138 सी ई) को ब्रिटेन में सुरक्षा दीवार, जिसका नामकरण उसके नाम पर किया गया था, बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

दूसरी शताब्दी सी ई के अंत तक और कोई क्षेत्रीय विस्तार नहीं हुआ। वास्तव में रोमन राज्य जैसे-जैसे अंत की ओर बढ़ा लड़खड़ाने लगा, इसने जर्मनिक कबीलों के प्रति सुरक्षात्मक नीति का प्रयोग किया और अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि करने का अनुसरण किया। आगस्टस की मृत्यु के समय रोमन सेना की स्थाई टुकड़ियों की संख्या 250,000 थी जो चौथी शताब्दी में बढ़कर 650,000 सैनिक हो गई। इतनी बड़ी सेना को व्यवस्थित करने के लिए राज्य ने कड़े आर्थिक कानून बनाए जो हालांकि, बड़े कुलीन वर्ग और दास स्वामियों के हित में थे लेकिन इसने लोगों के एक बड़े वर्ग को भी दूर कर दिया।

4.5.2 रोमन *लीजन* (सैन्य दलों) का कमज़ोर होना

एड्रियन गोल्ड्सवर्दी (2009), एक ब्रिटिश सैन्य इतिहासकार, का मत है कि पश्चिमी रोमन साम्राज्य का पतन किसी सामान्य अवनति के कारण नहीं हुआ था बल्कि रोमन *लीजन* (सैन्य दलों) के कमज़ोर होने से हुआ था। एक समय में रोम की सेना जो प्राचीन विश्व में सबकी ईर्ष्या का कारण था, अब अपने पतन के दौरान अवसरवादी गतिविधियों का एक समूह मात्र बनकर रह गई थी। अपने ही नागरिकों से सैनिकों को भर्ती करने में असमर्थ होने के कारण

डायोक्लीशियन और कांस्टेनटाइन जैसे शासकों ने राज्य की सेना की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विदेशी भाड़े के सैनिकों को भर्ती करना आरंभ कर दिया। *लीजन* (सैन्य दलों) की बनावट और प्रकृति के परिवर्तन में सर्वव्यापी आर्थिक पतन ने भी प्रभाव डाला। सर्वश्रेष्ठ टुकड़ियों को राजसी नियंत्रण केंद्रों के पास केंद्रीय क्षेत्रों में तैनात किया गया न कि सीमाओं पर, जो वैसे भी आसानी से भेद्यनीय थीं। चौथी शताब्दी सी ई तक, सरकार ने आर्थिक संकट से उभरने के लिए सैनिकों को वेतन, राशन और कपड़े आदि के रूप में देने का प्रयास किया लेकिन यह *लीजनों* (सैन्य दलों) को कमज़ोर होने से बचा नहीं सका।

4.5.3 भाड़े के सैनिकों का अंतः प्रवाह

सेना की सहायता के लिए विदेशी भाड़े के सैनिकों को लाने की नीति से रोमन *लीजन* (सैन्य दल) जर्मनिक गॉथ्स और अन्य कबीलों से भर गए। हालांकि ये भाग्यशाली सैनिक बर्बर योद्धा सिद्ध हुए, लेकिन इनकी साम्राज्य के प्रति कोई वफादारी भी नहीं थी और शक्ति की लालसा रखने वाले इनके सेनापति अक्सर अपने सैनिकों का प्रयोग रोमन राज्य के विरूद्ध करते थे।

378 सी ई में, मध्य एशिया के खानाबदोश हूणों ने पश्चिम एशिया और पूर्वी यूरोप पर आक्रमण किया, फलतः विसिगॉथ जनजाति की भिड़न्त वर्तमान तुर्की क्षेत्र में रोमवासियों से हुई। इन्होंने रोम पर दबाव डाला कि वह उनके लोगों को साम्राज्य की सीमा के भीतर बसने की अनुमति दे। रोम द्वारा भाड़े के सैनिकों को भर्ती करने की नीति से अंततः जर्मनिक सैनिकों की संख्या रोम की शाही सेना से अधिक हो गई। यह दुखद है कि कई बर्बर जिन्होंने रोम को लूटा था उन्हें रोमन *लीजन* (सैन्य दल) में कार्य करने के दौरान ही सैन्य प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। उदाहरण के तौर पर, विसिगॉथ सैनिकों ने साम्राज्य के विरूद्ध कार्य किया और रोमन नागरिकों को और रोम नगर को 410 सी ई मेंलूटा।

4.5.4 शासन के नियंत्रण में सैन्य भागीदारी की अविश्वसनीयता

पाँचवी शताब्दी सी ई में रोमन राज्य को एक और समस्या का सामना करना पड़ा, वह यह थी कि बल द्वारा शासन के लिए सेना अब बहुत अधिक विश्वसनीय नहीं रह गई थी। कई बार जब सैन्य बलों को विद्रोहियों को कुचलने और आक्रमण के लिए भेजा जाता था तो उनके द्वारा पहले ही उनके साथ लूट के माल को बांटने का अनुबंध तय कर लिया जाता था। पाँचवी शताब्दी सी ई के पूर्वार्द्ध में लगातार विद्रोह होते रहे – इनमें सबसे अधिक सफल मध्य और पूर्वी फ्रांस का बुकांडे विद्रोह रहा जो छठी शताब्दी सी ई में स्पेन तक फैल गया था। बुकांडे के पास स्वतंत्र सैन्य नियंत्रण और कर प्रणाली थी और इसने रोम के साथ संबंधों को तोड़ने की वकालत भी की थी। वास्तविकता यह है कि बुकांडे भगोड़े किसानों द्वारा निरंतर पोषित किया जा रहा था, और सेना की इन्हें नियंत्रित करने में अयोग्यता या इनके अस्तित्व को बने रहने देना गहरी संरचनात्मक कमियों की ओर संकेत करता है। पहला, यह *लैटिफंडियों* और सर्वहारा वर्ग (*proletarii*) के मध्य लगातार संघर्ष की ओर संकेत देता है और दूसरा, राज्य और उसकी सेना, जो उसकी सहयोगी थी, उनके मध्य गहरी होती खाई थी।

बोध प्रश्न-1

1) *टेट्रार्की* के विशेष संदर्भ में डायोक्लीशियन के राज्यकाल के दौरान हुए विकास का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

2) उत्तर रोमन साम्राज्य में राजनैतिक अराजकता की ओर ले जाने वाले मुख्य घटक क्या थे? किन्हीं चार घटकों के बारे में बताइए।

....

....

....

....

....

3) उत्तर रोमन साम्राज्य में अधिव्यय और भाड़े के सैनिकों के अंतः प्रवाह ने सैन्य संस्था को किस प्रकार प्रभावित किया? व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

4.6 आर्थिक संकट

चौथी शताब्दी सी ई में रोमन राज्य की पुनःव्यवस्था से शहरी विकास में एक अस्थाई विकास हुआ और सोने के सिक्के जारी कर मुद्रा में स्थायित्व को फिर से बहाल किया गया। लेकिन दोनों ही प्रतिलाभ सीमित थे। शहरी विकास मुख्यतः नई नियुक्त की गई सेना और प्रशासनिक क्षेत्रों में केंद्रित था। शासकों ने इस विकास को नियमित किया और उत्तर रोमन साम्राज्य में मिलान, सार्डिका और सर्वाधिक महत्वपूर्ण कांस्टैंटिनोपल प्रमुख शहरी केंद्र बन गये। पैरी एंडरसन (1974) के अनुसार, उत्तर रोमन साम्राज्य में सभी प्रांतों में शहरी व्यापार और उद्योग का तेज़ी से पतन हो रहा था। उत्तर रोमन साम्राज्य में राज्य ने कर वृद्धि की नीति का अनुसरण किया। यह नीति पूर्व में सफल रही लेकिन साम्राज्य के पश्चिमी भाग में इसने संकट उत्पन्न किया।

सेना के प्रसार और प्रबंधन के लिए अधिक कर लागू करने की आवश्यकता थी। अधिक धन एकत्र करने और तीव्रता से बढ़ते हुए खर्चों को संतुलित करने के लिए पूर्ववर्ती शुद्ध चांदी के सिक्कों में कम मूल्य की धातु की मिलावट की गई, जिससे मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिला। सिक्कों की ढलाई में लगातार गिरावट ने आर्थिक संकट और अतिमुद्रास्फीति उत्पन्न कर दी। सेना का बढ़ता हुआ व्यय कृषि क्षेत्र की कमर तोड़ने का मुख्य कारण सिद्ध हुआ। करों में अत्यधिक वृद्धि और कठोर कर एकत्रण ने अनेक किसानों को उनके खेत त्यागने के लिए मजबूर कर दिया। भूमि परती पड़ी रह गई और शहरों की ओर पलायन ने, जिसने शहरी निर्धन वर्ग में वृद्धि की, ने शहरी केंद्रों पर अत्यधिक भार डाला जो अक्सर इस बढ़ती हुई जनसंख्या को पोषित करने में अक्षम थे।

4.6.1 पतनोन्मुख अर्थव्यवस्था, उच्च मुद्रास्फीति और प्रवासी भूस्वामी

हालांकि रोम जिस तरह बाहरी ताकतों के आक्रमणों से त्रस्त था, उसके साथ ही वह

आंतरिक आर्थिक संकटों से भी जूझ रहा था। लगातार होने वाले युद्ध, दमनकारी कर और मुद्रास्फीति ने अमीर और गरीब के बीच की खाई को और बढ़ा दिया था। रोम वासियों की कोई बजट प्रणाली नहीं थी और इस प्रकार उन्होंने अपने उपलब्ध संसाधनों का अपव्यय किया। 'स्थिति और दयनीय हो गई जब तीसरी और चौथी शताब्दी में नवीन विजित क्षेत्रों ने संसाधनों अथवा लूट के रूप में शायद ही कोई आर्थिक संसाधन जुटाये। हालांकि गणतंत्र के उत्तरार्द्ध में इटली में असीम मात्रा में धन की बरसात हुई जिसका बाद में उपयोग साम्राज्य में खरीद-फरोख्त और परियोजनाओं को पूरा करने के लिए किया गया था। अंततः एक अस्थिर और लापरवाह सरकार, शाही ऋणों से उपजे खर्चों और प्राप्तियों को आधुनिक उपायों का सहारा लेकर संतुलित नहीं कर सकी। अतः सरकार ने उस अर्थव्यवस्था से अधिक मात्रा में करों को वसूल करना जारी रखा और बल का प्रयोग करना पड़ा। यह अर्थव्यवस्था अगतिशील थी और वास्तव में संभवतः पतन की ओर जा रही थी' (www.cupola.gettysburg.edu/cgi/viewcontent.cgi? article=1011 &context= eontem porary-sec1)।

साम्राज्य की अर्थव्यवस्था कुछ नया उत्पादन करने के बजाए मौजूदा संसाधनों के दोहन पर आधारित अथवा लूट की अर्थव्यवस्था (raubwirtschaft) थी। आरनॉल्ड जे. टोयन्बी (1965) जैसे इतिहासकार रोमन साम्राज्य को पूर्णरूप से सड़ी हुआ शोषण करने वाली व्यवस्था के रूप में वर्गीकृत करते हैं जिसमें तर्कसंगत कर नीतियों की कमी थी। उनका तर्क है कि साम्राज्य कभी भी इससे अधिक लम्बे समय तक जीवित नहीं रह सकता था जितना वह बिना मूल आर्थिक सुधारों के रहा जिन्हें कोई भी शासक लागू नहीं कर सका।

शोषक राजस्व एकत्रण प्रणाली और अनुपस्थित भूस्वामित्व की प्रथा ने पहले से ही आर्थिक संकट का सामना कर रहे उत्तर रोमन साम्राज्य का आर्थिक संकट और अधिक बढ़ा दिया। रोमन राज्य की कार्यप्रणाली के विकास और संवर्धन के लिए डायोक्लीशियन और कांस्टेनटाइन ने अधिक केंद्रीकरण और अत्यधिक करारोपण की नीति को अपनाया। यह नीति पूर्व मे तो सफल रही लेकिन पश्चिम में इसने संकटों को और बढ़ा दिया। कुलीनतंत्र ने बढ़ते हुए करों का भार किसानों, *कोलोनी,* (पट्टेदार कृषक) शिल्पकारों और छोटे व्यापारियों पर डाल दिया, जिसने अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों पर विपरीत प्रभाव डाला।

स्थानीय स्तर पर, कर एकत्रण ***डिक्युरिआनों*** (***decuriones***) या ***क्युरियलों*** (***curiales***) के हाथों में था, जो कि स्थानीय कुलीन वर्ग का हिस्सा थे और समय के साथ ये वंशानुगत समूह बन गए। इन्होंने विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों से सांठ-गांठ करके अपनी भूमि का न्यूनतम कर मूल्यांकन कराया ताकि वह करों से बच सके। वहीं दूसरी ओर छोटे भूस्वामियों की भूमि का अक्सर अधिक मूल्यांकन किया जाता था। अनुपस्थित प्रवासी भूस्वामियों ने कम विशेषाधिकार वाले वर्ग से अवैध करों को वसूल कर अपने करों की देयता को उनके ऊपर डाला। ए.एच.एम. जोन्स (1964) का मत है कि पश्चिमी रोमन साम्राज्य में भ्रष्ट और अयोग्य अभिजात वर्ग प्रशासनिक और राजस्व के मामलों में राज्य की अध्यक्षता कर रहा था। जब ये शासक की इच्छा को अपने अनुसार सुनिश्चित नहीं कर सके तो वे असहयोग करने लगे और वापस अपनी सत्ता के आधार ग्रामीण क्षेत्रों में चले गए।

4.6.2 निर्वाह का संकट

साम्राज्य का धीरे-धीरे ग्रामीणीकरण हो रहा था। लेकिन ग्रामीण परिवेशों में दूरगामी परिवर्तन हो रहे थे और नई उत्पादन प्रणाली प्रचलन में आ रही थी। प्राचीन काल के उत्पादन की दास पद्धति राजनैतिक और सैन्य प्रसार की व्यवस्था से जुड़ी हुई थी। उत्तर रोमन साम्राज्य में अब शाही सीमाओं का और अधिक विस्तार रूक गया था। इस प्रकार भूस्वमियों ने दासों को भूमि के आश्रित पट्टेदारों में परिवर्तित कर दिया। राज्य द्वारा ज़बरदस्ती राजस्व की वसूली

से बचने के लिए छोटे भूधारकों के गांव, और स्वतंत्र पट्टेदारों ने राज्य के करों के बोझ और कॉन्सक्रिप्शन (अनिवार्य सैन्य सेवा) से सुरक्षा के लिए भूअधिपतियों (लॉर्ड) के हाथों अपनी स्वतंत्रता खो दी और उनकी आर्थिक स्थिति भूतपूर्व दासों के जैसी हो गई। इस तरह दूसरी शताब्दी सी ई से स्वतंत्र किसानों ने अपनी स्वतंत्र स्थिति को खोना आरंभ कर दिया और वे अधिपतियों (लॉर्ड) की भूमि से बंध गए। उत्तर रोमन साम्राज्य के शासकों– डायोक्लीशियन से लेकर वेलेंस और आर्केशियस तक – ने यह घोषित किया कि कर एकत्रण के लिए पट्टेदार अपने गांवों (भूस्वामियों) से बंधे हुए हैं। तत्पश्चात् चौथी और पांचवी शताब्दी में आश्रित पट्टेदारों (***कोलोनी***) पर अधिपतियों की न्यायिक शक्ति बढ़ गई। लेकिन इन परिवर्तनों से भी दासप्रथा समाप्त नहीं हुई और उत्तर रोमन साम्राज्य में राज्य की संरचना अभी भी दासप्रथा पर आधारित थी और यह स्थिति पश्चिमी रोमन साम्राज्य के अंत तक लगातार बनी रही। शहरी शिल्प उत्पादन में दासों की भूमिका में गिरावट आने लगी, लेकिन फिर भी वे घरेलू काम-काज के लिए अभिजात वर्ग के लिए रीढ़ की हड्डी बने रहे।

उत्तर रोमन साम्राज्य की संपूर्ण आर्थिक व्यवस्था आश्रित ग्रामीण उत्पादक, भूअधिपति और राज्य के संबंधों पर आधारित थी। उत्तर रोमन साम्राज्य में सेना और नौकरशाही तंत्र का विकास बहुत विस्तृत हो गया और उत्तर रोमन साम्राज्य द्वारा अपने विस्तृत राज्य तंत्र की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक प्रकार के कर लागू किए गए। नागरिकों को करों का भुगतान अवैतनिक सैन्य सेवा के रूप में करना पड़ रहा था और उन्हें युद्ध के लिए अपने हथियार स्वयं खरीदने पड़ते थे। मार्क्स के अनुसार, 'अभिजात वर्ग ने युद्धों द्वारा सर्वहारा वर्ग को सैनिक के तौर पर कार्य करने के लिए विवश करके नष्ट कर दिया... और उन्हें दरिद्र बना दिया'। सामान्य नागरिक को राज्य के लिए अन्य प्रकार की अनिवार्य सेवाएं भी देनी पड़ती थीं। इन सेवाओं को अंगेरिया के नाम से जाना जाता था। इस प्रकार के कार्यों के लिए श्रमिक वर्ग को आधिकारिक प्रयोजनों जैसे भार उठाना, इमारतों का निर्माण कार्य और मार्गों के निर्माण के लिए बिना मज़दूरी के रखा जाता था।

इतिहासकारों में सामान्य एकमतता है कि तीसरी शताब्दी से भूमि परित्याग की प्रवृत्ति के बढ़ने, गृह युद्धों, अकालों और बार-बार फैलने वाली प्लेग महामारी के कारण जन आबादी की बहुत बड़ी संख्या जीवन निर्वाह के संकट का सामना कर रही थी। आबादी में कमी और जनसंख्या के पलायन ने कृषि श्रमिकों की संख्या में और अधिक कमी पैदा की।

जहां सीनेटर और उनके जैसे वर्गों के लोगों को कर में छूट का विशेषाधिकार प्राप्त था, वही बड़े भूअधिपति अपनी भूमि का मूल्यांकन कम कराने में सफल रहे। छोटे भूस्वामियों की भूमि का मूल्यांकन अक्सर अधिक किया जाता था और उन्हें भारी कर वहन करना पड़ता था। यहां तक कि बड़े भूअधिपतियों की अधिकतर भूमि सीमांत क्षेत्र में थी, जो कि कर के अनुपात के हिसाब से आय के साधन के बजाय बोझ बन गई। अतः भूअधिपतियों ने इस बढ़े हुए कर के दबाव को लगान की वसूली में वृद्धि कर उसका बोझ किसानों के ऊपर डाल दिया। कर के बोझ के साथ-साथ सामुहिक-दासप्रथा ने उत्पादन की संपूर्ण प्रक्रिया को बाधित किया और परिणामस्वरूप, जीवन निर्वाह अपने आप में एक संघर्ष बन गया।

4.6.3 शिल्प उत्पादन और लम्बी-दूरी के व्यापार का पतन

साम्राज्य का निर्माण और रोमनीकरण तीन स्तरों पर किया गया था। इसमें बेहतर संचार प्रणाली, अनेक इटैलियन फसलों की खेती, और अतिरिक्त कृषि उत्पादों (अनाज, अंगूर और तेल) को यूरोप के अन्य भागों में निर्यात करना सम्मिलित था। इन घटनाक्रमों के साथ ही रोमन वस्तुओं की मांग में गिरावट आई, विशेषकर फ्रांस में। रोम से आयात की गई वस्तुएं इटली में बनाई गई वस्तुओं से सस्ती थीं। रोस्टोवज़ेफ (1926) के अनुसार, अधिक करारोपण के भार और दासों की ऊंची कीमतों ने शिल्प उत्पादन में गिरावट पैदा की और प्रतिस्पर्धा

के कारण वस्तुओं की कीमतों में गिरावट आने लगी। अतः स्थानीय उत्पादन का संगठन अब अधिक लाभकारी नहीं रह गया था।

लगभग इसी समय पर अर्थव्यवस्था ने व्यापार में पतन का अनुभव किया, विशेषकर लम्बी दूरी के व्यापार में। रोमन समाज की संरचना बहुत अधिक शोषण करने वाली थी और तीसरी शताब्दी सी ई में सीनेटोरियल कुलीन वर्ग की समृद्धि उनके पूर्वजों की तुलना में पहली शताब्दी सी ई से लगभग पांच गुना अधिक थी। उनके दिखावटी उपभोग और आडंबरपूर्ण जीवनशैली ने विलासपूर्ण वस्तुओं के व्यापार को, विशेषकर पूर्व से, बनाए रखा था। रोम ने भूमध्यसागरीय जगत के एकीकरण को हासिल किया और व्यापक समुद्री व्यापार समुद्रतटों के किनारे जारी रहा। रोम में ओस्तिया और पोर्टस बंदरगाह के रूप में कार्य कर रहे थे और उनकी समृद्धि और भाग्य नगर से जुड़ा हुआ था। हालांकि, जैसे ही राजनैतिक अव्यवस्था और आर्थिक संकट ने रोम को चोट पहुंचाई, लम्बी दूरी के व्यापार को झटका लगा। और हालांकि रोम का पतन हो रहा था, एलेक्ज़ेंड्रिया और एंटिओक समृद्धि की ओर बढ़ते रहे और कांस्टैंटिनोपल चौथी शताब्दी सी ई में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच गया।

4.6.4 मौद्रिक दबाव में वृद्धि, वित्तीय संकट और नैसर्गिक अर्थव्यवस्था का पुनरागमन

दूसरी शताब्दी के बाद के काल में सैन्य अराजकता फैली, साथ में तीसरी शताब्दी से अनेक विद्रोह भी शुरू हो जाते हैं। राजनैतिक अराजकता का यह काल अनेक मिथ्या दावा करने वालों द्वारा अपने अनवरत युद्धों के खर्चे को पूरा करने के लिए मनमानी कर उगाही के थोपे जाने का साक्षी है। वर्ष 238 सी ई में सात अलग-अलग शासकों ने सिक्के जारी किए थे और अंततः रोम और उसके केंद्रीय करारोपण का विरोध कर रहे आर्थिक रूप से शक्तिशाली प्रांतों में मौद्रिक अराजकता हुई। इस सबका संयुक्त प्रभाव प्रत्यक्ष उत्पादकों पर आर्थिक दबाव में वृद्धि, जिससे कृषि-क्रम पर प्रभाव पड़ा और जिसके परिणामस्वरूप संपूर्ण उत्पादन प्रक्रिया अव्यवस्था की ओर मुड़ गई।

राज्य के बढ़ते हुए दबाव ने मौद्रिक संकट पैदा किया जिसने मुद्रा में अभूतपूर्व अस्थिरता को बढ़ावा दिया। दूसरी शताब्दी से राज्य का युद्धों के लिए अधिव्यय और तीसरी शताब्दी में अनेक सैन्य विफलताओं ने मुद्रास्फीति की गति को तेज़ किया। रोमन राज्य ने अपना राजस्व सोने और चांदी में एकत्र किया, न कि तांबे और कांस्य में। जैसे-जैसे मुद्रास्फीति बढ़ती रही, निम्न स्तरीय धातुओं जैसे तांबा और कांस्य की मात्रा में वृद्धि होती रही। कांस्टेनटाइन के राज्य काल में सोने की मुद्रा स्थिर हो गई थी लेकिन तांबे की मुद्रा अब भी अस्थिर बनी रही। इस मौद्रिक द्वैतवाद के कारण मिलावटी मुद्रा के द्वारा अच्छी मुद्रा प्रचलन से बाहर कर दी गई, और सोने-चांदी के सिक्कों को व्यापार और वाणिज्य में प्रयोग करने की बजाए घरों में उनका संचय किया जाने लगा। व्यापार का लेन-देन प्रभावित हुआ और सिक्कों के नवीनीकरण का नतीजा आम तौर पर और अधिक संचय के रूप में हुआ।

साम्राज्य के अंत की ओर मुद्रास्फीति की दर अत्यधिक थी। इस काल में वहां आर्थिक और जनसांख्यिकीय संकट था। डायोक्लीशियन के सुधार प्रयासों के बावजूद वहां बहुत अधिक मुद्रास्फीति थी जैसा कि, एडिक्ट आफ प्राईसेस के नाम से जाने जानी वाली, कीमतें स्थिर करने के आदेश पत्र से पता चलता है। मिस्र में 301 सी ई में एक सोलिडस (सोने की मुद्रा) 4000 ड्रेक्मा के मूल्य के बराबर थी और 4000 सी ई में यह 130 मिलियन ड्रेक्मा के बराबर हो गई। इस अवमूल्यन ने संकट को बढ़ाया जिसकी छाया कीमतों में वृद्धि के रूप में दिखाई देती है, जिसने मौद्रिक अर्थव्यवस्था को छोड़कर वस्तु विनिमय अर्थव्यवस्था की ओर वापस मुड़ने के लिए बाध्य किया। धीरे-धीरे बाज़ार ने छः ड्रेक्मा के बराबर गेहूँ की एक मात्रा निर्धारित की और अन्य ऐसे रूपान्तरणों ने पूरी मौद्रिक प्रचलन प्रक्रिया को अस्थिर कर दिया।

आर्थिक अव्यवस्था और राज्य के बढ़ते हुए खर्चों से राज्य को असामान्य दबाव का सामना करना पड़ा। वस्तुओं के रूप में कर – गेंहूँ और जैतून का तेल – लगाए जाने लगे और यहां तक कि सैनिकों को वेतन भी इसी रूप में दिया जाने लगा। निश्चित रूप में यह 'प्राकृतिक अर्थव्यवस्था' की ओर वापस जाना था। यद्यपि उच्च अधिकारियों और सेनापतियों को अब भी नकद में वेतन दिया जा रहा था, मुद्रास्फीति ने इनकी जीवनशैली को प्रभावित किया। अनियंत्रित मुद्रास्फीति उद्योग और शिल्प उत्पादन को वास्तव में पतन की ओर ले गई। आक्रमणकारी सेना को वेतन देने, और रोम से रेशम मार्ग (सिल्क रूट; Silk Route) और स्पाईस रूट (Spice Route) के द्वारा चीन और भारत से पूर्वी व्यापार के लिए सोने के प्रवाह को बनाए रखने के लिए धन की आवश्यकता ने मौद्रिक समस्या को और अधिक जटिल बना दिया। अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्र गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हुए और इटली का महत्व जल्द ही वाणिज्य के केंद्र के रूप में समाप्त हो गया।

4.7 सामाजिक उथल-पुथल

अमीर और गरीब को बांटने वाली विभाजन रेखा, जो सामाजिक संरचना का आधार है, समय के साथ स्थिर हो गयी और अन्य समस्याओं ने रोमन समाज में सामाजिक तनाव और अलगाव को बढ़ा दिया। आरंभ की समस्याएं सामाजिक न्याय के साथ-साथ समावेशन और नागरिकता प्रदान करना, के साथ साम्राज्य का विस्तार सुलझाए न जा सकने वाले विवाद रोम तक ले आया। कुलीन वर्ग का दिखावटी उपभोग उन्हें आम जन, जिनके शोषण पर उनकी जीवनशैली निर्भर थी, से अलग करता था। तीसरी शताब्दी सी ई से जनसंख्या में गिरावट और सेना और नौकरशाही में बढ़ते हुए पदों के कारण निम्नवर्ग के लिए राज्य की जटिल संरचना को पोषित करना मुश्किल हो गया और दंगे और लूट आम हो गए थे। यह सब घटनाक्रम एक साथ चल रहा था, जिसके परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार फैला, सत्ता का दुरूपयोग शुरू हुआ और रोम की नागरिक भावना लुप्त होने लगी। ईसाई धर्म जो एक उत्पीड़ित धर्म था अब एक प्रमुख धर्म के रूप में उभरा और इसका धार्मिक संगठन अक्सर सहयोजित होकर राज्य के सदृश्य हो गया।

रोमन समाज को परिभाषित करने वाला स्पष्ट विभाजन आरंभ से प्रत्येक क्रमिक चरण में पुनर्निर्मित हुआ। उत्तर रोमन साम्राज्य के समय संपन्न वर्ग अश्वरोही वर्ग (Equestrian) था, जो साम्राज्य के सभी भागों में सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक समृद्धि का आनंद उठा रहा था। प्रांतों में भी पुरुषों को रोमन नागरिकता और अश्वरोही दर्जा प्रदान करना प्रथा बन गई थी और इसके बदले में वे राज्य के वफादार बन जाते थे, उन्हें नागरिक और सैन्य प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया जाता था। अन्य सामाजिक समूह जिनका उच्च सामाजिक दर्जा था उनमें भूस्वामी, दुकानदार, व्यापारी, व्यवसायी और उच्च-पदासीन अधिकारी शामिल थे। इस अवधि के दौरान पूर्व में उच्च नौकरशाही एक नए वंशानुगत अभिजात वर्ग के तौर पर उभरी।

निम्न वर्ग के लोग उच्च वर्ग को सेवा प्रदान करने वाले बने रहे जैसे किसान, कुम्हार, अध्यापक, मनोरंजन करने वाले, निशुल्क श्रमिक और वेश्याएं भी। कुशल कारीगर जैसे कि धातु-कर्मी, नानबाई और ऊन का काम करने वाले व्यापार संघ या *कॉलेजिया* में संगठित थे, जिसने आर्थिक, सामाजिक और कभी-कभी अर्ध-राजनैतिक भूमिका भी निभाई। इसके अतिरिक्त, वहां दासप्रथा थी जो स्वयं आंतरिक विरोधाभास का सामना करते हुए अर्ध-दासप्रथा (*कोलोनेट*) में परिवर्तित हो रही थी। अशांति के काल ने पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन को बढ़ावा देते हुए वर्ग विभाजन को तीव्र कर दिया और जैसे ही सरकार आर्थिक बर्बादी को नियंत्रित करने के लिए अधिक निरंकुश हुई, व्यवसाय और पद वंशानुगत बन गए।

इस प्रकार, आर्थिक संकट का संबंध संपदा के असमान वितरण से था। जैसे ही निचले वर्ग के किसानों का दर्जा समाप्त हुआ, उनकी स्थिति तेज़ी से बढ़ते हुए समूह *कोलोनी* अथवा निर्भर खेतीहरों जैसी हो गई। किसान भूअधिपतियों के पूरी तरह अधीन हो गए और अब कानूनी रूप से स्वतंत्र किसान और दास के बीच मुश्किल से ही कोई अंतर रह गया था। किसान और दास एकसमान गरीब वर्ग़ में मिल गए और दूसरी शताब्दी से अनेक किसान विद्रोह हुए, जिन्होंने किसानों के तौर पर नहीं बल्कि बेदखल के रूप में दासों के साथ हाथ मिलाकर विद्रोह किया। यह बात ध्यान देने योग्य है कि रोमन साम्राज्य का गौरव कृषकों पर लगाए जाने वाले भूमि कर पर आधारित था। मेटर्नस, जिसने 186 सी ई में सेना को छोड़ दिया था, ने स्पेन और फ्रांस में बड़े स्तर पर विद्रोह किया। स्रोतों में इस विद्रोह को इस प्रकार वर्णित किया गया है कि, 'यह असंख्य बदमाशों, भगोड़े दासों और निराश पुरूषों का जमावड़ा था और जो अन्य सभी बगावतों की तरह भारी सैन्य दमन की नियति को प्राप्त हुए'।

4.7.1 जनसंख्या में गिरावट

पहले से ही क्षीण होती हुई रोमन जनसंख्या को जर्मेनिक आक्रमणकारियों ने और भी क्षीण कर दिया। प्लेग के कारण जनसंख्या में गिरावट और कुल मिलाकर जन्मदर में गिरावट से जनसंख्या में कमी होती रही जो कि सेना के आकार को बढ़ाने में बाधा डाल रही थी। दूसरी और तीसरी शताब्दियों के दौरान दो भिन्न प्लेगों ने लाखों रोम वासियों को खत्म कर दिया। पहला, एंटोनिन प्लेग का प्रकोप 165 सी ई से लगभग 186 सी ई तक रहा जिसमें लगभग 50 लाख रोमवासी मारे गए। ऐसा विचार है कि सम्राट मार्कस ऑरेलियस की मृत्यु प्लेग के कारण हुई थी, इसलिए इस प्लेग का नाम एंटोनिन उसके परिवारिक नाम एंटोनियस के ऊपर रखा गया था। फिर 251सी ई से लगभग 266 सी ई तक चेचक का आक्रमण हुआ जिसे साइप्रियन प्लेग कहा गया जिससे हज़ारों लोगों की मौत हो गई। बीमारियों ने सैनिकों के साथ-साथ किसानों को भी बड़ी संख्या में कम किया (बंडी, केथरीन 2011:2)।

साम्राज्य में जनसंख्या ह्रास के और भी कारण बड़े स्तर पर मौजूद थे जैसे दासप्रथा की मौजूदगी और उसका विस्तार जिसमें दासों को प्रजनन की प्रक्रिया का अधिकार नहीं था। जैसे-जैसे साम्राज्य अंत की दिशा की ओर मुड़ा, जनसंख्या प्रांतों की ओर स्थानांतरित होती गई और करारोपण के दबाव और साहूकारों से धन बचाने के लिए भी गांवों से शहरों की ओर आंतरिक प्रवास होने लगा। इस सामाजिक आर्थिक कारणों के साथ-साथ अन्य मुद्दा वीरान होते हुए खेतों से था जो समुद्र के पास स्थित क्षीणप्राय दलदली क्षेत्रों के विकास और यहाँ मलेरिया के प्रकोप के फैलने से संबंधित था।

साम्राज्य की प्रादेशिक सीमा के विस्तार और उससे संबंधित सैनिकों और नौकरों की संख्या में वृद्धि से बड़ी संख्या में लोग उत्पादन की प्रक्रिया से बाहर हो गए। अनुत्पादी लोग जैसे सीनेटर, नौकरशाह, सैनिक और यहां तक कि पादरी भी – क्योंकि राज्य भी चर्च से जुड़ गया था – इन सबकी संख्या में वृद्धि होने से राजकोष पर लगातार दबाव और किसानों से अधिक राजस्व की मांग बढ़ी। ए.एच.एम. जोन्स का मानना है कि व्यापार और वाणिज्य के पतन पर अधिक बल नहीं देना चाहिए, बल्कि यह अन्य सभी घटकों सहित उत्पादन की अव्यवस्था और इसके साथ ही अनुत्पादी वर्गों का रख-रखाव था जो रोम को धीरे-धीरे पतन के गर्त तक ले गया। रोम में 200,000 शहरी गरीबों और कांस्टैंटिनोपल में 80,000 लोगों को निःशुल्क गेहूँ बांटना भी राज्य के लिए उस समय एक दुविधा का विषय बना हुआ था, विशेष तौर पर उस समय जब उत्पादन में निष्क्रियता और गिरावट हो रही थी। पश्चिमी साम्राज्य की राजधानी रोम की परजीवी प्रकृति ने राज्य के संसाधनों को छीनने वाले अनुत्पादी लोगों की समस्या को पैदा किया जो बदले में नगण्य संसाधन प्रदान कर रहे थे।

4.7.2 जन भावना में गिरावट

चौथी शताब्दी सी ई तक रोमन राज्य समृद्ध जनसंख्या से पहचाना जाता रहा था। जैसा कि उत्पादन की दास पद्धति की मशीनरी पूर्ण रूप से नौकरशाही नियंत्रण पर निर्भर थी, अत्यधिक नौकरशाहीकरण ने भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरूपयोग और राजस्व के दुरूपयोग को बढ़ावा दिया। तीसरी शताब्दी से साम्राज्य की इस सार्वजनिक भावना में गिरावट स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

अन्य संबंधित कारण चर्चों का तीव्र विकास था – राज्य के प्रति इसकी उदासीनता और मोक्ष का उपदेश। एडवर्ड गिब्बन ने सर्वप्रथम यह तर्क दिया कि रोम का पतन ईसाई धर्म के प्रसार के साथ परस्परानुबंधित था, और कुछ का तर्क है कि साम्राज्य के पतन में इस नए धर्म के उदय ने योगदान दिया। 313 सी ई में मिलान के एडिक्ट (Edict of Milan) में ईसाई धर्म को वैध कर दिया गया और 380 सी ई में ईसाई धर्म राज्य का आधिकारिक धर्म बन गया। इन निर्णयों ने शताब्दियों के उत्पीड़न को समाप्त कर दिया था, लेकिन इन्होंने शायद पारंपरिक रोमन साम्राज्य के सामाजिक मूल्यों को भी नष्ट कर दिया था। ईसाई धर्म ने रोम के बहुदेववादी धर्म, जिसमें शासक का दर्जा दैवीय था और उसके प्रति निश्चित सम्मान और वफादारी की आशा की गई थी, को विस्थापित कर दिया। इसने राज्य के गौरव की बजाय एक ही देवता को महत्व दिए जाने की ओर ध्यान केंद्रित किया, और अलौकिक मुक्ति की इच्छा पर बल दिया।

इसी बीच, पादरी और चर्च के अन्य अधिकारियों ने राजनैतिक मामलों में तेज़ी से भूमिका निभानी शुरू कर दी जिससे आगे चलकर प्रशासन में कठिनाइयां पैदा हुईं। गिब्बन और उनके समर्थकों ने व्यापक रूप से इस सिद्धांत का समर्थन किया, लेकिन इसका व्यापक खंडन हुआ। हालांकि ईसाई धर्म के प्रसार ने संभवतः रोमन नागरिकता गुणों पर नियंत्रण में थोड़ी बहुत भूमिका अदा की, लेकिन अधिकतर विद्वान आज यह मानते हैं कि ईसाई धर्म का प्रभाव प्रशासनिक, आर्थिक और सैन्य कारणों के प्रभावों की तुलना में बहुत कम था।

4.7.3 ब्रिगैंडेज़ (डकैती, लूटमार)

सामाजिक विद्रोह 390 के दशक में अपने चरम पर पहुंच गए थे। किसानों के विद्रोहों के अलावा, उत्तर रोमन साम्राज्य में बड़े स्तर पर डकैती आम बात थी। यह सामाजिक असंतुलन और विरोध की एक प्रभावशाली अभिव्यक्ति थी। बुल्ला की ब्रिगैंडेज़ (205-207 सी ई) विकृत सामाजिक विरोध का एक विशिष्ट उदाहरण था, जहां सामाजिक न्याय पाने के लिए भागे हुए दास और शाही स्वतंत्र दास बड़ी संख्या में सामाजिक न्याय की आशा में अर्ध-औपचारिक सैन्य दल के रूप में एकत्रित हुए। ये स्थानीय समुदायों के सहयोग से फले-फूले और वर्षों तक यह पकड़े जाने से बचे रहे। विद्रोह का एक और अन्य तरीका यह भी था कि जनसमुदाय का आक्रमणकारियों से बचने के लिए एक साथ पलायन करना, और यहां तक कि चौथी शताब्दी से किसानों ने अपने शोषण और दुखों के मुक्तिदाता के रूप में आक्रमणकारियों का स्वागत किया। इन्होंने इनका अनुकरण करने के प्रयास किए। 285-286 सी ई में, ग्रामीण आबादी ने राजतंत्र के विरूद्ध विद्रोह किया था। बगाडे (Bagaudae; भगोड़े किसान ब्रिगैंड्स) विद्रोह की याद आने वाले अनेक वर्षों तक किसानों में सजीव रूप में जीवित रही। 407 सी ई में 'बगाडे' के नाम से एक और अन्य शक्तिशाली विद्रोह हुआ।

4.7.4 अभिजात वर्ग का ग्रामीण क्षेत्र की ओर विस्थापन

जैसा कि साम्राज्य विभिन्न तनावों और आपदाओं के प्रभावों का सामना कर रहा था, शाही नगरों और शहरों को भी कठिन समय से गुजरना पड़ा। रोमन कुलीन वर्ग – अभिजात वर्ग (Paticians), विशिष्ट जन (Optimates), घुड़सवार सेना (Equites) और घुड़सवार (Equestrians)

आदि विभिन्न वर्ग के रूप में पहचाने जाते थे – जिन्होंने अपनी संपत्ति को ग्रामीण परिवेश और कृषि से प्राप्त की थी, वे शहरों में निवास करते थे, और शहर की विलासिता और मनोरंजन का आनंद उठाते थे। शहर प्रशासनिक और आर्थिक गतिविधियों के केंद्र भी थे, विशेषकर व्यापार और विशिष्ट शिल्प उत्पादन के। अभिजात वर्ग की समृद्धि, प्रतिष्ठा और शक्ति की अभिव्यक्ति उनकी उत्कृष्ट उपभोग (conspicuous consumption) की जीवनशैली में अभिव्यक्त होता था जिसका आनंद अमीर वर्ग उठा रहा था और यह उन वस्तुओं और सेवाओं द्वारा संपन्न था जिनकी आपूर्ति व्यापारियों और शिल्पकारों द्वारा की जाती थी। रोमन साम्राज्य के अंत के दशकों में लम्बी दूरी का व्यापार और शिल्प उत्पादन नष्ट हो गए थे। बार-बार होने वाले आक्रमण या आक्रमणों के डर ने असुरक्षा पैदा की और जब शासकों की चुनाव प्रक्रिया को नियंत्रित करने में यह अभिजात वर्ग अयोग्य हो गया तो यह अभिजात वर्ग अपने ग्रामीण परिवेश में चला गया जहां वे निर्विरोध रूप से लॉर्ड, मास्टर (स्वामी) और संरक्षक थे। इस प्रवृत्ति ने शहरों को बाहरी आक्रमणों के खतरों के प्रति असुरक्षित बना दिया और समाज और अर्थव्यवस्था में ग्रामीणीकरण का प्रारंभ हुआ।

बोध प्रश्न-2

1) उत्तर रोमन साम्राज्य में अर्थव्यवस्था की स्थिति पर चर्चा कीजिए। किन कारणों ने जीवन निर्वाह का संकट उत्पन्न किया?

....

....

....

....

....

2) रोमन समाज में निम्न वर्गों और दासों की स्थिति ने किस हद तक रोमन साम्राज्य के पतन में योगदान दिया?

....

....

....

....

....

3) उत्तर रोमन साम्राज्य में समाज और अर्थव्यवस्था का ग्रामीणीकरण क्यों हुआ? कारण बताइए।

....

....

....

....

....

4.8 दास आधारित उत्पादन पद्धति में संकट

ऐतिहासिक भौतिकवाद[1](Historical Materialism), का उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन का सिद्धांत जिसने समग्र सामाजिक और सभ्यता के परिवर्तनों को उत्प्रेरित किया, वह इस तथ्य का पक्ष लेता है कि यह दासप्रथा उत्पादन प्रणाली का संकट ही था जिसने रोमन साम्राज्य के पतन को बढ़ावा दिया। ये विद्वान अपने दृष्टिकोण में एकमत थे कि प्राचीन रोम एक दास समाज था, न कि दासों का समाज, और दासप्रथा इसके विभिन्न तथ्यों को रेखांकित करती थी। साम्राज्य ने निर्दयी बल से शक्ति प्राप्त की थी और हज़ारों लोगों को युद्ध बंदी बनाकर उत्पादन के मात्र एक साधन (*इंस्ट्रूमेंटम वोकेल*; *instrumentum vocale*) के तौर पर उन्होंने उन्हें बंधुआ श्रमिक बना लिया । न्यायिक और कानूनी व्यवस्था ने इसे माफ कर दिया, यहां तक कि उसने दासप्रथा के वैचारिक अस्तित्व और प्रचलन को वैधता भी प्रदान की। उत्तर *पैक्स रोमाना* (रोमन शांति) काल और तीसरी शताब्दी के संकट ने दासप्रथा के आंतरिक विरोधों को उजागर किया। अंततः जब रोम कमज़ोर होकर टूटने लगा तो दासप्रथा व्यवस्था भी टूट गई और यह रोमन साम्राज्य के पतन की ज़िम्मेदार बनी।

रोमन साम्राज्य श्रम की कमी के कारण संकट से जूझ रहा था क्योंकि उसी समय सामाजिक-आर्थिक कठिनाइयों के पहाड़ भी खड़े हो रहे थे। रोम की अर्थव्यवस्था दासों पर, उनके खेतों पर काम करने, और शिल्पकारों के तौर पर काम करने अथवा छोटे पद के नौकरशाह के रूप में काम करने पर निर्भर थी; और इसकी सेना द्वारा इन कार्यों के लिए पारंपरिक रूप से कैदी बनाए गए नए लोग प्रदान किये जाते थे। लेकिन दूसरी शताब्दी में जब विस्तार में रुकावट आई तो रोम में दासों की आपूर्ति और अन्य युद्ध-सम्पदा में कमी आ गई और राजकोश सूखने लगा। पांचवी शताब्दी में एक और धक्का लगा जब वेंडालों ने उत्तरी अफ्रीका पर अपना प्रभुत्व जमाया और साम्राज्य के व्यापार को भूमध्यसागर में लुटेरों के तौर पर छिपकर नुकसान पंहुचाने लगे।

अर्थव्यवस्था के कमज़ोर होने और इसके व्यावसायिक और कृषि उत्पादन में गिरावट आने से साम्राज्य का यूरोप पर नियंत्रण खोना आरंभ हुआ। रोमन साम्राज्य की पहली दो शताब्दियों में दासों की संख्या में प्रभावशाली वृद्धि हुई। दास श्रमिकों पर इनकी निर्भरता ने न केवल इनके नैतिक मूल्यों, नैतिक मान्यताओं और आचारों का पतन किया बल्कि यह आर्थिक पिछड़ेपन और तकनीकी रुकावट का भी कारण बना क्योंकि इसने वस्तुओं को और अधिक अच्छा बनाने के लिए कोई प्रेरणा प्रदान नहीं की। जोसफ टेंटर (1988) का विचार है कि तकनीकी स्थिरता के परिणामस्वरूप भी साम्राज्य का धीरे-धीरे पतन होने लग गया था।

दासप्रथा संकट के कारक के रूप में *पैक्स रोमाना*

रोमन साम्राज्य का एकीकरण और *पैक्स रोमाना* अथवा रोमन शांति की स्थापना रोम के गौरव और सांस्कृतिक संपन्नता की दो लम्बी शताब्दियों की उपलब्धि थी, जो आगस्टस के राज्यकाल (27 बी सी ई-14 सी ई) से मार्कस ऑरेलियस (राज्यकाल 161-180 सी ई) के राज्यकाल तक विस्तृत रहा। हालांकि इसने आरंभिक साम्राज्य को लैटिन भाषा, एकीकृत मुद्रा प्रणाली और वैधानिक नियमावली दी, इसके गंभीर राजनैतिक और आर्थिक परिणाम भी हुए। रोमन शांति की स्थापना के साथ युद्ध कैदियों की आपूर्ति, जो दासों की आपूर्ति का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत था, में कमी आई। दास श्रमिक समस्त इतिहास में स्वयं सन्तान पैदा करने में असमर्थ थे और इस प्रकार दास श्रम आधारित अर्थव्यवस्था में पतन के बीज अंतर्निहित थे। पहली शताब्दी सी ई में इटली की 40 प्रतिशत जनसंख्या दास थी, अतः इसका तात्पर्य यह था कि 40 प्रतिशत लोग स्वयं सन्तान पैदा नहीं कर सकते थे।

---

[1] यह कार्ल मार्क्स द्वारा प्रस्तावित इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा है। इसका तर्क है कि इतिहास विचारों का परिणाम नहीं, बल्कि भौतिकवादी परिस्थितियों के परिवर्तन का परिणाम है – आदिम समाज से दासप्रथा द्वारा उत्पादन, सामंती व्यवस्था, एशियाई और पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली।

सम्राट ट्रेजन (98-117 सी ई) की मृत्यु के पश्चात् कोई नए प्रदेश साम्राज्य में नहीं जुड़े और परिणामस्वरूप युद्ध बंदियों को बड़ी मात्रा में दास बनाने के बहुत ही कम अवसर प्राप्त हुए। लूट और अन्य अतिरिक्त गैर-कानूनी विधियां लगातार चलती रहीं लेकिन ये उतनी संख्या में दास उपलब्ध नहीं करा पाए जो प्राथमिक स्रोत, सैन्य विजयों द्वारा हो सकता था। दासों की आपूर्ति में गिरावट ने एक अभूतपूर्व कमी को पैदा किया जिसके कारण दासों की कीमतों में वृद्धि हुई। तीसरी शताब्दी में प्लेग के प्रकोप ने दासों की आंतरिक आपूर्ति को और भी धक्का पहुँचाया जिससे श्रमशक्ति में कुल मिलाकर काफी कमी उत्पन्न हुई।

पांचवी शताब्दी के दौरान, श्रम की बाहरी आपूर्ति प्रतिबंधित थी और जीते गए क्षेत्रों की स्वतंत्र जनसंख्या को रोमन नागरिक का दर्जा दिया गया था, इससे एक जनसांख्यिकीय समस्या उत्पन्न हुई। अतः दासों को कुछ हद तक अपने पारिवारिक संबंधों को स्थापित करने का अधिकार मिला और *लैटिफंडिया* भूमि से जुड़े कुछ उत्पादन को दास परिवारों को सौंपा जाने लगा। *पैक्यूलियम* (परिवार बनाने का अधिकार और दासों द्वारा संपत्ति खरीदना) में वृद्धि ने इन्हें बसाया और सामुहिक दासप्रथा का पतन किया। इसके अलावा यहां विकास की प्रक्रिया, जिसे *एबलोनेट* (*ablonate*) के नाम से जाना जाता है, के द्वारा दासों को भूमि (*सर्वी कसाती; servi casati*) प्रदान की गई और उसे पट्टे में परिवर्तित कर दिया गया। यद्यपि इस सब पर कर भी लगाया गया था, लेकिन, विशेष रूप से शहरी क्षेत्र में, बड़ी संख्या में दासों को स्वतंत्र किया गया था ताकि उनके श्रम का अधिक बेहतर प्रयोग किया जा सके।

ऐसी स्थिति में जब बड़े स्तर पर जनसंख्या को भूमि आवंटित की जा रही थी, तो पूर्ण साम्राज्य एक आंतरिक बाज़ार बन गया, जिससे भूस्वामी लगान एकत्र करने में असफल हो रहे थे। भूअधिपतियों ने अपनी भूसंपत्ति को दो भागों में विभाजित किया थाः पहले भाग पर दासों द्वारा खेती कराई जाती थी और अन्य भाग पर पट्टेदारों द्वारा। लेकिन श्रम की कमी के कारण पट्टेदार पहले भाग पर दासों की तरह खेती करने पर विवश थे। इसे एक सुप्त दासप्रथा के तौर पर देखा जा सकता है। स्टे क्रॉइक्स (1981) के शब्दों में, 'अपरिहार्य परिणाम यह हुआ कि भूअधिपति संपन्न वर्ग दास श्रम से प्राप्त लाभ दर को समान नहीं बनाए रख सका और अपने जीवन स्तर को गिरने से बचाने के लिए उसने कमज़ोर स्वतंत्र जनसंख्या पर शोषण की दर में वृद्धि की जैसा कि मेरा विश्वास है रोमन शासक वर्ग ने अब वास्तव में विशिष्ट रूप से ऐसा ही किया'।

अर्धदासता (*कोलोनेट*) और *पेट्रोसीनियम*

कृषि में ठहराव, श्रम का संकट और राज्य के द्वारा करारोपण में वृद्धि के दबाव छोटे किसानों के लिए बहुत अधिक घातक साबित हुए। आरंभ में किसानों के पास कुछ 'अधिशेष भंडार' बचता था, लेकिन बाद में चूंकि अधिकांश अधिशेष उससे खींच लिया जाता था, फिर से खेती करने के लिए उसे ऋण ही लेना पड़ता था। इससे किसान ऋणी हो गए और वे *कोलोनी* या निर्भर किसान के दर्जे में आ गए। छोटे किसान स्वयं कर का भार वहन करने में असमर्थ होने के कारण वे भी बड़े भूस्वामियों के अधीन उनके सेवक बन गए और एक बार फिर से दास की स्थिति में आ गए। बटाईदार वर्ग भी *कोलोनी* में परिवर्तित हो गया। और अंततः ये तीनों वर्ग धीरे-धीरे अपने भूखण्डों और भूअधिपतियों से बंध गए, और उनके द्वारा इनसे बड़े हिस्से को हड़पना संभव हो गया। इसके अतिरिक्त, डायोक्लीशियन के कराधान संबंधी विधेयक और कांस्टेनटाइन के कानूनी प्रावधानों ने स्थाई रूप से *कोलोनी* को भूमि से सम्बद्ध कर दिया और यदि इनके स्वामित्व में परिवर्तन होता था तो इन्हें भी भूमि के साथ स्थानांतरित कर दिया जाता था।

चौथी शताब्दी तक आते-आते पैट्रोसीनियम[2] की घटना सर्वव्यापी हो गई थी। गरीब किसानों

[2] रोमन कानून/कानूनी अनुबंध जिसके तहत किसान बड़े भूस्वामियों द्वारा भोजन और आश्रय देने के बदले में कार्य करने के लिए सहमत हो गए थे।

का वर्ग, कभी-कभी पूरा गांव ही, स्वेच्छा से बड़े भूअधिपतियों अथवा मज़बूत स्थानीय अधिकारियों, के पास चला जाता था ताकि हर समय मंडराने वाली लुटेरी फौजों से अथवा भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा लगाए जाने वाले भारी करों की वसूली से बच सकें। किसानों को संरक्षण प्राप्त हुआ और उन्हें *पैट्रोसीनियम* अथवा पट्टेदारी अधिकार प्राप्त हो गये लेकिन उन्होंने अपनी स्वतंत्रता और भूमि के स्वामित्व को खो दिया और इनका दर्जा वास्तव में *कोलोनी* के समान ही हो गया था। लम्बे समय में *पैट्रोसीनियम* की प्रक्रिया ने स्थानीय प्राधिकार केंद्र बना दिए और इससे राज्य की प्रशासनिक शक्ति कमज़ोर होने लगी जिससे राज्य राजस्व से वंचित होने लगा था।

'इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा भूमि से बंधे हुए निर्भर पट्टेदार किसानों की एक श्रेणी, पश्चिमी रोमन साम्राज्य में तीसरी शताब्दी सी ई के दौरान, अस्तित्व में आई। इन सभी किसानों को *कोलोनी* (पूर्व में चाहे उनका जो भी दर्जा रहा हो) के तौर पर उल्लेखित किया गया और इनमें वे दास भी सम्मिलित थे जिन्होंने अपने व्यक्तिगत भूखण्ड पर परिवार के साथ रहते हुए अपने स्तर में सुधार किया। अतः इस प्रकार के दासों को अन्य कोलोनी से भिन्न करने में शायद ही कोई फर्क बचा था। मौलिक *कोलोनी* जो अपनी स्वतंत्रता खो चुके थे, वे दास जिनके दर्जे में पट्टेदार खेतीहर बनने से मामूली सा सुधार हुआ था, और प्रताड़ित किसान (*पैट्रोसीनियम* को स्वीकार करने वालों सहित) उत्तर रोमन साम्राज्य के दौरान *कोलोनी* की विस्तृत श्रेणी का एक भाग बन गए थे। *कोलोनेट*, या *कोलोनी* पर आधारित नए प्रकार के उत्पादन ने *लैटिफंडिया* द्वारा प्रेषित अधिशेष को हटाकर उसका स्थान ले लिया। और यह काल क्लासिकल ग्रीको-रोमन दासप्रथा और क्लासिकल मध्यकालीन यूरोपीय सामंतवाद के संक्रमण के काल का प्रतिनिधित्व करता है' (फारूक़ी, 2001: 295-96)।

4.9 जर्मनिक जनजातियों के आक्रमण

पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन का सबसे स्पष्ट कारण इनकी जर्मनिक जनजातियों के विरूद्ध लगातार सैन्य विफलताओं की श्रृंखला की ओर इंगित करता है। आंतरिक संकट के साथ-साथ तीव्र बाहरी दबाव की स्थिति के आने से स्थिति और भीषण हो गई, और वेंडाल, विसिगॉथ और ऑस्ट्रोगॉथ जैसी जनजातियों ने कब्ज़ा और नियंत्रण कर अपने स्वयं के राज्य की स्थापना कर रोम के पतन की प्रक्रिया को पूरा किया। रोम द्वारा गॉल और मध्य यूरोपीय भागों की जीत साम्राज्य को पशुपालक खानाबदोश समूहों के आमने-सामने ले आई, इन समूहों का उल्लेख जर्मनिक जनजातियों के नाम से किया जाता है जो यूरोपियों द्वारा बोली जाने वाली एक इंडो-यूरोपीय भाषा जिसे जर्मनिक कहा जाता था बोलते थे। मूल रूप से ये दक्षिणी स्कॅंडिनेविया और बाल्टिक तट के साथ अन्य प्रदेश, जैसे कि किम्बरी और ट्युटों, के लोग थे। ये लगभग 1000 बी सी ई से दक्षिण से पश्चिम की ओर प्रवास करने लगे। ऐसा माना जाता है कि रोमन साम्राज्य के साथ संपर्क उनकी सामाजिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाया, और इसके साथ ही इसने इनकी अपेक्षाकृत समतावादी कृषि-पशुचारण सामाजिक संरचना को अधिशेष संग्रहण और वर्ग भेद पर आधारित योद्धा-सामंतीय व्यवस्था में परिवर्तित कर दिया।

आगस्टस के राज्यकाल से रोम जर्मनिक जनजातियों से उलझता रहा और राइन-डेन्यूब सीमा पर झड़पें और लड़ाईयां आम बात थी। आरंभ में, जनजातियां साम्राज्य को चुनौती देने में कमज़ोर थीं लेकिन मार्कस ऑरेलियस के काल में अन्य जनजातियों द्वारा दबाव से खुला टकराव शुरू हो गया और जर्मनिक जनजातियों ने रोमन प्रदेशों में घुसना आरंभ कर दिया। राज्य ने रक्षात्मक नीति अपनाई, जर्मनिक जनजातियों को बसने की अनुमति दे दी गई लेकिन इसके साथ ही बढ़ती घुसपैठ के खतरे को रोकने के लिए डेन्यूब की सेना की ताकत

में वृद्धि की। तीसरी शताब्दी सी ई के पूर्वार्द्ध में दो उत्तरी जर्मनिक जनजातियां – अलामनी और फ्रेंक – राइन सीमा पर सबसे अधिक दुर्जेय विरोधी थे, और वहीं डेन्यूब की सीमा पर गॉथों का खतरा था। यूरोप की लम्बी सीमा अरक्षणीय सिद्ध हो रही थी और एक समझौते द्वारा रोम ने कुछ चयनित क्षेत्रों पर बसावट की अनुमति दी, सेना में नियुक्ति और वफादार जर्मनिक सरदारों को सहयोगी बनाया और उनके राज्य आक्रामक जर्मनिक जनजातियों और रोम के बीच एक मध्यवर्ती राज्यों के तौर पर कार्य करने लगे। हालांकि, सैन्य-संघर्षों का विकल्प पूर्णरूप से त्यागा नहीं गया था।
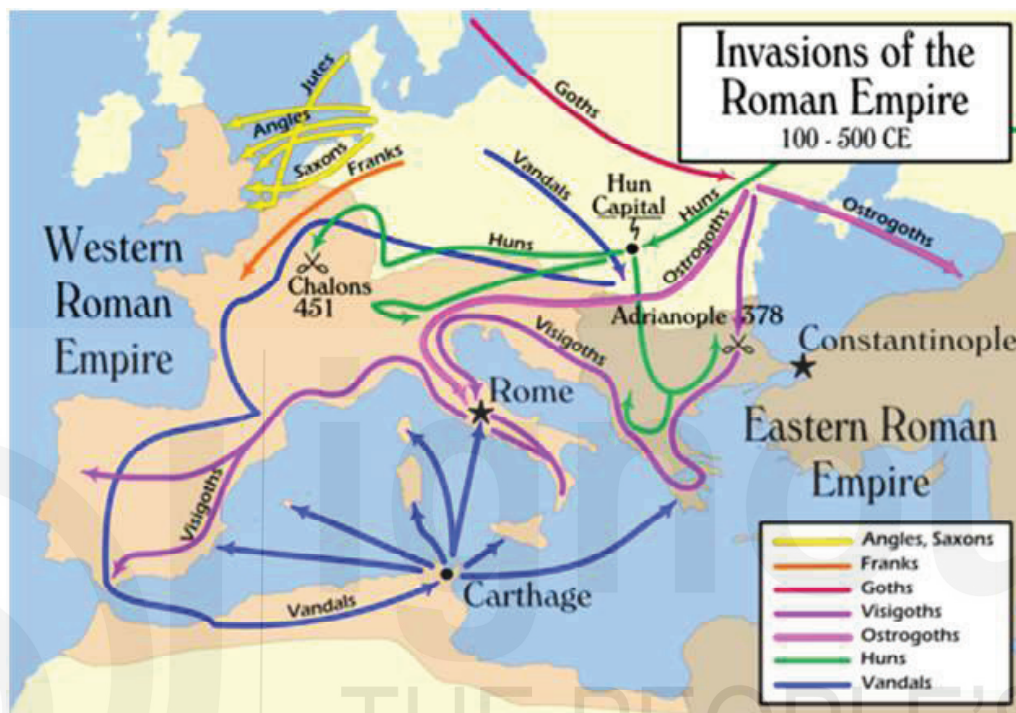
मानचित्र 4.4: रोमन साम्राज्य पर आक्रमण
साभार: यूज़र:मैपमॉस्टर
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Invasions_of_the_Roman_Empire_1.png

चौथी शताब्दी सी ई के मध्य में पूर्वी यूरोप में जनजातियों के नए विद्रोहों की लहर के साथ स्थिति बद से बद्तर में परिवर्तित हो गई। गॉथ दो समूहों में बंट गए, दोनों ही समान रूप से आक्रामक थे, विसिगॉथ (पश्चिमी गॉथ) और ऑस्ट्रोगॉथ (पूर्वी गॉथ), और ये साम्राज्य के सीमांत क्षेत्र पर निरंतर कब्जा करते रहते थे। हूणों के आक्रमणों से बचकर भागते हुए विसिगॉथ स्वयं अपने सरदार फ्रिटिजर्न के नेतृत्व में 378 सी ई में हेड्रीआनोपोलिस/एड्रीआनोपल की लड़ाई में रोमन सेना से लड़े। रोम की हार हुई और सम्राट वेलेन्स मारा गया। इस युद्ध ने रोम की राजनैतिक नियति के लिए एक गंभीर मोड़ चिन्हित किया। रोम की अपराजेयता अब इतिहास बन चुकी थी और आरंभिक पांचवी शताब्दी से जर्मनिक जनजातियों जैसे वेंडाल सुएबी और अलानी ने राइन की सीमा को पार कर रोम के पश्चिमी प्रांतों पर कब्ज़ा करना आरंभ कर दिया। विसिगॉथ सरदार ऐलेरिक ने 410 सी ई में रोम के शहर को सफलतापूर्वक लूटा और इस आक्रमण की गूंज से संपूर्ण साम्राज्य में हतोत्साह की लहर फैल गई। साम्राज्य ने अगले कई दशकों तक लगातार आक्रमण के खतरे के भय में गुज़ारे, पुनः इस 'शाश्वत नगर' (रोम) को 455 सी ई में दुबारा लूटा गया, इस बार वेंडालों द्वारा। अंततः 476 सी ई में जर्मनिक सरदार ओडोएसर ने एक विद्रोह रच सम्राट रोमुलस आगस्टस (पश्चिमी रोमन साम्राज्य का अंतिक शासक) को अपदस्थ कर दिया और इस प्रकार टूटते हुए साम्राज्य को घातक झटका देने में यह विद्रोह सफल रहा। हालांकि रोमन और जर्मनिक जनजातियों के मध्य पारस्परिक प्रभाव के आदान-प्रदान का इतिहास जर्मनिक जनजातियों के रोमनीकरण के बाद से ही आरंभ हुआ। पश्चिमी रोमन शासक के अपदस्थ होने से यूरोप में पुरातनता

और मध्यकालीन सांमतवादी समाज के मध्य खाई तुरंत ही नहीं स्थापित हुई। इसकी प्रकृति को परिवर्तित होने में शताब्दियों का समय लगा। रोमन साम्राज्य के विभिन्न भागों में कुछ कबीलाई राज्यों का उदय हुआ और इन्होंने समाज में नई संरचनाओं की स्थापना की।

4.10 इतिहासलेखनः संकट, पतन और रोमन साम्राज्य का रूपांतरण

पांचवी शताब्दी की तबाही को एक पर्याप्त कारण के रूप में उद्धृत करते हुए, पश्चिमी इतिहासकार अठारहवीं शताब्दी से ही वर्ष 476 को रोमन साम्राज्य के अंतिम बिंदु के तौर पर देखते आए हैं। इस काल को ग्रीको-रोमन पुरातनता का अंत और मध्यकाल के आरंभ के रूप में चिन्हित किया जाता है। यद्यपि अनेक अन्य इतिहासकारों का तर्क है कि कोई भी निश्चित तिथि रोम के 'पतन' को निर्धारित करने के लिए संतोषजनक नहीं है, क्योंकि पतन एक लम्बी समयावधि के दौरान हुआ। संभवतः संकट और साम्राज्य का अंत इसकी संरचनात्मक कमियों और अत्यधिक खर्चीली शाही प्रकृति के कारण हुआ हो। जबकि आरंभिक विश्लेषण में विद्वान शासक रोमुलस आगस्टस के अपदस्थ होने को संक्रमण काल का एक विकट क्षण समझते थे, यूरोपीय इतिहास पर हाल ही में हुए शोध मध्यकाल के आरंभ की अवधि को लगभग 300 सी ई तक, पीछे की ओर धकेलते हैं। इस प्रकार, बाद का साम्राज्य और इसके उत्तराधिकारी राज्यों का काल, परिवर्तन का काल था, एक शास्त्रीय पुरातनता से सामंतवादी यूरोप में रूपांतरण का काल।

बाईज़ेंटियम के संदर्भ में साम्राज्य का लगातार रूपांतरण और नैरन्तर्य अत्यधिक प्रभावी रूप से वर्णित किया गया है। पूर्वी रोमन साम्राज्य जो बाईज़ेंटाइन साम्राज्य के रूप में जाना गया, अपनी राजधानी कांस्टैंटिनोपल सहित रोम के 'पतन' के एक हज़ार वर्ष बाद तक अस्तित्व में रहा। 'विद्वान लगातार साम्राज्य के पश्चिमी भागों में नैरन्तर्य के प्रतिवाद के लिए आगे आते रहे हैं – किसी एक ने भी आज तक गंभीरता से यह दावा नहीं किया कि पूर्व के प्राचीन और बाईज़ेंटाइन सभ्यता के बीच कोई विभाज्य रेखा थी' (वोग्त, 1967: 5)।

रोमन साम्राज्य के पतन का विषय बहुत बड़ा मुद्दा है। बौद्धिक विद्वता के संदर्भ में सर्वाधिक प्रभावशाली आधुनिक इतिहासकारों में से एक, एडवर्ड गिब्बन, ने अपनी अनेक भागों में लिखित पुस्तक, *द डिक्लाइन एंड फॉल ऑफ द रोमन एम्पायर* (1776) में रोमन साम्राज्य के पतन की सर्वप्रथम व्याख्या प्रस्तुत की। गिब्बन 18वीं शताब्दी के प्रबोधन (Enlightenment) काल के पादरी-विरोधी तर्क का समर्थन करते हैं जो ईसाई धर्म को इस बात के लिए दोषी ठहराता है कि इसने रोम वासियों की नागरिक भावना को नष्ट किया, और चर्च ने राज्य की राजनैतिक शक्ति को हड़पा। जैसे-जैसे 19वीं शताब्दी का ऐतिहासिक विशलेषण आधुनिकता की ओर बढ़ा, रोम के पतन से संबंधित विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण उभरे। ऐतिहासिक भौतिकवाद के प्रतिपादक, मार्क्स और एंजेल्स ने यह तर्क दिया कि दासप्रथा ने सभी प्रकार के श्रम को निगल लिया था और अब यह विलुप्त हो चुकी थी, अतः रोमन जगत गतिरोध पर पहुंच चुका था।

आरंभिक 20वीं शताब्दी में रूसी विद्वान, माइकल रोस्टोवज़ेफ (1926) ने सामाजिक तनाव और शोषित जन आबादी द्वारा शासकों की शक्ति और संपत्ति में हिस्सा प्राप्त करने की लगातार दबाव की प्रक्रिया को दोषी ठहराया। ब्रिटिश इतिहासकार, एफ. डब्ल्यू. वॉलबैंक (1946), दासप्रथा को रोमन जगत के तकनीकी पक्षाघात और जीवंतता में आम जन-हानि को मूल कारण मानते हैं। मानवशास्त्रीय व्याख्या से संबंधित विद्वान जनसंख्या के पतन को परिवर्तन बिंदु की तरह देखते हैं, इसका नस्लीय विलयन – यूनानियों और प्रच्यवासियों के अंतःप्रवाह के कारण जो विलयन हुआ उसने रोम के मूल वासियों की मौलिक एकता की मूल भावना को कमज़ोर कर दिया तथा शासक वर्ग का संकुचन भी इस पतन का प्राथमिक कारण

था। इस प्रकार, जर्मन इतिहासकार ओ. सीक का विश्वास है कि रोमन जगत का राजनैतिक आयाम व्यवस्थित 'श्रेष्ठ का विध्वंस' था, यह खालीपन गौण और अयोग्य व्यक्तियों से भरा गया अंततः यह साम्राज्य के लिए प्राणघातक सिद्ध हुआ।

अनेक विद्वानों ने रोमन पतन के विषय में नवीन दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया है। जे.बी. बरी (1897), ई. स्टाइन और ए. पिगेनिओल – ये सभी पुरातन रोम और बाईज़ेंटाइन इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान थे जो अलग-अलग यूरोपीय विश्वविद्यालयों से जुड़े हुए थे और इन्होंने अपनी शिक्षा और शोध के द्वारा रोमन पतन की बहस को आगे बढ़ाया। ए. डॉप्श ने दृढ़तापूर्वक तर्क दिया कि जर्मेनिक आक्रमण पुरातन रोम से पूर्णरूपेण कटने का प्रतिनिधित्व नहीं करता, उनका तर्क है कि जर्मेनिक राज्य जो रोमन-साम्राज्य के पतन के बाद उदित हुए उन्होंने रोमन परम्पराओं और संस्थाओं को सतत् बनाए रखा, विशेष रूप से राज्यकला और शासनकला के क्षेत्र में। एस. मज़ारिनो, 20वीं शताब्दी के प्राचीन रोम के प्रमुख इतावली इतिहासकार, के अनुसार रोम का पतन उसकी आर्थिक अवनति और अव्यवस्था के परिणामस्वरूप हुआ। ए. एच. एम. जोन्स (1964) का प्रमाणित शोध इस विषय की विशिष्ट व्याख्या करता है। उन्होंने भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक कारकों पर बल दिया। उनके विचार में जैसे-जैसे पश्चिमी रोमन साम्राज्य राइन और डेन्यूब प्रदेशों में आगे की ओर विस्तृत हुआ, जर्मनिक जनजातियों के साथ संघर्ष अपरिहार्य हो गया। इससे सैन्य शक्ति में वृद्धि करनी पड़ी और प्रत्यक्ष उत्पादकों पर करों का दबाव उत्पन्न हुआ जो कि पतन का मौलिक कारण था।

विश्व इतिहास के दो निष्ठावान इतिहासकार ओसवाल्ड स्पेंगलर (1926) और ए. जे. टोयन्बी (1965), ने रोमन पतन के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्पेंगलर ने यह स्वीकार किया कि पश्चिमी रोमन साम्राज्य के विघटन ने प्राचीन विश्व और इसके उत्तराधिकारी राज्यों के बीच एक कड़ी का काम किया। टोएन्बी का विश्वास है कि *इम्पीरियम रोमनम्* का पतन आंतरिक सर्वहारा वर्ग (proletariat) और बाहरी सर्वहारा वर्ग के संयुक्त आक्रमणों के कारण हुआ। हाल ही में पुरातत्ववेत्ता पहली शताब्दी सी ई से खोजे गए कंकालों के अवशेषों के रसायनिक विश्लेषण पर कार्य कर रहे हैं जो इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि काफी लंबे समय से रोमवासी सीसे के ज़हर (lead poisoning) के सेवन से ग्रस्त थे और मारे जा रहे थे, इनके भोजन और शराब में सीसा भारी मात्रा में पाया गया है। ब्रायन वार्ड-पर्किंस (2006) रोम के पतन के मूल्यांकन में मूलतः पुरातत्विक दृष्टिकोण से कार्य कर रहे हैं। ये इस ओर संकेत देते हैं कि उत्तर रोमन शताब्दियों में भौतिक संस्कृति में असाधारण गिरावट आई थी और इनका विश्वास है कि 'पश्चिमी रोमन साम्राज्य का पतन आंतरिक अपरिवर्तनीय पतन की बजाए विशेष रूप से सैन्य संकट के कारण हुआ था – जर्मनिक आक्रमण जो पश्चिम में एशियाई लोगों, हूणों, के आगमन और साम्राज्य के भीतर गृह युद्ध द्वारा और अधिक गंभीर बन गए थे'[3]।

बोध प्रश्न-3

1) तीसरी शताब्दी के संकट ने रोमन साम्राज्य के लिए मौत की घंटी का काम किया। क्या आप इस तथ्य से सहमत हैं? अपने उत्तर के लिए कारण दीजिए।

....

....

....

....

[3] *हिस्टॉरिकली स्पीकिंग* पत्रिका में साक्षात्कार, मार्च/अप्रैल 2006: 33

2) उत्पादन की दास पद्धति का संकट पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन का प्राथमिक कारण था। चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

3) रोमन साम्राज्य के पतन के इतिहासलेखन की चर्चा कीजिए। रोमन साम्राज्य के पतन पर इतिहासकारों द्वारा प्रतिपादित विभिन्न सिद्धांत कौन-कौन से हैं?

....

....

....

....

....

4) रिक्त स्थान भरिए:

क) ....ने पुस्तक *द डिक्लाइन एंड फॉल ऑफ द रोमन एम्पायर* लिखी।

ख) डायोक्लीशियन द्वारा लागू प्रशासन व्यवस्था को....................... के नाम से जाना जाता था।

ग) .... रोमन साम्राज्य का अंतिम मूर्तिपूजक शासक था और..................ने ईसाई धर्म को राज्य धर्म बनाया।

घ) ....ने 410 सी ई में रोम को लूटा और ....ने 476 सी ई में पश्चिमी रोमन साम्राज्य के अन्तिम शासक को अपदस्थ किया।

ड़) पूर्वी रोमन साम्राज्य को इतिहास में .... के नाम से बेहतर तरीके से जाना जाता है।

4.11 सारांश

इस इकाई में हमने रोमन साम्राज्य के संकट के बारे में चर्चा की है। यह यूनानी-रोमन पुरातनता का अंतिम काल था जो अभूतपूर्व परिवर्तन की अवधि थी – पिछली समस्याओं का आगे बढ़ना, नई समस्याओं का उभरना, अनुकूलनता और सामन्जस्य और अंत में वह दरार जो कि बाहरी आक्रमणों के साथ-साथ हुई जिसने रोमन साम्राज्य को प्रभावहीन होते देखा। अनेक कारकों ने संकट में योगदान दिया। राजनैतिक तौर पर साम्राज्य का दूर-दराज के प्रदेशों में विस्तार ने साम्राज्य के कुशल प्रशासनिक तंत्र को प्रभावित किया। गृह युद्धों का लगातार होना, भ्रष्टाचार, राजनैतिक और प्रशासनिक विखंडन और पूर्वी साम्राज्य के निर्माण के साथ एक वैकल्पिक शक्ति के आधार ने साम्राज्य व्यवस्था को कमज़ोर किया जो कि अब तक एक संयुक्त इकाई था। व्यवस्था को सुधारने के लिए सैन्य तानाशाही को लागू करना एक संक्षिप्त अंतराल था लेकिन इस व्यवस्था ने नागरिकों से बलपूर्वक भारी कीमत वसूली। राज्य और सेना के बीच में वैचारिक मतभेद था जैसे कि नागरिक-सेना को भाड़े की सेना

से बदला जाना, जिस सेना पर बहुत अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता था। आर्थिक स्तर पर अर्थव्यवस्था में गिरावट और उच्च मुद्रास्फीति स्तर ने जीवन निर्वाह का संकट उत्पन्न किया। खेतों को त्याग दिया गया; शिल्प उत्पादन और लम्बी-दूरी के व्यापार का विनाश हुआ; और राज्य द्वारा मुद्रा के अवमूल्यन के असाध्य उपाय और मौद्रिक द्वैतवाद ने समस्या को और बढ़ाया। साम्राज्य के सामाजिक ताने-बाने में लगातार परिवर्तन आया और उबलता हुआ तनाव या तो विद्रोह और लूट के रूप में फूटा या फिर परिवर्तन के साथ संयोजन करने में अंतरिम संस्थानों के रूप में व्यक्त हुआ। जर्मनिक जनजातियों की अनियंत्रित घुसपैठ और उनके द्वारा साम्राज्य में घुसने का निरंतर प्रयास, दासप्रथा का संकट और इन सब संकटों ने मिलकर पश्चिमी रोमन साम्राज्य को पतन की ओर बढ़ाया। पूर्वी रोमन साम्राज्य, जिसे बाईज़ेंटियम के नाम से जाना गया, अगली सहस्त्राब्दी तक अस्तित्व में रहा और 1453 सी ई में ऑटोमन तुर्कों के हाथों इसका अंत हुआ।

4.12 शब्दावली

कॉमाइट्स : शाही रोमन (दरबार) उपाधियां और पदवियां

अनिवार्य सैनिक सेवा / *कांस्क्रिप्शन* : राज्य के लिए अनिवार्य सैन्य सेवा

कुरियलों / कुरियल्स / डिकुरिआनोस : समृद्ध मध्यवर्गीय नागरिक। डिकुरिआन शहर की स्थानीय परिषद् के सदस्य होते थे और ये कुरियल्स में से लिए जाते थे।

ड्यूस : बाद के ड्यूक; नेता / सेनाध्यक्ष

हॉपलाइट : शस्त्रों से सुसज्जित पैदल सेना

लीजन : रोमन सेना की एक इकाई। इसकी संख्या निर्धारित नहीं थी। गणतंत्र काल में 5000 सैनिक दस मैनिपल्स (रोमन लीजन का उप-भाग जिसमें 60 से 120 सैनिक होते थे) की तीन पंक्तियों में विभाजित थे। बाद में लगभग 100 बी सी ई में इसे दस *कोहॉर्ट* (खंडों) में बांट दिया गया। इसकी एक घुड़सवार विंग (*अला*) भी थी। तीसरी शताब्दी सी ई के आसपास यह घटकर 1000-1500 पुरुषों का निकाय मात्र बनकर रह गई।

फैलैंक्स : यूनानी सेना की आयताकार सैन्य संरचना

प्रिटोरियन गार्ड्स : शाही रोमन अंगरक्षक

4.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 4.3 देखें

2) भाग 4.4 देखें

3) भाग 4.5.3 देखें

बोध प्रश्न-2

1) भाग 4.6 देखें

2) भाग 4.7 देखें

3) उप-भाग 4.7.4 देखें

बोध प्रश्न-3

1) भाग 4.8 देखें

2) भाग 4.8 देखें

3) भाग 4.10 देखें

4) क) एडवर्ड गिब्बन; ख) *टेट्रार्की;* ग) थिओडोसियस;

घ) विसिगोथ्स; ड़) बाईज़ेंटाइन साम्राज्य

4.14 संदर्भ ग्रंथ

एंडरसन, पैरी, (1974) *पैसेजेस फ्रॉम एंटीक्यूटी टू फ्युडलिज़्म* (लंदनःवर्सो).

बैरी, जे.बी., (संपादित) (1897) *द हिस्ट्री ऑफ द डिक्लाइन एंड फॉल ऑफ द रोमन एम्पायर,* एडवर्ड गिब्बन. 7 भाग (लंदनः मेथेन).

बंडी कैथरीन, (2011) *एनश्यिन्ट रोमः ओवरव्यू ऑफ द डिक्लाइन एंड फाल ऑफ द रोमन एम्पायर.*

क्रॉइक्स, जी.ई.एम. डी स्टे, (1981) *द क्लास स्ट्रगल इन द एंशियंट ग्रीक वर्ल्ड* (न्यूयॉर्कः कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस).

फारूक़ी, अमर, (2001) *अर्ली सोशल फॉरमेशन्स* (नई दिल्लीः मानक प्रकाशन).

गोल्ड्सवर्दी, एड्रीयन, (2010) *हाऊ रोम फैलः डेथ ऑफ ए सुपरपॉवर* (येलः येल यूनिवर्सिटी प्रेस).

गोल्ड्स्वर्दी, एड्रीयन, (2012) *लीजन्स ऑफ रोमः द डेफिनेटिव हिस्ट्री ऑफ ऐवरी इम्पीरियल रोमन लीजन* (न्यूयॉर्कः थॉमस ड्यून बुक्स).

जोन्स, ए.एच.एम, (1964) *द लेटर रोमन एम्पायर 284-602ः ए सोशल, इकॉनॉमिक एंड एडमिनिस्ट्रेटिव सर्वे.,* 3 भाग (ऑक्सफोर्डः बेसिल ब्लेकवैल).

रोजर्स, नाईजेल, (2009) *द राईज़ एंड फॉल ऑफ एंशियंट रोम* (लंदनः लॉरेंज़ बुक्स).

रोस्टोवज़ेफ, मिशेल आई., (1926) *द सोशल एंड इकॉनॉमिक हिस्ट्री ऑफ द रोमन एम्पायर* (न्यूयार्कः बिबलिओ-मोसर).

स्पेंगलर, ओसवाल्ड, (1926) *द डिक्लाइन ऑफ द वेस्ट,* 2 भाग (न्यूयॉर्कः एल्फ्रेड ए नॉफ पब्लिशर्स).

टेंटर, जोसफ, ए., (1988) *द कोलैप्स ऑफ कॉम्पलेक्स सोसाइटीस* (केम्ब्रिजः केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

टोयन्बी, आरनोल्ड जोसफ, (1965) (रिप्रिन्ट) *सिविलाइज़ेशन ऑन ट्रायल एंड द वर्ल्ड एंड द वेस्ट* (क्लीवलेंड एवं न्यूयार्कः द वर्ल्ड पब्लिशिंग कंपनी).

वोग्त, जे., (1967) *द डिक्लाइन ऑफ रोमः द मेटामोरफोसिस ऑफ एंशियंट सिविलाइज़ेशन* (लंदनः विडेनफेल्ड एवं निकोलसन).

वॉलबैंक, एफ.डब्ल्यू., (1946) *द डिक्लाइन ऑफ द रोमन एम्पायर इन द वेस्ट* (लंदनः कॉबेल्ट प्रेस).

वार्ड-पर्किंस, ब्रायन, (2005) *द फॉल ऑफ रोम एंड द एंड ऑफ सिविलाइज़ेशन* (ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

4.15 शैक्षणिक वीडियो

द रोमन ऐम्पायर-ऐपिसोड 6: द फॉल ऑफ द रोमन एम्पायर (हिस्ट्री डॉक्यूमेंट्री)
https://www.youtube.com/watch?v=JDz-z92Qc4Q

द राईज़ एंड फॉल ऑफ रोमन एम्पायर- डॉक्यूमेंट्री चेनल
https://www.youtube.com/watch?v=ePq7IeGiils